

भारतीय नारियल पत्रिका



भारतीय नारियल पत्रिका

भाग XXXIII, संख्या : 3
अक्टूबर - दिसंबर 2022
कोची- 11

परामर्श मंडल

मुख्य कार्यपालक अधिकारी
डा. एन.विजयलक्ष्मी भा.प्र.से.
सदस्य
डा.वी.एन.एस. मूर्ति
संजीव कुमार सिंह
डा. वैकटेश एन.हुत्याळी

संपादक मंडल

सदस्य
आर. मधु
डा.अलका गुप्ता

मुख्य संपादक

डा. वी.हनुमंते गोडा

संपादक

एस. वीना

उप संपादक

संगीता टी.एस.

संपादन सहयोगी

विन्दु रानी एन.
डा. सूर्या ग्रत्यूप

प्रकाशक:

नारियल विकास बोर्ड

(कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय,
कृषि एवं किसान कल्याण विभाग,
भारत सरकार)

केरा भवन, कोची - 682 011, भारत

दू. भा. : 0484-2376265, 2377266,
2377267, 2376553.

फैक्स : 91-484-2377902

ग्राम्स : KERABOARD

ई-मेल : kochi.cdb@gov.in

वेबसाइट : www.coconutboard.gov.in

नारियल कृषि एवं उद्योग के विभिन्न पहलुओं पर आधारित लेख, शोध निवन्ध और पत्र इस पत्रिका में प्रकाशन हेतु आमंत्रित किये जाते हैं। सभी स्थीकृत सामग्रियों को मानदेय दिया जाएगा। इस पत्रिका में प्रकाशित लेखों में ग्रेट किए गए विचार लेखकों के अपने हैं और बोर्ड उनके लिए उत्तरदायी नहीं हैं। शुल्क और पत्र अध्यक्ष, नारियल विकास बोर्ड, केरा भवन, कोची - 682 011 के नाम पर भेज दें।



नारियल विकास बोर्ड

भारत सरकार ने देश में नारियल खेती एवं उद्योग के समन्वित विकास के लिए स्वायत्त निकाय के रूप में नारियल विकास बोर्ड की स्थापना की। बोर्ड, जो 1981 जनवरी 12 को अस्तित्व में आया, भारत सरकार के कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय के प्रशासनिक नियंत्रण में कार्यरत है। इसका मुख्यालय केरल के कोची में है और क्षेत्रीय कार्यालय कर्नाटक के वैगलूर, तमिलनाडु के चेन्नई, असम के गुवाहाटी और विहार के पटना में हैं। बोर्ड के पांच: राज्य केन्द्र भी हैं और ये ओडिशा के भुवनेश्वर, पश्चिम बंगाल के कोलकाता, और्द्ध प्रदेश के विजयवाड़ा, महाराष्ट्र के ठाणे एवं संघरामित क्षेत्र अंडमान व निकोबार द्वीप समूह के पोर्ट ब्लेयर में स्थित हैं। बोर्ड के प्रदर्शन सह वीज उत्पादन फार्म नर्यमंगलम (केरल), वंगिवाड़ा (ओर्द्ध प्रदेश), कॉडागांव (छत्तीसगढ़), मध्यपुरा (विहार), अभयपुरी (असम), पितापली (ओडिशा), मंड्या (कर्नाटक), पालघर (महाराष्ट्र), घली (तमिलनाडु), सात्य हिच्छाचेरा (त्रिपुरा) तथा फुलिया (पश्चिम बंगाल) में हैं। इसके अलावा बोर्ड का वाजार विकास सह सूचना केन्द्र दिल्ली में है। केरल के आलुवा के पास वाष्पकुलम में बोर्ड ने प्रौद्योगिकी विकास केन्द्र की स्थापना की है।

बोर्ड के मुख्य प्रकार्य

- नारियल उद्योग के विकास हेतु उपाय अपनाना।
- नारियल एवं उसके उत्पादों का विषयन सुधारने हेतु उपायों की सिफारिश करना।
- नारियल खेती एवं उद्योग में लगे लोगों को तकनीकी सलाह देना।
- नारियल खेती के अधीन क्षेत्र विस्तार के लिए वित्तीय एवं अन्य सहायता देना।
- नारियल एवं उसके उत्पादों के संसाधन के लिए आधुनिक प्रौद्योगिकियाँ अपनाने को प्रोत्साहित करना।
- नारियल एवं उसके उत्पादों को हेतु उपायों की सिफारिश करना।
- नारियल एवं उसके उत्पादों के लिए श्रेणी, विनिर्देश एवं मानक निर्धारित करना।
- नारियल का उत्पादन बढ़ाने के लिए उपयुक्त योजनाओं को आर्थिक सहायता देना।
- नारियल एवं उसके उत्पादों के कृषि, प्रौद्योगिकीय, औद्योगिक या आर्थिक अनुसंधानों को सहायता देना, प्रोत्साहन देना, बढ़ावा देना एवं आर्थिक सहायता देना।
- केन्द्रीय सरकार तथा वडे पेमाने में नारियल की खेती वाले राज्यों की सरकारों से विचार विमर्श करके नारियल का उत्पादन बढ़ाने, प्रजातीय गुणवत्ता और उपज सुधारने के लिए उपयुक्त योजनाओं को वित्तीय सहायता देना तथा इसी उद्देश्य के लिए नारियल कृषकों और नारियल उत्पादों के विनिर्माताओं को पुरस्कार और प्रोत्साहन राशि प्रदान करने के लिए योजनाएं बनाना और नारियल एवं नारियल उत्पादों के विषयन के लिए सुविधाएं उपलब्ध कराना।
- नारियल एवं उसके उत्पादों के उत्पादन, प्रसंस्करण और विषयन संबंधी ऑकड़े एकत्रित करना एवं उन्हें प्रकाशित करना।
- नारियल एवं उसके उत्पादों से संबंधित प्रचार कार्य करना एवं पुस्तकें व पत्रिकाएं प्रकाशित करना।

बोर्ड द्वारा 'भारत में नारियल उद्योग के एकीकृत विकास' परियोजना के अधीन कार्यान्वित विकास कार्यक्रम हैं: रोपण सामग्रियों का उत्पादन व विषयन, नारियल के अधीन क्षेत्र विस्तार, उत्पादकता सुधारने के लिए एकीकृत खेती, प्रौद्योगिकी निर्दर्शन, वाजार संवर्धन और सूचना व सूचना प्रौद्योगिकी।

नारियल प्रौद्योगिकी मिशन के अधीन बोर्ड द्वारा कार्यान्वित कार्यक्रम हैं ग्राणी कीटों व रोगों से ब्रह्म नारियल वागानों के प्रवर्द्धन के लिए प्रौद्योगिकियों का विकास, निर्दर्शन तथा अंगीकरण, प्रसंस्करण, उत्पाद विविधीकरण, वाजार अनुसंधान व संवर्धन के लिए प्रौद्योगिकियों का विकास और अंगीकरण।

शुल्क

वार्षिक	40 रु.
एक प्रति	10 रु.
आजीवन (30 वर्ष)	1000 रु.

नारियल विकास बोर्ड द्वारा प्रकाशित तथा सर्वश्री कंवीपीएस, कावकनाट में मुद्रित

इस अंक में

05 संदेश

06 नारियल बागान की सफल स्थापना संकेत एवं तकनीक
एम.षरीफा, मायालक्ष्मी, एच.मोहम्मद, अनंतनारायण और रेजी जे.थोमस

10 नारियल आधारित खेती प्रणालियों से बेहतर उत्पादकता एवं
आय - श्री आर.नंद गोपाल के अनुभव
ए.सी.मैथ्यू, तम्पान सी. और पी.सुब्रमण्यन

14 जिमीकंद - अंडमान व निकोबार द्वीपसमूह के नारियल बागाँ
के लिए लाभकर अंतरफसल
बी.अगस्टिन जेरार्ड, बी.दामोदरन, के.अबिरामी और आई.जयशंकर

18 नारियल का रोपण और देखभाल
नीनु एस. और रवि भट्ट

25 पारंपरिक नारियल किरणें
निनिता नाथ.सी

29 किसान उत्पादक संगठन - संभावनाएं और चुनौतियाँ
दीप्ति नायर एस.

36 नारियल बागाँ में मासिक कार्य

47 समाचार

62 बाज़ार समीक्षा

65 बाज़ार रिपोर्ट



संदेश

प्रिय पाठकों,

हम वर्ष 2022 से अल्विदा ले रहे हैं और नव वर्ष 2023 शुरू हो रहा है, नई शुरुआतों एवं नए उम्मीदों के साथ। सी ओ पी 27 सम्मेलन ने आपस में सहमत जलवायु लक्षणों को हासिल करने हेतु सामूहिक गतिविधियाँ चलाने का आह्वान किया। इस परिप्रेक्ष्य में यह अनिवार्य है कि नए साल की शुरुआत की इस घड़ी में अतिविषम जलवायु घटनाओं की बढ़ोत्तरी से निपटने के लिए योजनाएं तैयार की जाएं।

नारियल एक आदर्श फसल है जिसकी उत्पादन पूर्व और उपरांत से शुरू होकर, तुड़ाई उपरांत प्रबंधन, प्रसंस्करण और विपणन तक की खेती संबंधी गतिविधियों में ऐसी प्रक्रियाएं अपनानी चाहिए जो आर्थिक रूप से और पर्यावरणीय दृष्टिकोण से व्यवहार्य हों। प्राकृतिक संसाधन प्रबंधन हासिल करने का एक तरीका जैविक खेती है क्योंकि यह कार्बन सिंक (जो वायुमंडल से कार्बन का अवशोषण करके भंडारित करता है) को समृद्ध बनाता है, जैविक तत्वों का पुनर्चक्रण करता है और उपभोक्ताओं के लिए गुणवत्तापूर्ण उत्पादों का उत्पादन करता है। प्रसंस्करण के क्षेत्र में, शून्य अपशिष्ट को लक्षित करते हुए एकीकृत प्रसंस्करण करने से संसाधन क्षमता ही नहीं बढ़ेगी बल्कि उपभोक्ताओं की मांग के अनुरूप नूतन उत्पादों भी सृजित होंगे। उन्नत उत्पादन प्रणालियों के ज़रिए ऊर्जा की बचत, पानी की खपत में कमी, कर्मचारियों को काम करने के लिए बेहतरीन माहौल आदि भी आर्थिक और पर्यावरणीय व्यवहार्यता पर प्रभाव डालता है। जहाँ तक नारियल का सवाल है, इसके प्राकृतिक उत्पादों की खास विशेषताओं के कारण जो कि वे पौष्टिक और स्वास्थ्यपूर्ण होते हैं, गैर खाद्य उत्पादों जो जैवनिम्नीकरणीय होते हैं, उत्पादों जो पर्यावरण के लिए खतरनाक उत्पादों के विकल्प के रूप में उपयोगी हैं आदि, ये जलवायु अनुकूलता की तरफ बढ़ते इस दौर में भविष्य में बहुत बड़ी संभावनाएं प्रदान करते हैं।

नारियल किसानों को मूल्य में कमी के कारण वर्ष 2022 के दौरान काफी संघर्ष करना पड़ा और संकट की इस घड़ी में प्रमुख नारियल उत्पादक राज्यों में न्यूनतम समर्थन भाव पर जो प्रापण हो रहा था वही एकमात्र उम्मीद की हल्की सी किरण बन गयी। खोपरा उत्पादन हेतु अवसंरचना का निर्माण करने से न्यूनतम समर्थन भाव पर प्रापण के ज़रिए भारत सरकार द्वारा प्रदत्त लाभ वसूल करने में ही नहीं बल्कि किसानों को प्राथमिक प्रसंस्करण में कदम रखने में भी सहायता मिलेगा। यह नारियल के प्रसंस्करण और मूल्यवर्धन में किसान का मालिकाना उद्यम शुरू करने के लिए मार्ग प्रशस्त करेगा। शून्य अपशिष्ट नीति को अपनाने से छिलका, खोपड़ी और नारियल पानी जैसे उपोत्पादों से भी आय सृजित होगी जो भाव में लचीलापन की संभावनाओं, अधिक आय, विविध अनुप्रयोग वाले तरह तरह के उत्पादों के ज़रिए मुख्य उद्यम के लिए समर्थन प्रदान करेगा जिससे स्वास्थ्यपूर्ण और व्यवहार्य नारियल क्षेत्र विकसित होगा।

विश्व आगामी दिनों में पर्यावरणीय संरक्षण, किसान पारिश्रमिक, प्राकृतिक संसाधन प्रबंधन, आर्थिक व्यवहार्यता, जैवनिम्नीकरणीयता आदि के प्रति काफी अधिक जागरूक बन जाएगा जो उपभोक्ताओं के खरीदारी निर्णयों पर निश्चित रूप से प्रभाव डालेगा। नारियल जैसी फसल, जलवायु लचीला खेती के लिए काफी अधिक उपयुक्त है, इस चमत्कारी फसल से नारियल समुदाय के कल्याण के लिए लाभ हासिल करने हेतु आइए, हम सब कंधे से कंधा मिलाकर कार्य करें।

संपादक



नारियल बागान की सफल स्थापना संकेत एवं तकनीक

एम.षरीफा, मायालक्ष्मी, एच.मोहम्मद, अनंतनारायण और रेजी जे.थोमस

भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद - केंद्रीय रोपण फसल अनुसंधान संस्थान, प्रादेशिक केंद्र, कायंकुलम, केरल

नारियल (कोकोस नूसिफेरा एल.) उष्णकटिबंधीय क्षेत्र की एक बहुउपयोगी फसल है जो मानवजाति के लिए बहुविध काम आता है। नारियल आम तौर पर बीज द्वारा उगाया जाता है और यह पौधिक भोजन एवं ताज़गी भरा पेय, खाद्य तेल एवं गैर-खाद्य उपयोग, वाणिज्यिक मूल्य के रेशे, इंधन और औद्योगिक उपयोगों के लिए खोपड़ी, लकड़ी और घरेलू तथा औद्योगिक प्रयोजनों के लिए विभिन्न प्रकार के उत्पादन प्रदान करता है।

किसी भी फसल का उत्पादन एवं उत्पादकता बढ़ाने के लिए गुणवत्तापूर्ण रोपण सामग्री महत्वपूर्ण होती है। नारियल जैसी फसल के मामले में यह अत्यंत अहमियत रखती है क्योंकि इसकी उत्पादनपूर्व अवधि 4 से 6 वर्ष और उत्पादन अवधि 60 वर्ष से अधिक होती है। कई पूर्वोत्तर राज्यों में तेज़ गति से नारियल विकास बोर्ड की क्षेत्र विस्तार योजना कार्यान्वित की जा रही है। यह केरल जैसे राज्यों में भी हो रहा है, जहाँ नारियल विकास परिषद कार्यक्रम जैसी राज्य सरकार द्वारा वित्त पोषित योजनाएं नारियल का खेतीगत क्षेत्र बढ़ाना लक्षित करती हैं। सही किस्म का चयन और प्रारंभिक देखभाल

नारियल बागों की सफल स्थापना की कुंजी है। आदर्श नारियल किस्म के चयन हेतु संकेत और एक भरोसेमंद स्रोत से पौध खरीदने के बाद अनुसरण की जानेवाली मानक प्रक्रियाएं और पौधों की प्रारंभिक देखभाल इस लेख में सूचीबद्ध की गई हैं।

स्थानविशेष के लिए उचित किस्मों की पहचान

नारियल दो प्रकार के होते हैं- लंबा और बौना। व्यापक तौर पर खेती की जाने वाली लंबी कृषिजोपजातियाँ हैं - पश्चिम तटीय लंबी और पूर्व तटीय लंबी। बौनी किस्म आकार में छोटी होती है और लंबी किस्म की तुलना में इसका जीवनकाल कम होता है। विश्व के सभी नारियल उत्पादक क्षेत्रों में वाणिज्यिक उत्पादन के लिए लंबे ताड़ों की खेती सर्वाधिक की जाती है। डाब पानी के गुणों एवं कुछ रोगों के प्रति रोगरोधी क्षमता के कारण बौने ताड़ों को हाल ही में महत्व प्राप्त हुआ है। किस्म का चयन किसी स्थानविशेष के लिए उसकी उपयुक्तता, खेती के प्रयोजन और किसानों की रुचि पर निर्भर करता है। उदाहरण के लिए यदि खेती किया जाने वाला क्षेत्र पानी की कमी वाला इलाका है तो सूखा सहनशील किस्मों का चयन करें, या यदि जड़ (मुझ्झा) रोग प्रकोपित भूभाग है तो





तंदुरुस्त नारियल पौध

जड़ (मुझ्हा) रोगरोधी/रोग सहनशील किस्मों का चयन करें। यदि किसान खोपरा और तेल के लिए नारियल की व्यावसायिक खेती में रुचि रखता है तो लंबी किस्मों को प्राथमिकता दी जाती है और डाब प्रयोजन के लिए हो तो बौनी तथा संकर किस्मों को प्राथमिकता दी जाती है। बड़े पैमाने पर खेती करने के लिए मात्र लंबी किस्म को चुनना चाहिए या लंबी, बौनी तथा संकर किस्में 60:20:20 अनुपात में लगाना बेहतर होती हैं और सीमित जगह में वासभूमि खेती के लिए बौनी या संकर किस्मों को प्राथमिकता दी जाती है। खेती के लिए अनुशंसित कुछ नारियल किस्में सारणी 1 और 2 में दी गई हैं।

सारणी 1. उपयोगिता के आधार पर नारियल किस्में		
क्र.सं.	प्रयोजन	किस्में
1.	डाब प्रयोजन	कल्पश्री, कल्परक्षा, कल्प सूर्य, कल्प ज्योति, चावककाट नारंगी बौनी
2	तेल और खोपरा	चंद्र कल्पा, कल्प प्रतिभा, कल्प मित्र, कल्पधेनु
3	नीरा	चंद्र कल्पा
4	गोल खोपरा	कल्पतरु
5	दोनों प्रयोजन के लिए	केरा चंद्र, कल्प प्रतिभा, कल्प हरिता
6	कयर रेशा	कल्पतरु
7	रोग एवं कीट	जड़(मुझ्हा) रोग प्रकोपित क्षेत्र - कल्पश्री, कल्परक्षा, कल्प संकरा एरियोफिड माइट - कल्पहरिता
8	सूखा ग्रस्त इलाका	चंद्र कल्पा, कल्प मित्र, कल्प धेनु, कल्पतरु

सारणी 2

क्र.सं.	अनुशंसित स्थान	किस्म
1	केरल	कल्प ज्योति, कल्प सूर्य, चंद्र कल्पा, केरा चंद्र, कल्प प्रतिभा, कल्पधेनु, कल्प मित्र, कल्पतरु, केरा केरलम, कल्प हरिता, कल्पशताब्दी, कल्परत्न, चंद्र संकरा, केरा संकरा, कल्पसमृद्धि, कल्पश्रेष्ठ
2	तमिलनाडु	एएलआर(सीएन)2, केरा केरलम, कल्प सूर्य, कल्प प्रतिभा, कल्पधेनु (पूर्वी तट), कल्पतरु, कल्पशताब्दी, कल्परत्न
3	कर्नाटक	कल्पतरु, कल्प ज्योति, कल्प सूर्य, चंद्र कल्पा, कल्प हरिता, कल्पशताब्दी, चंद्र संकरा, कल्पश्रेष्ठ
4	आँध्र प्रदेश	गौतमी गंगा, चंद्र कल्पा, केरा चंद्र (तटीय क्षेत्र), कल्प प्रतिभा, कल्पधेनु, केरा संकरा (तटीय)
5	महाराष्ट्र	प्रताप, चंद्र कल्पा, केरा चंद्र (कोकण), कल्प प्रतिभा, केरा संकरा (तटीय)
6	पश्चिम बंगाल	कल्पाणी नारियल - 1, केरा चंद्र, कल्प मित्र, केरा केरलम
7	असम	कामरूप, कल्पसमृद्धि
8	छत्तीसगढ़	केरा बस्तर
9	अंडमान व निकोबार द्वीप समूह	सीएआरआई-सी1 (अन्नपूर्ण), सीएआरआई-सी2 (सूर्य), सीएआरआई-सी3 (ओमकार), सीएआरआई-सी4 (चंदन), कल्पधेनु

गुणवत्तापूर्ण रोपण सामग्रियों का स्रोत

नारियल की सफलतापूर्वक खेती करने के लिए अच्छी गुणवत्ता वाली रोपण सामग्री सबसे प्रमुख और महत्वपूर्ण घटक है। हमेशा भरोसेमंद स्रोतों जैसे राज्य सरकार की मान्यताप्राप्त/राष्ट्रीय बागवानी बोर्ड की मान्यता प्राप्त नर्सरीयाँ, राज्य कृषि विश्वविद्यालय, नारियल विकास बोर्ड के फार्म, भा.कृ.अनु.प.-केंद्रीय रोपण फसल अनुसंधान संस्थान आदि से गुणवत्तापूर्ण रोपण सामग्री खरीदें। मानक प्रोटोकॉल का अनुपालन करते हुए किसान भी पौधे उगा सकते हैं।

गुणवत्तापूर्ण नारियल पौधों के चयन के लिए मानदंड

प्रतिरोपण के लिए नर्सरी से पौधों को निकालने का सबसे अच्छा समय तब है जब वे एक वर्ष के हो जाते हैं। एक आदर्श एक वर्षीय नारियल पौध की निम्नलिखित विशेषताएं होती हैं-



1. पौधे स्वस्थ, ओजपूर्ण तथा बड़ी संख्या में पत्तियों और बड़ी संख्या में जड़ों सहित मज़बूत दिखने चाहिए।
2. पत्ते जल्दी फटकर पत्तियों का खुलना तंदुरुस्ती का अच्छा लक्षण है।
3. पत्तों की संख्या छह से अधिक होनी चाहिए।
4. पौधे के गर्दन का धेरा 10 सें.मी. से अधिक होना चाहिए।

रोपण के लिए चयनित पौधों की आयु

आम तौर पर खेत में रोपण के लिए एक वर्ष की आयु के पौधों को प्राथमिकता दी जाती है। तथापि, रोपण के लिए एक वर्ष की आयु तक के पौधों का भी उपयोग किया जा सकता है विशेष रूप से जलभराव वाले क्षेत्रों में। तमिलनाडु और आँध्र प्रदेश में यह कार्य चल रहा है। ऐसे मामलों में, जड़ तंत्र को नुकसान पहुँचाए बिना पौध को उखाड़ने पर ध्यान रखना चाहिए। आमतौर पर धान के खेत के पुश्टों में या इस प्रकार की परिस्थितियों में रोपण के लिए दो या तीन वर्ष की आयु के पौधों को पसंद किया जाता है और रोपण के बाद उन्हें लगभग एक वर्ष तक उपयुक्त टेक देकर मज़बूती से खड़ा रखना होता है जब तक कि पौधों की जड़ें मिट्टी को पकड़ न जाए या मज़बूती से टिक न जाए। भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद - केंद्रीय रोपण फसल अनुसंधान संस्थान में छह महीने और नौ महीने की आयु के पौध के लिए पौध मानक विकसित करने पर शोध कार्य चल रहा है।

जड़ से उखाड़ने के बाद पौधे जड़ पकड़ने की अवधि

नर्सरी से उखाड़ने के बाद जितनी जल्दी हो सके रोपाई करने की सलाह दी जाती है। तथापि अपरिहार्य परिस्थितियों में (भारी वर्षा के कारण खेत तैयार नहीं है) नारियल पौधों का सावधानीपूर्वक भंडारण दो सप्ताह तक किया जा सकता है। ऐसे मामलों में, पौधों को छाया में रखना चाहिए और पानी भी देना चाहिए। भंडारण के समय नारियल पौधे के छिलका युक्त भाग को दीमक के प्रकोप से सुरक्षित रखने पर ध्यान देना चाहिए।

पॉलीबैग पौधे - फायदे

आमतौर पर नारियल पौधे मई/जून महीने के दौरान बेचे जाते हैं और पॉलीबैग पौधे उन परिस्थितियों में उपयुक्त होते हैं जहाँ पानी के जमाव के कारण खेत तैयार नहीं हो जाता



पौधे को छाया प्रदान किया जा रहा है

है। रोपण के लिए स्थिति अनुकूल होने पर पॉलीबैग पौधों का रोपण किया जा सकता है। पॉलीबैग पौधों का दूसरा फायदा यह है कि इसमें प्रत्यारोपण आघात (ट्रांसप्लांटिंग शॉक) नहीं होता है और पौधे रोपण के बाद बेहतर ताकत के साथ लगातार बढ़ते रहेंगे।

नारियल पौधों का वैज्ञानिक रोपण

अच्छी जल निकास युक्त बलुई दोमट मिट्टी नारियल की खेती के लिए सबसे उपयुक्त होती है। ज़मीन बिना किसी पेड़ की छाया के खुली होनी चाहिए ताकि ताड़ों को अधिकाधिक धूप मिले। यदि भूमि असमतल और झाड़ियों से भरी है तो गड्ढे खोदने से पहले झाड़ियों को साफ करना चाहिए और ज़मीन समतल बनाना चाहिए। अच्छी तरह से वितरित वर्षा या सिंचाई के जरिए पानी की पर्याप्त आपूर्ति सुनिश्चित की जानी चाहिए। ढलान वाले क्षेत्रों में मृदा और जल संरक्षण उपायों को अपनाया जाना है। जलभराव वाले निम्न क्षेत्रों में ऊंचे टीले बनाकर उस पर रोपण किया जाना है। मखरली मिट्टी में रोपण के 6 महीने पहले 2 किलो ग्राम नमक मिलाने से मिट्टी को ढीला करने में मदद मिलेगी। आमतौर पर 7.5 मी. x 7.5 मी. की दूरी की सिफारिश की जाती है। गड्ढों की गहराई मिट्टी के प्रकार पर निर्भर होती है। मखरली मिट्टी में 1.2 मी. x 1.2 मी. x 1.2 मी. आकार के गहरे और चौड़े गड्ढे खोदे जाएं और बलुई दोमट मिट्टी में 1 मी. x 1 मी. x 1 मी. आकार के गड्ढे पर्याप्त होते हैं। गड्ढे को 60 सें.मी. की ऊँचाई तक ऊपरी मिट्टी, चूर्णित गोबर और राख से भर दिया जाता है और पौधे के रोपण के लिए गड्ढे के मध्य में एक छोटा गड्ढा खोदा जाता है।

● रोपण तकनीक

रोपण के समय पुरानी जड़ों को हटाया जाय क्योंकि रोपण के बाद नई जड़ें निकलती हैं। रोपण के बाद पौधे के चारों ओर मिट्टी को अच्छी तरह दबाएं। स्यूडोमोनास फ्लोरेसेंस जैसे जैव-संरोपों से पौधे का जैव लेपन (बयो-प्राइमिंग) करने से पौधों की रोग सहनशीलता बढ़ती है और पौधों के विकास को बढ़ावा मिलता है। मुख्य खेत में ऐसे पौधों की प्रारंभिक वृद्धि वर्धित ताकत और रोग सहनशीलता के साथ बेहतर पाई गई। मुख्य खेत में रोपण के समय नारियल पौधों को 500 ग्राम जैव खाद के साथ 200 स्यूडोमोनास फ्लोरेसेंस में डुबोएं।

अधोरोपण करते समय सावधानी

7.5 मी. x 7.5 मी. की दूरी पर अधोरोपण किया जा सकता है। तथापि अधोरोपित ताड़ों की बेहतर वृद्धि के लिए पुराने ताड़ों को प्रति वर्ष 25 प्रतिशत की दर पर हटाने की सलाह दी जाती है। इससे यह सुनिश्चित हो जाता है कि चार वर्ष की अवधि में सारे पुराने ताड़ों को हटाया जाता है और अधोरोपित ताड़ों की अच्छी वृद्धि और शोध पुष्पण हेतु पर्याप्त मात्रा में सूर्यप्रकाश मिल जाता है। पुराने ताड़ों की छाया अधोरोपित ताड़ों के पुष्पण में प्रतिकूल प्रभाव डालेगी। यदि पुराने पेड़ों को हटाने में किसी भी प्रकार की देरी लगी तो यह सहज है कि रोपित ताड़ों के फूलने में भी देरी होगी।

खाद

पौधों की वृद्धि बेहतर होने, जल्दी फूलने व फलने और नारियल ताड़ों से अच्छी उपज मिलने के लिए रोपण के प्रथम वर्ष से ही नियमित रूप से खाद प्रयोग आवश्यक है। उर्वरकों का प्रथम प्रयोग रोपण के तीन महीने बाद करना चाहिए। प्रारंभिक वर्ष के दौरान प्रयुक्त किए जाने वाले रासायनिक उर्वरक की मात्रा वयस्क ताड़ के लिए अनुशंसित उर्वरक की खुराक का दसवाँ हिस्सा है। दूसरे वर्ष के दौरान वयस्क ताड़ों के लिए अनुशंसित खुराक का एक तिहाई हिस्सा मई-जून और सितंबर-अक्टूबर में दो भागों में दिया जाय। तीसरे वर्ष के दौरान खुराक दोगुना किया जाय। चौथे वर्ष से वयस्क ताड़ों के लिए अनुशंसित दर पर उर्वरकों का प्रयोग किया जाय। छोटे ताड़ों के लिए उर्वरक अनुसूची सारणी 3 में दी गई है। सितंबर-अक्टूबर के दौरान दूसरी विभाजित खुराक के



छोटे पौधों को उर्वरक प्रयोग

रोपण का वर्ष	मई-जून			सितंबर-अक्टूबर		
	यूरिया	मसूरीफॉस	एमओपी	यूरिया	मसूरीफॉस	एमओपी
पहला वर्ष	मई-जून में रोपण			110	150	170
दूसरा वर्ष	120	170	190	240	340	375
तीसरा वर्ष	240	340	380	480	680	750
चौथे वर्ष के बाद	365	500	565	730	1000	1125

साथ 3-5 कि.ग्रा. जैविक खाद जैसे वर्माकम्पोस्ट या नीमखली (पहले वर्ष 3 कि.ग्रा., दूसरे वर्ष 5 कि.ग्रा., तीसरे वर्ष से 10 कि.ग्रा.) को गड्ढे में मिलाए और उर्वरक डालने के बाद मिट्टी से ढक दिया जाय।

छोटे नारियल ताड़ों में कीट प्रबंधन

गैंडा भूंग का प्रकोप आमतौर पर छोटे नारियल ताड़ों पर पाया जाता है और लंबी किस्मों की तुलना में इसका प्रकोप बौनी किस्मों में अधिक होता है। वयस्क भूंग नारियल पौधे के गर्दनी क्षेत्र में छेद करता है और पेड़ के मृत होने

जैसे लक्षण दिखाते हैं। कॉपल का केंद्र भाग गंभीर रूप से प्रकोपित होता है जिससे पेड़ इस प्रकार क्षतिग्रस्त हो जाता है कि उससे ठीक होना मुश्किल हो जाता है। छेद से चबाए गए रेशे बाहर निकलते हैं जो कि इस कीट के प्रकोप की पहचान का एक खास लक्षण है। कई मामलों में वृद्धि बिन्दु मुड़ जाता है, विकृत हो जाता है और तंदुरुस्ती अत्यंत कम हो जाती है। अवयस्क ताड़ों के पत्तों पर 'V' आकार में ज्यामितीय काट देखा जा सकता है जो कि इसका आम लक्षण है। रोगरोधी उपाय के रूप में सबसे भीतरी पर्णकक्ष को प्रति पेड़ 250 ग्रा. की दर पर नीम खली या चालमोगरा खली समान मात्रा में रेत मिलाकर भरा दें। 45 दिनों के अंतराल में पर्णकक्ष में दो नेपथलीन गोलियाँ (8 ग्रा.) रखकर रेत से ढकना भी प्रभावी होता है। वैकल्पिक रूप से सबसे भीतरी पर्णकक्ष में 4-5 ग्रा. फेरटेरा/फिप्रोनिल निहित छोटे छिद्रित पाउच भी रखा जा सकता है। गेंडा भृंगों को फँसाने के लिए गर्दनी क्षेत्र के चारों

ओर पुराने मछली जाल लगाने की प्रक्रिया भी अपनायी जाती है।

यह ध्यान दिया जाना चाहिए कि बौनी किस्मों को फूल निकलने तक विशेष देखभाल और ध्यान देने की आवश्यकता होती है। इसलिए बौनी किस्मों को किसान के आवास के निकटस्थ बागों में लगाने की सिफारिश दी जाती है। लंबी किस्में सबसे मज़बूत होती हैं और इन्हें वाणिज्यिक बागों की स्थापना हेतु चुना जाता है। बेहतर प्रबंधन करने पर संकर किस्में अच्छी तरह बढ़ती हैं इसलिए इन्हें ऐसी परस्थितियों में लगाया जाना चाहिए जहाँ सिंचाई और अनुशंसित पोषकतत्व प्रदान किए जा सकते हैं। केवल बारानी खेती पर निर्भर होकर औसत प्रबंधन की परिस्थिति में संकरों की सिफारिश नहीं की जाती है।

“अपने बाग में लगन से काम करें। क्योंकि फल आज तुम्हें खिलाएगा और बीज कल खिलाए जाने का वादा करता है।”

- क्रेग डी लॉन्सब्रॉ

नारियल विकास बोर्ड नारियल ताड़ारोहकों को बीमा सुरक्षा योजना हेतु आवेदन आमंत्रित करता है

नारियल विकास बोर्ड की केरा सुरक्षा बीमा योजना के तहत नारियल ताड़ारोहकों को बीमा सुरक्षा के लिए आवेदन आमंत्रित करता है और यह एक दुर्घटना बीमा योजना है। केरा सुरक्षा बीमा योजना के तहत आवेदन करने वाले ताड़ारोहकों को 5 लाख रुपए की बीमा सुरक्षा प्राप्त होगा। आँशिक दिव्यांगता के लिए ढाई लाख रुपए और दुर्घटना से संबंधित अस्पताल व्यय के लिए एक लाख रुपए मिल जाएगा। बोर्ड न्यू इंडिया एश्योरेंस कंपनी के सहयोग से योजना कार्यान्वित कर रहा है। वार्षिक प्रीमियम 375 रुपए है।

इसमें बोर्ड का हिस्सा 281 रुपए और लाभार्थी प्रीमियम हिस्सा 94 रुपए है। बोर्ड के कौशल विकास कार्यक्रम जैसे एफओसीटी प्रशिक्षण और नीरा तकनीशियन प्रशिक्षण कार्यक्रम में प्रशिक्षण प्राप्त करनेवालों के एक वर्ष पूरा प्रीमियम यानी 375 रुपए बोर्ड से अदा किया जाएगा। बीमा की अवधि की समाप्ति के बाद 94 रुपए की लाभार्थी हिस्से का भुगतान करके बीमा का नवीकरण किया जा सकता है। अठारह वर्ष से लेकर पैंसठ वर्ष तक की आयु के परंपरागत नारियल ताड़ारोहक भी योजना का लाभ उठा सकता है। 94 रुपए के लाभार्थी हिस्से के प्रीमियम का भुगतान नारियल विकास बोर्ड के नाम पर एरणाकुलम में देय डिमान्ड ड्राफ्ट से या ऑनलाइन द्वारा किया जा सकता है। आवेदन पत्र कृषि अधिकारी/पंचायत अध्यक्ष/सीपीसी अध्यक्ष इनमें से किसी द्वारा अनिवार्य रूप से प्रमाणित किया जाना चाहिए। विधिवत भरा हुआ आवेदन पत्र डिमांड ड्राफ्ट/ऑनलाइन भुगतान का प्रमाण, जन्मतिथि का प्रमाण/आधार कार्ड की प्रतिलिपि सहित अध्यक्ष, नारियल विकास बोर्ड, केरा भवन, एसआरवी रोड, कोची-682011 को भेज दें। अधिक जानकारी के लिए कृपया बोर्ड की वेबसाइट www.coconutboard.gov.in या दूरभाष - 0484-2377266, एक्स्टेंशन - 255(सांख्यिकी अनुभाग) से संपर्क करें।



नारियल आधारित खेती प्रणालियों से बेहतर उत्पादकता एवं आय

श्री आर.नंद गोपाल के अनुभव

ए.सी.मैथू, तम्पान सी. और पी.सुब्रमण्यन

भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद - केंद्रीय रोपण फसल अनुसंधान संस्थान, कासरगोड - 671 124



आर. नंद गोपाल अपने बाग में

तमिलनाडु में पोल्लाच्ची के पास पावैकलम, आनामलै के निवासी श्री आर. नंद गोपाल एक पूर्णकालिक किसान हैं जो अपनी आजीविका चलाने के लिए आय के एकमात्र स्रोत के रूप में नारियल खेती पर निर्भर हैं। बीबीएम स्नातक उपाधि प्राप्त श्री नंद गोपाल ने लगभग 25 वर्ष पहले पूर्णकालिक व्यवसाय के रूप में खेती को अपनाया। वे अब 50 साल के हैं। उनकी पत्नी श्रीमती सविता उनका हाथ बाँट रही है और खेती से जुड़ी सारी गतिविधियों में सक्रिय रूप से जुड़ी हुई है।

उनके 11 एकड़ के नारियल बाग में 650 नारियल ताड़ हैं, जिनमें से अधिकतर पेड़ पश्चिम तटीय लंबी किस्म के हैं। नारियल पेड़ों की औसतन आयु 30 वर्ष है। उनके बाग में नारियल पेड़ों के अलावा 550 जायफल के पेड़ और 2400 सुपारी के ताड़ मिश्रित फसल के रूप में उगाए जाते हैं। जायफल के पेड़ 13 वर्ष के हैं लेकिन वर्तमान में सभी पेड़ फलदायी नहीं हैं क्योंकि नंद गोपाल ने पौधों को लगाकर बढ़ाए गए इन पेड़ों को पुनरुज्जीवित करने हेतु इन पर कलमें बाँधकर रखी हैं(top working)।

वे इस तथ्य से अच्छी तरफ वाकिफ हैं कि नारियल बाग में अंतर फसल के रूप में सुपारी अनुशंसित फसल नहीं है। लेकिन बाज़ार में नारियल के भाव में हो रहे उतार-चढ़ाव ने उन्हें अपने बाग में नारियल के साथ सुपारी लगाने के लिए प्रेरित किया। वर्तमान में उनके नारियल बाग में मिश्रित फसल के रूप में 2400 सुपारी पेड़ हैं जिनमें से केवल 350 पेड़ फलदायी हैं। सुपारी के पेड़ों की आयु दो से सात वर्ष तक है। उनके बाग में नारियल पेड़ों के साथ अंतरफसल के रूप में काली मिर्च की भी खेती की जा रही है हालांकि यह बड़ी संख्या में नहीं है। वे अपने बाग में कई सब्जी फसलों और



जैविक उर्वरकों का प्रयोग

पपीते जैसे फलों की भी खेती कर रहे हैं किंतु यह बहुत कम मात्रा में ही है।

एकीकृत खेती

नंद गोपाल की राय में अपनी 11 एकड़ भूमि में खेती आर्थिक रूप से व्यवहार्य है जिसका मुख्य कारण है उन्होंने नारियल की खेती के साथ एकीकृत रूप से पशुपालन को भी अपनाया है। उनके बाग की मिश्रित खेती इकाई में साहीवाल संकर की छह गाय हैं, जिनमें से तीन अब दुधारू स्थिति में हैं। उनके बाग में अंतरफसल के रूप में चारा धास, सीओ5 आदि की खेती की जा रही है जो पशुओं का मुख्य आहार है। गायों से प्राप्त गोबर उनकी जैविक कृषि आदान समग्री की आवश्यकता को भागिक रूप से पूरा करता है।

पोषण प्रबंधन

नंद गोपाल अपने बाग में एकीकृत पोषण प्रबंधन विधि को प्रभावी ढंग से अपनाया है ताकि नारियल आधारित फसल प्रणाली की सभी फसलों की वांछित उत्पादकता कायम रखने हेतु अनुकूलतम स्तर पर मिट्टी की उर्वरता और पौधों को पौष्टिकतत्वों की आपूर्ति बनायी रखी जा सके।

किसान ने जैविक, अजैविक एवं जीवीय संघटकों के स्रोतों से एकीकृत तरीके से यह प्राप्त किया है। अजैविक उर्वरकों तथा जीवीय संघटकों का प्रयोग ड्रिप सिंचाई और फेर्टिगेशन के साथ किया जाता है जबकि जैविक खादों का प्रयोग नारियल थाले में किया जाता है।

जैविक खाद के रूप में प्रति वर्ष प्रति ताड़ 30 कि.ग्रा. कुक्कुट खाद, प्रति वर्ष प्रति ताड़ 30 कि.ग्रा. गोबर और प्रति वर्ष प्रति ताड़ 20 कि.ग्रा. बकरी खाद का प्रयोग किया जाता है। जून महीने के पहले सप्ताह के दौरान नारियल थालों को



नारियल के सूखे पत्तों से पलवार

खोला जाता है और थालों में जैविक उर्वरकों का प्रयोग किया जाता है।

किसान ने जैविक आदान सामग्रियों की आवश्यकता को पूरा करने के लिए खासतौर पर खेत में उपलब्ध जैविक पदार्थों का उपयोग करके थालों में पलवार लगाकर और केंचुआ खाद बनाकर जैविक पुनर्चक्रण को प्रभावी तरीके से अपनाया है। उन्होंने नारियल विकास बोर्ड द्वारा कार्यान्वित विकास योजना के तहत प्राप्त प्रोत्साहनों का उपयोग करते हुए छत युक्त 9 मीटर लंबी, 1.2 मीटर चौड़ी तथा 90 से.मी. गहरी वर्मीकम्पोस्टिंग टंकी का निर्माण किया है।

नारियल, जायफल और सुपारी को फेर्टिगेशन के द्वारा 60 दिनों में एक बार के हिसाब से छह अलग-अलग खुराकों में रासायनिक उर्वरकों का प्रयोग किया जाता है। फेर्टिगेशन के द्वारा प्रयोग किए जानेवाले रासायनिक उर्वरकों में फैक्टम्फोस, म्यूरिएट ऑफ पोटेश तथा यूरिया शामिल हैं। मग्नीशियम सल्फेट भी फेर्टिगेशन के द्वारा दिया जाता है। 650 नारियल पेड़, 550 जायफल ताड़ और 2400 सुपारी ताड़ों को फेर्टिगेशन के द्वारा 60 दिनों में एक बार दिए जाने वाले रासायनिक उर्वरकों की कुल मात्रा 400 कि.ग्रा. फैक्टम्फोस, 400 कि.ग्रा. म्यूरिएट ऑफ पोटेश और 200 कि.ग्रा. यूरिया है। इनके अलावा फेर्टिगेशन द्वारा फसलों को सूखमपोषक तत्वों का मिश्रण भी दिया जाता है।

सिंचाई और जल प्रबंधन

नंद गोपाल के बाग में नारियल और सह फसलों जैसे जायफल तथा सुपारी को ड्रिप सिंचाई विधि से पानी दिया जाता है। बाग में पानी के स्रोत हैं- एक खुला कुआँ तथा एक बोरवेल। किसान अपने पूरे बाग की सिंचाई करने के लिए



अपनी पत्नी के साथ श्री नंद गोपाल : पीछे जैविक खाद इकाई दर्शित है मुख्यतः खुले कुएं पर निर्भर है। बोरवेल का उपयोग ज्यादातर घरेलू प्रयोजनों के लिए और सिंचाई के लिए अतिरिक्त व्यवस्था के रूप में किया जाता है। उनका खुला कुआँ नदी के किनारे पर स्थित है, इसलिए किसान को गर्मी के मौसम में भी पानी की कोई समस्या नहीं होती है।

7.5 एचपी के विद्युत अपकेंद्री पम्प का उपयोग करके खुले कुएं से पानी निकाला जाता है। पानी को पहले रेत फिल्टर और स्क्रीन फिल्टर के एक जोड़े से छाना जाता है, जो मुख्य पाइप लाइन में समांतर रूप से जोड़े गए होते हैं। सिंचित पानी के साथ उर्वरक प्रदान करने के लिए सिंचाई प्रणाली से एक फेर्टिंगेशन इकाई भी जोड़ी गयी है।

सिंचाई की सुविधा के लिए 11 हेक्टर के फार्म को दो भागों में बांटा गया है। पम्प और फिल्टर से निकलने वाली मुख्य नली को एक नियंत्रण वाल्व बॉल वाल्व की सहायता से दो उप मुख्य नलियों से जोड़ा जाता है, उप मुख्य नली शुरू होने वाले भाग पर एक एक को जोड़ा जाता है। ज़मीन के नीचे स्थापित ये पीवीसी उप मुख्य नलियाँ पानी को बाग के प्रत्येक भागों में ले जाती हैं। उप मुख्य नलियों के साथ 16 मि.मी. पार्श्वीय नलियाँ जोड़ी गई हैं और सिंचाई करने के लिए प्रत्येक पौधे की ओर इन नलियों को खींचा जाता है। नारियल और अन्य फसलों के हरेक कतार के लिए दो पार्श्वीय नलियों के हिसाब से खींची जाती हैं। पार्श्वीय नलियों को नारियल थाले की विपरीत दिशा में लगाया जाता है। सिंचाई के लिए प्रत्येक फसल के थाले के अंदर प्रति घंटा आठ लीटर बहाव दर युक्त ड्रिपरों को पार्श्वीय नलियों के साथ जोड़ा जाता है। नारियल ताड़ों को छह ड्रिपिंग पॉइंट प्रदान किए जाते हैं, जो थाले के विपरीत किनारों पर लगायी गई प्रत्येक पार्श्वीय नली में तीन के हिसाब से जोड़े जाते हैं। इसी तरह से जायफल को चार ड्रिपिंग पॉइंट और फलदायी सुपारी के ताड़ों को दो ड्रिपिंग



सूक्ष्मजीवीय समूह को पालने हेतु फाइबर टंकी पॉइंट प्रदान किए जाते हैं। छोटी आयु के सुपारी ताड़ों को एक ड्रिपिंग पॉइंट से सिंचित किया जाता है। पार्श्वीय नलियों की पहुंच के बाहर की फसलों को सबसे निकट लगे पार्श्वीय नली पर लगाए ड्रिप्पर के साथ जोड़े गए माइक्रो ट्यूब की मदद से सिंचित किया जाता है।

नंद गोपाल प्रत्येक फसल के लिए अपेक्षित पानी की ज़रूरतों को ड्रिपिंग पॉइंट की संख्या में परिवर्तन करके नियंत्रित करता है। फसलों को एक से डेढ़ घंटे तक पानी दिया जाता है। इस प्रकार नारियल ताड़ को प्रति दिन 48 से 72 लीटर और जायफल पेड़ को 32 से 48 लीटर और फलदायी सुपारी पेड़ को 16 से 24 लीटर पानी मिलता है। हालांकि सिंचाई के लिए उपयोग करने से पहले सिंचाई जल को अच्छी तरह से छाना जाता है, फिर भी कभीकभार फिल्टर में गंदगी जम जाती है और किसान को इसे हटाने और साफ करने की आवश्यकता पड़ जाती है।

किसान अपनी फसलों के लिए सिंचाई जल के साथ रासायनिक उर्वरक भी देता है। इस प्रयोजन के लिए पम्प आउटलेट पर मुख्य नली में वेंचुरी प्रकार की एक फेर्टिंगेशन इकाई स्थापित की गयी है। किंतु वह वेंचुरी प्रणाली के संचालन से संतुष्ट नहीं था। उनके अनुसार वेंचुरी प्रणाली में पानी का बहाव नियमित बनाना आसान नहीं था और बहाव को नियमित करने पर आउटलेट दबाव भी कम हो जाता है जिससे ड्रिपरों से बाहर आने वाले पानी की दर कम हो जाती है। इस स्थिति से उबरने के लिए उन्होंने सिंचाई जल के साथ उर्वरक प्रदान करने का एक नूतन तरीका बनाया है। उनके पास सिंचाई के लिए रासायनिक उर्वरक घोल तैयार करने और विभिन्न सूक्ष्मजीवीय समूह को पालने हेतु 200 लीटर क्षमता वाली फाइबर टंकी की लंबी श्रेणी भी है।

एक इन्च का लचीला पाइप उर्वरक टंकी से खींचा जाता है और इसे सिंचाई पम्प के इनलेट से जोड़ दिया जाता है। जब पम्प संचालित होता है तो यह सिंचाई जल के साथ उर्वरक घोल भी खींचता है। सिंचाई जल के साथ सूक्ष्मजीवीय समूह का प्रयोग करने के लिए भी यही प्रणाली अपनायी जाती है। पाइप लाइन में बचे-खुचे उर्वरकों को बाहर निकालने के लिए प्रत्येक फेर्टिंगेशन के बाद कुछ और समय के लिए सिंचाई जारी रखी जाती है। रेत और स्क्रीन फिल्टरों को सावधिक रूप से धोया जाता है ताकि सिंचाई के लिए साफ जल प्रदान किया जा सके जिससे ड्रिपरों में गंदगी जमना कम हो जाती है। किसान द्वारा उपयोग किए जाने वाला पम्प अपकेंद्री (सेंट्रिफ्यूगल) पम्प है। अपकेंद्री पम्प की कार्यक्षमता बढ़ाने के लिए पम्प को हमेशा खुले कुए के जल स्तर के निकट ही रखा जाता है। कुएं के जल स्तर के उत्तार-चढ़ाव के अनुसार पंप को ऊपर या नीचे ले जाने के लिए एक रस्सी और चरखी की व्यवस्था की गयी है।

सिंचित पानी की अधिकाधिक उपयोगक्षमता सुनिश्चित करने के लिए सभी नारियल ताड़ों के थालों में नारियल पत्ते तथा बाग के अन्य अपशिष्टों का उपयोग करके पलवार की मोटी परत से ढक दिया जाता है।

पौधा संरक्षण

विगत दो वर्षों से सफेद मक्खी का प्रकोप उनकी मुख्य समस्या बन गई है। उनके अनुसार चालू वर्ष में नारियल की उपज में कमी मुख्य रूप से सफेद मक्खी के प्रकोप के कारण हुई है। फिर भी उन्होंने अब तक कोई निवारणात्मक उपाय अपनाया नहीं है। इसके अलावा बाग में कतिपय नारियल ताड़ों में जड़ मुझ्झा रोग के लक्षण प्रकट हुए हैं।

उनके अनुसार रोगलक्षण सात वर्ष पहले शुरू हुए थे और धीरे धीरे फैल रहे हैं। जड़ मुझ्झा रोगलक्षण दर्शाने वाले ताड़ों को फेर्टिंगेशन इकाई के ज़रिए महीने में दो बार तमिलनाडु कृषि विश्वविद्यालय द्वारा विकसित 'कोकोकोन' नामक सूक्ष्मजीवीय समूह का प्रयोग किया जाता है। उन्होंने कहा कि सूक्ष्मजीवीय समूह का प्रयोग करने के बाद कुछ पेड़ों के स्वास्थ्य में सुधार होने लगा है। उनके अनुसार यह मिट्टी की उर्वरता सुधारता है जिससे पौधे का स्वास्थ्य भी बेहतर हो रहा है। नंद गोपाल पौधा संरक्षण उपाय के रूप

में नारियल ताड़ों को नियमित रूप से ट्राइकोडेर्मा का प्रयोग करते हैं।

तुड़ाई और उपज

नारियल की तुड़ाई 60 दिनों में एक बार की जाती है। नंद गोपाल को प्रति वर्ष प्रति नारियल पेड़ से औसतन 150 फल मिलते हैं। किंतु, हाल ही में उपज प्रति पेड़ 125 फल तक कम हो गई है। उनके अनुसार उपज में कमी मुख्य रूप से सफेद मक्खी के प्रकोप के कारण हुई है। उनके अनुसार एक नारियल की उत्पादन लागत 12 रुपए है। यद्यपि किसान के पास 550 जायफल के पेड़ हैं लेकिन सभी पेड़ों से पूरी क्षमता के साथ फल मिलना शुरू नहीं हुआ है क्योंकि जायफल के पेड़ों पर 3-4 वर्ष पहले पुनरुज्जीवन के लिए कलमें बाँधे गए हैं। उन्हें अपने जायफल पेड़ों से 560 कि.ग्रा. फल तथा 170 कि.ग्रा. जावित्री मिलती हैं। अधिकांश सुपारी पेड़ छोटी आयु के हैं और उपज मिलना शुरू नहीं हुआ है। कम मात्रा में ही उन्हें सुपारी प्राप्त हुए हैं और प्रति कि.ग्रा. छिले सुपारी के लिए लगभग 200 रुपए मिल रहे हैं।

उनकी राय में नारियल की खेती में बाधा डालने वाली मुख्य समस्या नारियल का कम बाजार मूल्य है। उन्होंने कहा कि वे नारियल के भाव में गिरावट/भाव में उत्तार-चढ़ाव के कारण होनेवाली कठिनाइयों को दूर करने में समर्थ हैं क्योंकि वे अपने बाग में नारियल आधारित बहुफसल और एकीकृत खेती प्रणाली अपनायी है। वे कल्पवृक्षम नारियल उत्पादक कंपनी, आनामलै की गतिविधियों में सक्रिय रूप से शामिल हैं। वे कृषि विभाग के स्थानीय विस्तार कर्मियों के साथ निकटसंपर्क बनाए रखते हैं और नारियल के जड़ मुझ्झा रोग के प्रबंधन के लिए सूक्ष्मजीवीय समूह के प्रयोग पर क्षेत्र परीक्षणों को कार्यान्वित करने में तमिलनाडु कृषि विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों के साथ सहयोग भी देते हैं। नंद गोपाल के अनुसार भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद - केंद्रीय रोपण फसल अनुसंधान संस्थान, तमिलनाडु कृषि विश्वविद्यालय जैसे अनुसंधान संस्थानों, नाविबो, राज्य कृषि विभाग जैसे विकास एजेंसियों तथा नारियल क्षेत्र के एफपीओ को शामिल करते हुए समान्वित प्रयास करने की आवश्यकता है ताकि हाल ही में नारियल बागों में जड़ मुझ्झा रोगप्रकोप तथा सफेद मक्खी के प्रकोप सहित नारियल उत्पादकों द्वारा सामना की जानेवाली समस्याओं का प्रभावी ढंग से प्रबंधन किया जा सके। ■

जिमीकंद - अंडमान व निकोबार द्वीपसमूह के नारियल बागों के लिए लाभकार अंतरफसल

बी.अगस्टिन जेरार्ड, वी.दामोदरन, के.अबिरामी और आई.जयशंकर

भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद - केंद्रीय द्वीपीय कृषि अनुसंधान संस्थान, पोर्ट ब्लेयर, अंडमान व निकोबार द्वीपसमूह

नारियल अंडमान व निकोबार द्वीपसमूह में सर्वाधिक खेती की जाने वाली फसल है और इसकी खेती या तो एकल फसल के रूप में या बहु फसलों और पशु संघटकों के विविध संयोजनों के साथ की जाती है। यह अंडमान व निकोबार द्वीपसमूह में 20,000 हेक्टर से अधिक क्षेत्र में उगाया जाता है जिनमें से 15,000 हे. से अधिक क्षेत्र निकोबार जिले में और शेष अंडमान द्वीपसमूह में है। नारियल का खेतीगत क्षेत्र विविध द्वीपसमूहों में खिचरा पड़ा है और इसलिए किसी एक प्रकार की प्रणाली या खेती विधि अपनाना नामुम्किन है। 7.5 X 7.5 मीटर की अनुशासित दूरी के साथ नारियल बागानों में पेड़ों के बीच की जगह पर विभिन्न वार्षिक और बहुवर्षी फसलों को उगाना नारियल आधारित खेती प्रणाली में सफल सिद्ध हुआ है। तथापि दक्षिण अंडमान के कई बागानों में यह देखा गया है कि कृषि आदान सामग्रियों की उपलब्धता एवं प्रबंधन परिस्थितियों के अनुसार समुचित प्रबंधन विधियों के साथ फसल प्रजातियों या फसल संयोजनों का सटीक चयन नहीं हो पा रहा है जिसके फलस्वरूप आय में कमी और प्राकृतिक संसाधनों का कम उपयोग हो रहा है।

नारियल किसानों की आय बढ़ाने और उत्पादकता में वृद्धि करने के लिए बागानों में लंबाई एवं चौड़ाई में उपलब्ध जगह का अधिकतम उपयोग करने वाले अंतरफसल मॉडल अपनाना सबसे अच्छे विकल्प के रूप में सुझाया गया है।

जिमीकंद (अमोर्फाफाल्लस पाओनिफोलियस) जो आमतौर पर सूरन नाम से भी जाना जाता है, एक कंद फसल है और इसके ज़मीनी स्तर से निचले तने पर कंद पैदा होता है। द्वीपीय

फसल प्रणालियों की सीमित प्रबंधन परिस्थितियों में इसकी उच्च उपज क्षमता की वजह से और इसके पाक गुणों के कारण इस फसल की लोकप्रियता बढ़ रही है।

इस फसल की खेती फिलीपीन्स, जावा, इन्डोनेशिया, सुमात्रा, मलेशिया, बंगलादेश, भारत और चीन में बड़े पैमाने पर की जाती है। भारत में व्यापक तौर पर इसकी खेती आँध्र प्रदेश, पश्चिम बंगाल, गुजरात, केरल, तमिलनाडु, महाराष्ट्र, उत्तर प्रदेश, बिहार और झारखण्ड राज्यों में की जाती है। कंद (जिसे घनकंद(कोर्म) कहा जाता है) को उबालने या पकाने या तलने के बाद सब्जी के रूप में उपयोग किया जाता है। यह कार्बोहाइड्रेट्स, कैल्शियम (50 मि.ग्रा./ग्राम), फोसफरस (34 मि.ग्रा./ग्राम) और विटामिन ए (260 आईयू/ग्राम) का समृद्ध स्रोत बताया जाता है। पत्तियाँ विटामिन ए से भरपूर बतायी गयी हैं, जिनका उपयोग भारत के कुछ स्थानीय जनजातियों द्वारा सब्जी के रूप में किया जाता है।

अंडमान व निकोबार द्वीपसमूह के विभिन्न द्वीपीय समुदाय फ्राई, चिप्स, कड़ी जैसे विभिन्न प्रकार के पाक व्यंजनों की तैयारी में या तो अकेले या दूसरी सब्जियों, कंदों तथा नारियल के साथ जिमीकंद का उपयोग पसंद करते हैं। द्वीपों में अमोर्फाफाल्लस प्रजाति के अंतर्गत आने वाली कई ज़ंगली प्रजातियों और जिमीकंद के स्थानीय प्रकार की नई किस्मों का उपयोग किया जाता है जो आकार, स्वाद एवं उपज क्षमता में भिन्न होते हैं। उच्च पैदावार देने वाली गैर-तीखी किस्में भी प्राप्त होने लगी हैं जिसके कारण देश के कई स्थानों पर व्यावसायिक खेती के लिए इस फसल को अपनाया जा रहा





जिमीकंद के बीज कंद और लंबवत् काटकर बीजों की तैयारी



कटे कंदों को गोबर के घोल में उपचार और नारियल बागों में पेंड़ों के बीच रोपण

है। अंडमान व निकोबार द्वीपसमूह में भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद - केंद्रीय द्वीपीय कृषि अनुसंधान संस्थान ने जिमीकंद की गजेंद्र, श्री पद्मा जैसी उत्तम किस्में विकसित की हैं और इनकी खेती का निर्दर्शन किया है। भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद - केंद्रीय द्वीपीय कृषि अनुसंधान संस्थान द्वारा नारियल आधारित फसल प्रणाली के तहत जिमीकंद के जैविक उत्पादन का निर्दर्शन करने से यह दर्शित हुआ है कि अपर्याप्त प्रबंधन परिस्थितियों वाली द्वीपीय फसल प्रणाली में भी उत्पादकता तथा लाभकारिता कैसे बढ़ायी जा सकती है। यह फसल भारत से निर्यात की बेहतरीन संभावनाएं भी प्रदान करती है क्योंकि आमतौर पर दूसरे देशों में इसकी व्यावसायिक रूप से खेती नहीं की जाती है। अंडमान के नारियल बागानों में जिमीकंद की खेती पद्धतियों के बारे में यहाँ सर्विस्तार बताया गया है।

मृदा एवं जलवायु

आमतौर पर अमोर्फोफाल्लस प्रजातियाँ उष्णकटिबंधीय और उपोष्णकटिबंधीय आर्द्ध जलवायु परिस्थितियों में 30-35 डिग्री सेल्सियस के औसतन वार्षिक तापमान और 6-8 महीनों की अवधि तक 1000-1500 मि.मी. तक अच्छी वितरित वर्षा मिलने पर बेहतर तरीके से बढ़ती हैं। यह विभिन्न प्रकार की मिट्टियों में पनपती है लेकिन 5.5-7.0 पीएच के साथ अच्छी जलनिकासी वाली रेतीली दोमट मिट्टी या बलुई दोमट मिट्टी

में इस फसल की वृद्धि बेहतर होती है। अंडमान व निकोबार द्वीपसमूह की जलवायु और मिट्टी इस फसल की खेती के लिए आदर्श रूप से अनुकूल है।

प्रवर्धन

जिमीकंद का प्रवर्धन ऑफसेट (अंकुर) या घनकंद के उपयोग के द्वारा किया जाता है। ऑफसेट मातृ घनकंद से उत्पन्न होनेवाले लघु कंद हैं। कुछ किस्मों/वर्गों में संतति घनकंद उत्पन्न नहीं होता है जिसमें मातृ कंद को लंबवत् रूप से टुकड़ों में इस तरह से काटा जाता है कि प्रत्येक टुकड़े में केंद्रक कली का हिस्सा मौजूद हो जहाँ से रोपण के बाद पौधे की बढ़वार होती है। मातृ कंद के आकार के आधार पर इसे 4 या 6 या अधिक टुकड़ों में काट दिया जाता है जिससे यह 300 से 500 ग्राम वज़न के टुकड़े बन जाते हैं। पौध सामग्री को गोबर के घोल (स्लरी) में डुबोकर छाया में सुखाने से अंकुरण तेज़ी से होता है।

ज़मीन की तैयारी और रोपण

दक्षिण अंडमान में अधिकांश नारियल बाग लहरदार ज़मीन पर हैं। अतः ट्रैक्टर और यांत्रिक उपकरणों का उपयोग करना मुश्किल है। ऐसी जगहों पर कुलहाड़ी से केवल हाथ से खेत की तैयारी की जाती है। जहाँ भी संभव हो दो से तीन बार अंतरजगह की जुताई की जा सकती है।



नारियल के साथ जिमीकंद की बेहतर बढ़वार

45 से.मी. X 45 से.मी. X 45 से.मी. आकार के गड्ढे 90 से.मी. X 90 से.मी. की दूरी पर खोदे जाते हैं और फिर 4-5 कि.ग्रा. घूरे की खाद और ऊपरी मिट्टी से भर दिया जाता है। नारियल के पेड़ों के बीच की जगह में अन्य अंतरफसलों जैसे दालचीनी, जायफल आदि की उपस्थिति के अनुसार लगभग 25 से 40 जिमीकंद पौधों को लगाया जा सकता है। पूर्व उपचार की गई रोपण सामग्री को गड्ढे में लंबवत् रखा जाता है और मिट्टी से ढक कर हल्के से दबाया जाता है। द्वीपीय परिस्थितियों में रोपण का उपयुक्त समय मार्च-अप्रैल है। मानसून की बारिश शुरू होने के बाद देरी से रोपण करने से कंद सड़ जाता है। अतः रोपण सही समय पर करना अनिवार्य है।

अंतरखेती प्रक्रियाएं

पलवार: रोपण के तुरंत बाद गड्ढों को सूखे पत्तों से ढक दिया जाना चाहिए जो नमी संरक्षण द्वारा बेहतर अंकुरण सुगम बनाएगा और खरपतवार वृद्धि को नियंत्रित करने में भी मदद करेगा। नारियल के बागानों में पेड़ों के बीच की जगह में नारियल और सुपारी के सूखे और ताज़ा दोनों पत्तों का उपयोग

पलवार के रूप में किया जाता है। गिरिपुष्प (गिलरिसिडिया) के पत्तों का प्रयोग भी काफी लाभदायक होता है क्योंकि यह मिट्टी में अधिक पोषकतत्व मिला देता है।

निराई: खरपतवार की वृद्धि के आधार पर एक (या) दो बार निराई करना आवश्यक होता है, पहली निराई रोपण के 45 दिनों के बाद और दूसरा, पहली निराई के लगभग एक महीने बाद की जानी चाहिए। समुचित रूप से पलवार लगाने से दूसरी निराई की आवश्यकता कम हो जाती है जो श्रमिक कार्यक्षमता में मददगार होता है।

पौधा संरक्षण

द्वीपीय परिस्थितियों में कोई मुख्य कीट एवं रोग का प्रकोप नहीं पाया गया है। गरदन विगलन (कॉलर रोट) एक महत्वपूर्ण बीमारी है, जो मुख्य रूप से खराब जल निकासी, जल जमाव और गरदनी क्षेत्रों में मशीनी चोट के कारण उत्पन्न होता है। भूरे रंग का घाव पहले गरदनी क्षेत्र पर होता है जो पूरे तने पर फैल जाता है जिसके कारण पौधा पूरी तरह पीला हो जाता है। रोगमुक्त रोपण सामग्री का उपयोग करना, बाग की स्वच्छता बनाए रखना और उचित जल निकासी प्रदान करना और ट्राइकोडर्मा युक्त नीम खली का प्रयोग गरदन विगलन के प्रबंधन में मदद करेगा।

एफिड और मीलीबग जैसे चूसनेवाले कीट भी कभी-कभार देखे जाते हैं जिनका प्रबंधन प्रति लीटर पानी में 2 मि.ली. नीम तेल मिलाकर छिड़काव करके किया जा सकता है।

तुड़ाई

रोपण के 8-9 महीने बाद फसल ली जा सकती है। कंद की तुड़ाई नवंबर-दिसंबर में की जाती है। पत्तियों के पीले पड़ने और गिरने से यह संकेत मिलता है कि फसल तुड़ाई के लिए परिपक्व हो गया है। मिट्टी को ढीला बनाने और खुदाई के दौरान कंद को नुकसान होने से बचने के लिए कंद निकालने के पहले हल्के तौर पर सिंचाई करने की आवश्यकता होती है। घनकंद को खोदकर निकाला जाता है और अच्छी तरह से साफ करके बिना किसी नुकसान के कई महीनों तक हवादार स्थानों में भंडारित किया जाता है। मिट्टी की स्थिति और प्रबंधन के आधार पर घनकंद की पैदावार प्रति हेक्टर 40 से 50 टन तक होती है। यह किसानों को उचित अतिरिक्त

सेवानिवृत्ति

श्री बुद्धिराम देबबर्मा, एमटीएस, राज्य केंद्र, कोलकाता 05 अक्टूबर 2022 को नारियल विकास बोर्ड की सेवाओं से स्वैच्छिक रूप से सेवानिवृत्त हुए। उन्होंने लगभग 30 वर्ष बोर्ड में सेवा की।



बिक्री के लिए तैयार जिमीकंद

आय प्रदान करता है क्योंकि फार्म गेट पर जिमीकंद का भाव प्रति कि.ग्राम 30 से 40 रुपए तक है। फसल के लगभग 20 प्रतिशत हिस्सा 3 या 4 महीने के बाद अगले रोपण मौसम के लिए बीज कंद के रूप में रखने की आवश्यकता होती है और बाकी का विपणन किया जा सकता है।

निष्कर्ष

भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद-केंद्रीय द्वीपीय कृषि अनुसंधान संस्थान द्वारा किए गए निदर्शनों के तहत दक्षिण अंडमान के चुनिदे किसानों को जिमीकंद की रोपण सामग्री (हरेक को 100 कि.ग्रा.) प्रदान की गई है और वैज्ञानिक खेती पद्धतियों पर प्रशिक्षण दिया गया है। किसानों द्वारा अपनाई गई वैज्ञानिक पद्धतियों में जैव खादों का बुनियादी अनुप्रयोग; बुवाई से पहले गोबर के घोल तथा ट्राइकोडर्मा विरिडे से बीजों का उपचार; बुवाई के पश्चात् तथा फिर से 45 दिनों के बाद गिरिपुष्प के हरे पत्तों से पलवार; 45 दिनों के बाद निराई-गुड़ाई के पश्चात् मिट्टी चढ़ाना शामिल हैं। किसानों ने लगभग नौ महीने के बाद 0.02 हेक्टर क्षेत्र से 800 से 1000 कि.ग्रा. जिमीकंद की औसत उपज प्राप्त की। किसानों ने प्रति किलोग्राम जिमीकंद के लिए 30-40 रुपए की बाजार दर के मध्येनज़र नारियल प्रणाली से अतिरिक्त आय के रूप में 0.02 हे. से लगभग 24000 - 30000 रुपए अर्जित किए। अतः अंडमान व निकोबार द्वीपसमूह में बारानी तथा जैविक उत्पादन के तहत जिमीकंद उच्च पैदावार एवं अधिक आय सहित



श्री के.एन.माडप्पा शेट्टी, चालक ग्रेड 1, राज्य केंद्र, विजयवाडा 30 नवंबर 2022 को अधिवर्षिता प्राप्ति पर नारियल विकास बोर्ड की सेवाओं से सेवानिवृत्त हुए। उन्होंने लगभग 34 वर्ष बोर्ड में सेवा की।



श्री भुवन कुमार विश्वकर्मा, एमटीएस, प्रबोड फार्म, कोंडागांव 30 नवंबर 2022 को अधिवर्षिता प्राप्ति पर नारियल विकास बोर्ड की सेवाओं से सेवानिवृत्त हुए। उन्होंने लगभग 34 वर्ष बोर्ड में सेवा की।

श्रीमती लक्ष्मीदेवी एम.पी., प्रशासनिक अधिकारी, मुख्यालय, कोची 31 दिसंबर 2022 को अधिवर्षिता प्राप्ति पर नारियल विकास बोर्ड की सेवाओं से सेवानिवृत्त हुई। उन्होंने लगभग 34 वर्ष बोर्ड में सेवा की।



नारियल बागान के लिए उपयुक्त अंतरफसल है। नारियल बागानों में गजेंद्र, श्री पद्मा जैसी उन्नत किस्मों का उपयोग करके और अन्य उपयुक्त अंतरफसलों जैसे दालचीनी, लौंग, जायफल और काली मिर्च के साथ वैज्ञानिक खेती अपनाकर अंडमान व निकोबार द्वीपसमूह में नारियल आधारित फसल प्रणाली को किफायती एवं लाभदायक बनाया जा सकता है। ■

नारियल का रोपण और देखभाल

नीनु एस. और रवि भट्ट

केंद्रीय रोपण फसल अनुसंधान संस्थान, कासरगोड

नारियल एक उष्णकटिबंधीय फसल है और इसलिए गर्म जलवायु में अच्छी तरह बढ़ता है नारियल भूमध्यरेखा के 23 डिग्री अक्षांश (20 डिग्री उत्तर और 20 डिग्री दक्षिण अक्षांश के बीच) में और औसत समुद्र तल से 600 मीटर की ऊँचाई तक अच्छी तरह से पनपता है। तापमान सबसे महत्वपूर्ण जलवायु घटक है जिसका बहुत बड़ा प्रभाव नारियल की वृद्धि और उत्पादकता पर पड़ता है। नारियल पेड़ प्रत्येक दिवस और रात के तापमान के बीच होने वाली कम उतार-चढ़ाव के लिए अच्छी तरह से अनुकूलित होते हैं, किंतु यदि तापमान में भारी उतार-चढ़ाव हो तो यह टिक नहीं पाता है। नारियल की बेहतर वृद्धि और उपज के लिए तापमान 20 डिग्री से 32 डिग्री सेल्शियस के बीच होना चाहिए और औसत वार्षिक तापमान 27 डिग्री सेल्शियस होना उचित होता है। जब औसत तापमान 21 डिग्री सेल्शियस से नीचे चला जाता है तो उपज कम हो जाती है। उसी तरह तापमान अधिक होने पर नव विकसित पुष्पक्रम सूख जाता है और विशेष रूप से साल के उन महीनों में उत्पादन कम हो जाता है।

नारियल पेड़ को प्रचुर मात्रा में सूर्यप्रकाश की आवश्यकता होती है और छाया में या बादल छायी हुई स्थिति में यह

तंदुरुस्ती से नहीं बढ़ता है, अतः भारी छाएदार पेड़ों के पास इनको नहीं लगाना चाहिए। बादल छा जाने पर वाष्पोत्सर्जन की दर कम हो जाती है। नारियल पेड़ तेज़ धूप पसंद करते हैं और पेड़ के स्वस्थ विकास के लिए वर्ष में लगभग 2000 घंटे की धूप की आवश्यकता होती है। नारियल बिलकुल रेतीली से चिकनी और मध्यम अम्लीय से क्षारीय मिट्टी तक विभिन्न प्रकार की मिट्टियों में उगाया जाता है। इनमें से लाल रेतीली दोमट, तटीय रेतीली, मखरैली और जलोढ़ मिट्टी अधिक उपयुक्त हैं। भारी मिट्टी जिनमें जल निकासी की सुविधा नहीं होती है, नारियल की खेती के लिए अनुपयुक्त हैं। भारी वर्षा वाले क्षेत्रों में अच्छी जलनिकासी वाली मिट्टी और कम वर्षा वाले क्षेत्रों में अच्छी जल धारण क्षमता वाली महीन मिट्टी पेड़ की बेहतर वृद्धि के लिए अधिक उपयुक्त होती है। 5-7 डिग्री दैनिक अंतर के साथ 27 डिग्री सेल्शियस आदर्श औसत तापमान होता है। नारियल की वृद्धि के लिए 1300-2300 मि.मी. की अच्छी तरह से वितरित वार्षिक वर्षा उपयुक्त होती है। अच्छी तरह फलदार नारियल पेड़ के लिए किसान को रोपण अवस्था से लेकर सावधान रहना होगा। यदि नारियल पौधों का रोपण सही तरह से नहीं किया गया हो तो



उन पर देरी से फल लगेंगे और पेड़ समय से पहले मर भी सकते हैं।

भूमि की तैयारी

नारियल रोपण के लिए भूमि की तैयारी स्थलाकृति और मिट्टी के प्रकार पर आधारित होनी चाहिए। यदि अधिक ढलवां भूमि है तो रोपण से पहले मिट्टी एवं जल संरक्षण की उपयुक्त विधि अपनायी जानी चाहिए। यदि भौम जल स्तर उच्च है तो मिट्टी का टीला बनाकर उस पर रोपण किया जा सकता है। भूमि की तैयारी में बेकार पेड़ों को काटना और उनकी लकड़ी तथा टुकड़ों को हटाना, निराई-गुड़ाई और कीट नियंत्रण उपाय अपनाना शामिल है। नारियल पौधे लगाने का सबसे बेहतरीन समय मानसून पूर्व बारिश की शुरुआत के साथ है। लेकिन अगर सिंचाई की उचित सुविधा हो तो गर्मी के महीनों में भी रोपण किया जा सकता है।

रोपण से पहले भूमि की तैयारी भूमि का ढलान, मिट्टी के प्रकार तथा अन्य पर्यावरणीय कारकों पर निर्भर करती है। क्षेत्र को साफ किया जाना चाहिए और समुचित स्थानों पर रोपण गड्ढों को चिह्नित करने की आवश्यकता है। यदि ढलवां भूमि है तो मृदा संरक्षण विधियों को अपनाना चाहिए। यदि भौमजल स्तर ऊँचा है तो मिट्टी के टीलों में रोपण किया जा सकता है। ढलवां जगहों में और ऊबड़-खाबड़ इलाकों में सीढ़ीनुमा रूप में या पुश्टों में भूमि की तैयारी करें। निचले इलाकों और धान के खेतों में जल स्तर से कम से कम 1 मी. की ऊँचाई तक टीले बनाएं। कायल/झील का उद्धार करके नव निर्मित क्षेत्रों में खेत के मेंड पर रोपण किया जा सकता है।

नर्सरी पालने के लिए अच्छी जल निकासी युक्त, खुरदरी मिट्टी का चयन करना चाहिए जहाँ सिंचाई की पानी की सुविधा हो। यदि जल निकासी की कोई समस्या नहीं है तो बीजफलों को समतल क्यारियों में बोया जा सकता है। जल जमाव की समस्या मौजूद होने के मामले में उठी हुई क्यारियों में बीजफल बोना चाहिए। नर्सरी कृत्रिम रूप से छाया देते हुए खुली परिस्थिति में या नारियल बाग में जहाँ पर्याप्त मात्रा में छाया प्रदान करने के लिए ऊँचे ताड़ हों, पाली जा सकती है। बीजफलों को मई-जून के दौरान 40 से.मी X 30 से.मी. की दूरी पर लंबी और संकरी क्यारियों में खड़ी या पड़ी स्थिति में 20-25 से.मी. गहरी खाइयों में बोया जाना चाहिए। खड़ी स्थिति

में रोपण की खासियत यह है कि पौधों को दूसरी जगह ले जाते समय कम क्षति पहुँचती है। दूसरी ओर, विलंबित रोपण के मामले में यदि बीजफल का पानी बहुत कम हुआ हो तो पड़ी स्थिति में रोपण करें। बेहतर अंकुरण के लिए बीजफलों की पड़ी स्थिति में बुवाई उचित होती है।

पौध का प्रतिरोपण मानसून मौसम की शुरुआत से की जा सकती है। पौध की आयु 8-10 महीने होनी चाहिए। आमतौर पर आठ महीने के पौधे से उनकी वृद्धि एवं विकास के बारे में अंदाजा लगा सकता है। जब पौधे बहुत छोटे होते हैं, तो ओज में उनके बीच जो अंतर होता है वह आसानी से समझ सकते हैं। पॉलीबैग पौधों के मामले में सबसे पहले प्रतिरोपण के दौरान पॉलीबैग को हटाना चाहिए। बीजफल का ऊपरी भाग जमीनी स्तर से 5-8 से.मी. नीचे होना चाहिए। गहरा रोपण करने से अंकुरण का बाहर आने में रुकावट पैदा होगी और सतही रोपण करने से भारी वर्षा या हवा के दिनों में पौधे झुक जाने की संभावना है। बारिश के पानी को रोक रखने के लिए शिखर के मूल भाग की तरफ थोड़ा सा झुकाव होना चाहिए।

रोपण की दूरी और रोपण ज्यामिती

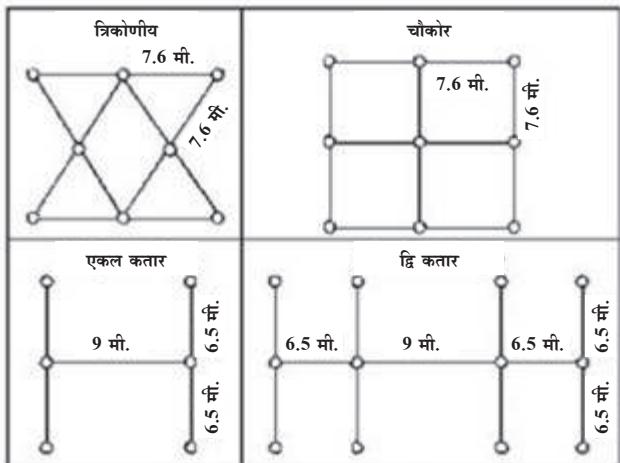
रोपण विधि

रोपण की दूरी फसल के प्रकार के अनुसार भिन्न होती है। ताड़ों को ऐसी दूरी में रोपित किया जाता है कि ज़मीन के समांतर पड़े हुए परिपक्व पत्तों के नोक एक दूसरे को छूने दिया जाए। बैने ताड़ों के लिए पौधों के बीच की दूरी लगभग 7-8 मी., संकर के लिए 8-8.5 मी. और लंबे ताड़ों के लिए 9-10 मी. होती है। यह इसलिए है कि लंबे ताड़ों के शिखर का आकार संकर और बौनी किस्मों की तुलना में लगभग 30 प्रतिशत बड़ा होता है। इसके अनुसार त्रिकोणीय प्रणाली में प्रति हेक्टर लगभग 115-236 ताड़ या चौकोर प्रणाली में प्रति हेक्टर लगभग 100-200 ताड़ लगाए जा सकते हैं। यदि समान दूरी पर रोपण किया जा रहा हो तो चौकोर प्रणाली की तुलना में त्रिकोणीय प्रणाली में 15 प्रतिशत अधिक पौधों को समायोजित किया जा सकता है। मार्गदर्शन के रूप में सारणी 1 में रोपण की विशिष्ट चौकोर एवं त्रिकोणीय प्रणाली के तहत पेड़ों के बीच की दूरी एवं सारणी 2 में पेड़ों की संख्या तथा रोपण सघनता को दर्शाया गया है।

सारणी 1

क्र.सं.	प्रणाली	पेड़ों के बीच की दूरी
1.	त्रिकोणीय	7.6 मी.
2.	चौकोर	7.6 मी. x 7.6 मी., 8 मी. x 8मी., 9 मी. x 9 मी.
3.	एकल कतार	कतारों में 6.5 मी. - कतारों के बीच 9 मी.
4	द्विं कतार	कतारों में 6.5 मी. x 6.5 मी.- दो कतारों के बीच 9 मी.

नारियल से बेहतर उपज प्राप्त करने के लिए बाग में पौधों की सघनता इस तरह से अनुकूलतम बनाए रखा जाना चाहिए कि वृद्धि के चरण के दौरान नारियल के पत्तों पर पर्याप्त रूप से सूर्यप्रकाश पड़े और बहुत अधिक समय तक छाया में रहने से बचें। चौकोर प्रणाली में नारियल के लिए 7.6 मी. X 7.6 मी. से 8.0 मी. X 8.0 मी. की दूरी सामान्य रूप से अनुशंसित है। इसमें प्रति हेक्टर क्रमशः 177 और 156 ताड़ होंगे। यदि त्रिकोणीय प्रणाली अपनाई जाती है तो 25 अतिरिक्त ताड़ों का रोपण किया जा सकता है। कतारों में 6.5 मी. और कतारों के बीच 9.0 मी. की दूरी देकर कतार (हेज) प्रणाली को भी अपनाया जा सकता है। नारियल बागों में बहुफसल या अंतरफसल की खेती के लिए पेड़ों के बीच 10 मी. X 10 मी. की दूरी छोड़ने की सलाह दी जाती है ताकि पेड़ों के बीच की जगह में कई बहुवर्षी और वार्षिक फसलों को खेती के लिए पर्याप्त अवसर उपलब्ध कराया जा सके।



नारियल के रोपण के तरीके

किए जाने चाहिए। उद्धारित भूमि में खेत की मेंड पर पौधों का रोपण किया जाना चाहिए। कम जल स्तर वाली दोमट मिट्टी के मामले में गड्ढे का आकार 1 मी. X 1 मी. X 1 मी. होना चाहिए। नीचे चट्टान वाली मखरैली मिट्टी के मामले में 1.2 मी. X 1.2 मी. X 1.2 मी. आकार के बड़े गड्ढे बनाएं। रेतीली मिट्टी वाले क्षेत्रों में गड्ढे का आकार 0.75 मी. X 0.75 मी. X 0.75 मी. से अधिक नहीं होना चाहिए। अच्छी जल निकास वाली मिट्टी के मामले में बारिश की शुरुआत के साथ पौधों को प्रतिरोपित किया जा सकता है। मानसून के समय निचले इलाकों में बाढ़ आने की स्थिति में मानसून के बाद पौधों के रोपण की सलाह दी जाती है।

गड्ढे बनाना और रोपण

नारियल के रोपण के लिए भूमि की तैयारी काफी हद तक मिट्टी के प्रकार और पर्यावरणीय घटकों पर निर्भर करती है। यदि भूमि समतल नहीं है और झाड़ियों से भरी हुई है तो झाड़ियों को साफ करना होगा और गड्ढे खोदने से पहले भूमि को समतल बनाना होगा। गड्ढों की गहराई मिट्टी के प्रकार पर निर्भर होती है। यदि नीचे चट्टान वाली मखरैली मिट्टी हो तो 1.5 मी. लंबाई X 1.5 मी. चौड़ाई X 1.2 मी. गहराई वाले गहरे और चौड़े गड्ढे खोदे जाएं और रोपण से पहले ढीली मिट्टी, चूर्णित गोबर और राख को 60 से.मी. की गहराई तक भरा जाय। ऐसी मिट्टी में मिट्टी को ढीला करने के लिए 2 कि.ग्रा. साधारण नमक मिलाने की सिफारिश की जाती है। कम जल स्तर वाली दोमट मिट्टी के मामले में

पेड़ों के बीच की दूरी	पेड़ों की संख्या(ताड़/हे.)	
	चौकोर विधि	त्रिकोणीय विधि
7.6 मी. x 7.6 मी.	177	198
8 मी. x 8 मी.	156	180
8.5 मी. x 8.5 मी.	138	160
9 मी. x 9 मी.	134	143
10 मी. x 10 मी.	100	115

ढलवां भूमि में और असमतल स्थलाकृति वाले क्षेत्रों में नारियल की खेती के लिए सीढ़ीनुमा रूप में या पुश्तों में भूमि तैयार करें। निचले इलाकों में या तलहटी में, रोपण स्थानों में जल स्तर से कम से कम 1 मी. की ऊँचाई पर टीले तैयार



1 मी. X 1 मी. X 1 मी. आकार के गड्ढे के 50 से.मी. की ऊँचाई तक ऊपरी मिट्टी भरने की सिफारिश की जाती है। गड्ढे के मध्य भाग में छोटे छेद बनाकर उसमें नारियल पौध का रोपण करें और पौध के चारों ओर की मिट्टी को कसकर दबाएं, लेकिन पौध का गरदनी क्षेत्र मिट्टी के नीचे नहीं होना चाहिए या पर्णकक्षों में मिट्टी जमना नहीं चाहिए। यदि जल स्तर उच्च है तो ज़मीन की सतह पर या टीले पर रोपण करने की आवश्यकता पड़ती है। ऐसी स्थिति में भी सतह या टीले पर रोपण करने के लिए गड्ढे खोदने या मिट्टी भरने का कार्य करना पड़ता है। गड्ढों को मिट्टी से भरने के मामले में ऊपरी मिट्टी का प्रयोग करना उपयुक्त होता है। गड्ढे को भरने से पहले गड्ढे के नीचे नारियल छिलके की कम से कम दो परत (भीतरी भाग ऊपर की ओर) रखी जा सकती है। यह नमी संरक्षण सुनिश्चित करेगा। तटीय रेतीली मिट्टी वाले क्षेत्रों में मिट्टी की भौतिक स्थिति सुधारने के लिए 0.15 घन मी. लाल मिट्टी के प्रयोग की सिफारिश की जाती है। जल भराव वाले क्षेत्रों में जल निकास नालियां बनाकर उचित जल निकासी सुनिश्चित करें।

मुख्य बाग में पौध जल्दी जड़ पकड़ने के लिए मानसून की शुरुआत के साथ पौध रोपण की सिफारिश की जाती है। मुख्य बाग में रोपण के पहले पाँच वर्षों के दौरान ताड़ों की तेज़ी से वृद्धि होती है। 3-4 वर्ष बढ़ने के बाद ही तने का हिस्सा दिखाई पड़ता है और इस अवधि के दौरान तने की लंबाई सालाना 30-50 से.मी. तक बढ़ेगी। अधिक आयु के ताड़ों में तने की लंबाई पौधों की तुलना में धीमी गति से बढ़ती है। बनस्पतिक वृद्धि के बाद छोटे पेड़ों पर फल लगने लगते हैं और फलों के उत्पादन में स्थिरता होने में 2-3 वर्ष लग जाते हैं।

छोटे ताड़ों का प्रबंधन

उच्च पैदावार प्राप्त करने के लिए छोटे ताड़ों की वृद्धि के प्रारंभिक वर्षों में अच्छी देखभाल की जानी चाहिए। खेत में रोपण के बाद पौधों को तेज़ हवा से बचाने के लिए टेक देनी चाहिए और तेज़ धूप से बचाने के लिए गूँथे नारियल पत्तों या अन्य किसी उपयुक्त छायादार सामग्री का उपयोग करके समुचित रूप से छाया प्रदान करना चाहिए। छोटे ताड़ों को पर्याप्त नमी की आवश्यकता होती है और साथ ही वे जल जमाव की स्थिति को सहन नहीं कर पाते हैं। अतः जल जमाव

की संभावना वाली भूमि में रोपण करने से बचना चाहिए। खेत में रोपे गए पौधों को गर्मी के महीनों में पर्याप्त सिंचाई दी जानी चाहिए। सभी प्रकार की मिट्टी में 4 दिन में एक बार 45 लीटर पानी से सिंचाई करना उपयुक्त पाया गया है। यदि ड्रिप सिंचाई कर रही है तो प्रति दिन 10 लीटर पानी देना चाहिए। पानी के जमाव की संभावना वाले क्षेत्रों में उचित जल निकासी प्रदान की जानी चाहिए। समय-समय पर गड्ढों की निराई-गुड़ाई करती रहनी चाहिए। भारी वर्षा के दौरान पौधों के गरदनी क्षेत्र पर जमी मिट्टी को हटा देना चाहिए। हर वर्ष खाद डालने से पहले गड्ढों को चौड़ा करना चाहिए। जैसे-जैसे पौधे बढ़ जाते हैं गड्ढों को धीरे-धीरे मिट्टी से भर देना चाहिए। चौथे वर्ष तक ताड़ के तने से 1.8 मी. की दूरी पर चारों ओर थाला तैयार किया जा सकता है। ताड़ से जुड़े कीट एवं रोग की नियमित निगरानी करनी चाहिए और आवश्यक सुधारात्मक उपाय समय पर किए जाने चाहिए।

अधोरोपण

ऐसे बागों में जहाँ ताड़ किसान के लिए अनुत्पादक एवं अलाभकर हो गए हैं अधोरोपण (पुराने पेड़ों को हटाने और नए पौधों के रोपण के लिए प्रयुक्त शब्द) किया जाता है। बहुत पुराने ताड़ों को 3 से 4 वर्षों की अवधि में चरणबद्ध तरीके से हटाया जाता है। सबसे पहले अधोरोपण किए जाने वाले क्षेत्र की सीमा निर्धारित किया जाता है। प्रारंभ में बहुत कम उपज देने वाले (प्रति वर्ष प्रति ताड़ 20 फल से कम) और अधोरोपण के लिए निर्धारित सीमा के बहुत करीब स्थित पेड़ों को हटाया जाना चाहिए। अधोरोपण करने के बाद दूसरे, तीसरे और चौथे वर्ष के दौरान प्रत्येक वर्ष एक तिहाई भाग के हिसाब से शेष ताड़ों को हटा दिया जाना चाहिए। यदि मौजूदा बागों में पौधों के बीच अनियमित दूरी है तो नए रोपित पौधों के 1 मी. घेरे के अंदर खड़े पुराने ताड़ों को अधोरोपण के पहले वर्ष में, 2 मी. दूरी के अंदर खड़े ताड़ों को दूसरे वर्ष में, 3 मी. दूरी के अंदर खड़े ताड़ों को तीसरे वर्ष में और शेष को चौथे वर्ष में हटा दिया जाना चाहिए।

खाद का प्रयोग

पौष्टिकतत्व की आवश्यकता

नारियल ताड़ की अच्छी बनस्पतिक वृद्धि, शीघ्र पुष्पण और यथासमय फलने तथा उच्च पैदावार के लिए रोपण के



ट्रिप सिंचाई

पहले वर्ष से नियमित रूप से खाद देना अनिवार्य है। नारियल बाग में हमेशा मिट्टी की जांच (3 वर्ष में एक बार) करने की सिफारिश की जाती है और इनके परिणामों के आधार पर रासायनिक उर्वरकों के प्रकार एवं दर निर्धारित की जा सकती है। मुख्य बाग में रोपण के तीन महीने बाद वयस्क ताड़ों के लिए अनुशंसित उर्वरक मात्रा के दसवाँ भाग की दर पर उर्वरक प्रयोग की सिफारिश की जाती है। यह दूसरे वर्ष में वयस्क ताड़ों के लिए अनुशंसित मात्रा का एक तिहाई भाग होगा और वर्षा की शुरुआत के साथ दो विभाजित खुराकों में इसका प्रयोग किया जाए। दूसरे वर्ष की खुराक की दोगुनी मात्रा तीसरे वर्ष में दी जाए जैसा कि सारणी 3 में दर्शाया गया है। चौथे वर्ष से वयस्क ताड़ों के लिए अनुशंसित मात्रा में उर्वरकों का प्रयोग किया जाए। भारत में सामान्य रूप से वयस्क ताड़ों के लिए प्रति वर्ष प्रति ताड़ अनुशंसित उर्वरक खुराक 500 ग्रा. नत्रजन (N), 320 ग्रा. फोस्फरस (P_2O_5) और 1200 ग्रा. पोटेशियम (K_2O) है। वयस्क ताड़ को पौष्टिकतत्वों की उपर्युक्त मात्रा प्रदान करने के लिए लगभग 1.1 कि.ग्रा. यूरिया, 1.5 कि.ग्रा. रॉक फोस्फेट (अम्लीय मिट्टी में) या 2 कि.ग्रा. सूपर फोस्फेट (अन्य मिट्टियों में) और 2 कि.ग्रा.

म्यूरेटऑफ पोटेश का उपयोग करना आवश्यक है। इसकी आपूर्ति 700 ग्रा. डाइ अमोनियम फोस्फेट (डीएपी), 815 ग्रा. यूरिया और 2 कि.ग्रा. म्यूरिएट ऑफ पोटेश से भी की जा सकती है।

उर्वरक प्रयोग का समय एवं विधि

रासायनिक उर्वरक का प्रयोग इस प्रकार किया जाता है कि मई-जून के दौरान गर्मियों की बौछार के बाद उर्वरकों के लिए सुझायी गई मात्रा का एक तिहाई हिस्सा ताड़ के थाले के 1.8 मीटर घेरे में फैलाकर अच्छी तरह से मिट्टी में मिलाया जाए। अगस्त-सितंबर के दौरान पेड़ के चारों ओर 20 से.मी. गहराई में 1.8 मी. घेरे के गोलाकार थाले तैयार करें और हरे पत्ते या कम्पोस्ट या घूरे की खाद प्रति ताड़ 50 कि.ग्राम की दर पर थाले में फैलाएं। उर्वरकों की अनुशंसित मात्रा के शेष दो तिहाई भाग हरे पत्ते या कम्पोस्ट के ऊपर डालकर ढक दें। जहाँ पर सिंचाई की सुविधा है, वहाँ खुराक अधिक संख्या में विभाजित करके देना उचित होता है। जहाँ तक संभव हो चार विभाजित खुराकों (मार्च, जून, सितंबर और दिसंबर) का सुझाव दिया जाता है।

अम्लीय मिट्टी तथा हल्की रेतीली मिट्टी में उपर्युक्त उर्वरक खुराकों के अलावा प्रति वर्ष प्रति ताड़ बारीकी से पिसा हुआ एक किलोग्राम डोलोमाइट या चूना पत्थर और 0.5 कि.ग्रा. मैग्नीशियम सल्फेट का प्रयोग करने की सिफारिश की जाती है। मानसून की शुरुआत से पहले नारियल थाले में डोलोमाइट/चूने को डालकर मिट्टी में अच्छी तरह मिलाएं। यह ध्यान रखना चाहिए कि अन्य रासायनिक उर्वरकों के साथ चूने की सामग्री का प्रयोग नहीं किया जाना चाहिए। लेकिन मैग्नीशियम सल्फेट अन्य उर्वरकों के साथ प्रयुक्त किया जा सकता है। मखरैली मिट्टी के मामले में सोडियम क्लोराइड

सारणी 3: नारियल के लिए अनुशंसित सामान्य उर्वरक (ग्राम/ताड़)

ताड़ की आयु	मई-जून/सितंबर-अक्तूबर			मई-जून/सितंबर-अक्तूबर		
	नत्रजन	P_2O_5	K_2O	नत्रजन	P_2O_5	K_2O
पहला वर्ष	मई-जून में रोपण			110	200	225
दूसरा वर्ष	110	200	225	240	400	450
तीसरा वर्ष	240	400	450	480	800	900
चौथे वर्ष से	370	600	670	715	1000	1330





हरी खाद फसल की खेती

के रूप में आपूर्ती की गई Na_2O से नारियल के K_2O की 50 प्रतिशत आवश्यकता पूरी की जा सकती है। मिट्टी की जाँच के परिणाम के आधार पर सूक्ष्म पौष्टिकतत्वों का विवेकपूर्ण उपयोग किया जा सकता है, विशेष रूप से कमी के लक्षणों की तीव्रता के आधार पर चार समतुल्य भागों में प्रति ताड़ 120 ग्राम बोरेक्स का प्रयोग करने की सिफारिश की जाती है।

ड्रिप फर्टिंगेशन

जहाँ भी ड्रिप सिंचाई उपलब्ध हो, छह बराबर विभाजित खुराकों में ड्रिप सिंचाई के साथ यूरिया, डाइ अमोर्णियम फोस्फेट, फोस्फॉरिक अम्ल (वाणिज्यिक ग्रेड) और म्यूरेट ऑफ पोटेश जैसे घुलनशील उर्वरकों का प्रयोग करना संभव है। फर्टिंगेशन के जरिए हरेक अनुप्रयोग में प्रति पेड़ 91 ग्राम यूरिया, 33 मि.ली. फोस्फॉरिक अम्ल और 170 ग्राम म्यूरेट ऑफ पोटेश देने की सलाह दी जाती है। यदि डाइ अमोर्णियम फोस्फेट दी जाती है तो प्रति ताड़ प्रत्येक खुराक के लिए 70 ग्रा. यूरिया, 60 ग्रा. डीएपी और 170 ग्रा म्यूरेट ऑफ पोटेश देना उचित होता है।

जैविक खाद

मिट्टी की गुणवत्ता और पौष्टिकतत्वों के पुनर्चक्रण में सुधार लाने के लिए नारियल ताड़ों को पर्याप्त मात्रा में जैविक खाद की आपूर्ति की जानी चाहिए। इसके अलावा, जैविक खाद मिट्टी की सूक्ष्मजीवीय क्रियाएं और पौष्टिकतत्वों का पुनर्चक्रण बेहतर करने में सहायता करती है। नारियल ताड़ों को कम्पोस्ट, धूरे की खाद, हरी पत्ती खाद या वर्मी कम्पोस्ट सहित जैविक खादों का प्रयोग किया जा सकता है। मुख्य बाग में रोपण के छह महीने बाद कम्पोस्ट या वर्मी कम्पोस्ट या धूरे की खाद के रूप में प्रति ताड़ 10 कि.ग्रा. जैविक खाद देने की सिफारिश की जाती है। दूसरे वर्ष में यह प्रति ताड़ 20 कि.ग्रा. तक बढ़ाया जा सकता है; तीसरे वर्ष में प्रति ताड़ 30 कि.ग्रा. और चौथे वर्ष के दौरान प्रयुक्त जैविक खाद की मात्रा 40 कि.ग्रा. तक बढ़ाया जाए। पाँचवें वर्ष से प्रति वर्ष प्रति ताड़ 50 कि.ग्रा. जैविक खाद के रूप में खुराक निर्धारित किया जाए। कयर गूदा कम्पोस्ट (ताज़ा गिरिपुष्प (ग्लैरिसिडिया) की पत्तियों/कोमल तना के साथ साथ कयर गूदा, कुकुट खाद

और चूना तथा रॉक फोस्फेट) का उपयोग समृद्ध जैविक खाद के रूप में किया जा सकता है। अगस्त-सितंबर के दौरान 1.8 मी. घेरे के तथा 20 से.मी. गहराई के गोलाकार थाले में जैविक खाद का प्रयोग किया जाता है। अनुशंसित मात्रा में जैविक खाद पूरे थाले में फैलाया जाए।

फसल अपशिष्ट पुनर्चक्रण

जैविक खाद मिट्टी के भौतिक, रासायनिक तथा जैविक गुणों को बढ़ाता है और अतः पौष्टिकतत्वों के उचित अवशोषण के लिए अच्छा जैविक आधार महत्वपूर्ण है। नारियल बाग से नारियल पत्ते, शूकीछद (स्पेथ), गुच्छ अपशिष्ट, फल के छिलके आदि जैसे जैवभार उपलब्ध होते हैं। बाग में अंतर या मिश्रित फसलों के रूप में उगाई जानी वाली अन्य वार्षिक और बहुवर्षी फसलों से प्राप्त जैवभार को भी नारियल अपशिष्टों के साथ पुनर्चक्रण किया जा सकता है। एकीकृत प्रणाली अपनायी गयी जगहों में, उस प्रणाली के ही पशु संघटक से पौष्टिकतत्व समृद्ध जैवभार प्राप्त होता है। इन प्राकृतिक जैविक सामग्रियों के अपघटन से पूरे वर्ष धीमी गति से पौष्टिकतत्व विमोचित होते रहते हैं।

सिंचाई प्रबंधन

जहाँ तक नारियल खेती का सवाल है, नमी फल के उत्पादन पर प्रभाव डालनेवाला सबसे महत्वपूर्ण कारक है। ऐसे क्षेत्रों में जहाँ लंबी अवधि तक शुष्क मौसम या अनियमित वर्षा या अल्प वर्षा की स्थिति प्रचलित हो, बेहतर उपज प्राप्त करने के लिए सिंचाई बहुत आवश्यक है। अतः गर्मियों के महीनों में 1.8 मी. घेरे तथा 10-20 से.मी. की गहराई में ताड़ों के थाले क्षेत्र में सिंचाई करें। जलवायु एवं मिट्टी के प्रकार के अनुसार ताड़ों के लिए पानी की आवश्यकता अलग होती है। नारियल में किशोर अवस्था के तुरंत बाद वृद्धि एवं प्रजनन चरण एक साथ होते हैं और इसलिए ताड़ों को अपने पूरे जीवन चक्र में हमेशा नमी की आवश्यकता होती है। नारियल पौधों के पानी की आवश्यकता प्रति वर्ष लगभग 1.591 और 1.533 मि.मी. थी जब सिंचाई क्रमशः 80-100 प्रतिशत और 60-100 प्रतिशत की जाती थी। युवा ताड़ों के मामले में प्रारंभिक तीन वर्षों तक पानी की आवश्यकता बहुत कम थी क्योंकि पत्तियाँ छोटी होती हैं। वयस्क ताड़ को 4-7 दिनों में

लगभग 600-800 लीटर पानी की आवश्यकता होती है। इस बात का ध्यान रखना चाहिए कि पौधों और युवा ताड़ों की सिंचाई समुद्री पानी से नहीं की जा रही है। अतः एक बार सिंचाई शुरू करने के बाद व्यवस्थित और नियमित सिंचाई का अनुसरण करने की सिफारिश की जाती है।

सिंचाई की विधियाँ

नारियल बागों में सिंचाई की सबसे साधारण विधि बाढ़ सिंचाई, थाला सिंचाई, स्प्रिंक्लर या पेर्फॉ-स्प्रे और ड्रिप सिंचाई है। बाढ़ सिंचाई करने से पानी की अत्यधिक बर्बादी होती है। इसके अलावा यह मिट्टी में खराब वायु संचारण का कारण बन जाता है, विशेष रूप से मटियारी मिट्टी में, जिसके फलस्वरूप जल जमाव की स्थिति उत्पन्न हो जाती है तथा यह मिट्टी में पैदा होने वाले रोगाणुओं के प्रसार का कारण बन सकता है। इससे गेनोडर्मा जैसी बीमारियाँ भी हो सकती हैं। अतः बाढ़ सिंचाई नारियल के लिए उपयुक्त सिंचाई विधि नहीं है और यदि संभव हो तो इसका प्रयोग न करें। थाला सिंचाई के मामले में सिंचाई नालों के ज़रिए पानी नारियल थालों तक पहुँचाया जाता है। दो कतारों के बीच मुख्य सिंचाई नाले बनाए जाते हैं और प्रत्येक थाले को जोड़ने के लिए उप नाले तैयार किए जाते हैं। इस प्रकार की सिंचाई से गहरा अंतःस्ववरण, रिसाव तथा वाष्पीकरण से पानी की थोड़ी-बहुत हानि होती है। लेकिन यदि थाले की सिंचाई होज़ पाइपों से की जाती है तो हानि कम होगी। होज़ पाइपों का उपयोग करके पानी ले जाने से पानी का नुकसान कम होने में मदद मिलती है।

निष्कर्ष

नारियल पेड़ों की सफलतापूर्वक खेती करने के लिए पौधों का उचित रोपण, पौष्टिकतत्व तथा सिंचाई प्रबंधन विधि आदि महत्वपूर्ण हैं। पौध उत्पादन के लिए फल के चयन से लेकर वयस्क ताड़ की स्थापना तक सारा कार्य अत्यंत महत्वपूर्ण है और अच्छी उपज देने वाले ताड़ों को प्राप्त करने के लिए प्रत्येक चरण में सावधानी बरतनी चाहिए। प्रबंधन विधियाँ काफी महत्वपूर्ण हैं और ताड़ की वृद्धि एवं उपज को बनाए रखने के लिए अनुदेशों के अनुसार अनुपालन सुनिश्चित किया जाना चाहिए। ■



पारंपरिक नारियल किस्में

निनिता नाथ.सी

असिस्टेंट प्रोफेसर, प्रादेशिक कृषि अनुसंधान केंद्र, पीलिकोट, केरल कृषि विश्वविद्यालय

आमुख

प्रादेशिक कृषि अनुसंधान केंद्र का लक्ष्य केरल के उत्तर में स्थित कासरगोड, कण्णूर, कोषिक्कोट एवं मलाप्पुरम ज़िलाओं में कृषि अनुसंधान सशक्त करना है और नारियल एवं नारियल आधारित खेती प्रणाली पर अनुसंधान के लिए मार्गदर्शक केंद्र के रूप में कार्य करना है। केरल कृषि विश्वविद्यालय का प्रादेशिक कृषि अनुसंधान केंद्र, पीलिकोट 1916 में स्थापित हुआ था तथा केंद्र ने शत वर्षों की सेवा पूरी की है जहाँ देशी और विदेशी किस्मों के अनूठे नारियल जननद्रव्यों का संरक्षण किया जा रहा है। इस केंद्र में विभिन्न खेड़ों में देशी किस्म के 56 नारियल जननद्रव्य और यहाँ पहले से अनुरक्षित विदेशी प्रजातियों सहित 50 पुराने जननद्रव्यों के साथ 106 नारियल जननद्रव्यों के अनूठे संग्रह का अनुरक्षण किया जा रहा है। इस अनुसंधान केंद्र ने अनुरक्षित जननद्रव्यों से केराश्री सहित विभिन्न नारियल किस्में विकसित की हैं। भविष्य में नई किस्मों का विकास करने हेतु मार्ग प्रशस्त करने के लिए देशी प्रजातियों की वंशगत संरचना का योगदान महत्वपूर्ण होता है। मूल्यवान आनुवंशिक सामग्रियों का परिरक्षण तथा भविष्य में नई किस्मों के विकास के लिए जननद्रव्यों का संरक्षण करना अत्यंत महत्वपूर्ण है क्योंकि ये जननद्रव्य रोग-कीट प्रतिरोधिता, सूखा सहनशीलता, उपज संभाव्यता, वर्धित उत्पादकता से जुड़े कई गुणधर्मों का भंडारगृह होते हैं। नारियल की उपज में सुधार लाने हेतु पारंपरिक पादप प्रजनन विधियों जैसेकि ताड़ की पहचान, चयन एवं संकरण को आवश्यक संशोधनों के साथ सफलतापूर्वक प्रयोग में लाया गया है। नारियल का संकर वीर्य पहली बार इस केंद्र में रिपोर्ट किया गया था। नीलेश्वरम कैपस में वर्ष 1936 के दौरान लंबी X बौनी (पश्चिम तटीय लंबी X चावक्काट हरी बौनी) प्रजाति विकसित की गई थी और यह पेड़ नीलेश्वरम कैपस में अब भी मौजूद है। बाद में फसल सुधार कार्यक्रम के अंतर्गत केंद्र ने आठ उच्च उपजाऊ नारियल किस्में विकसित कीं।

पौधे की प्रकृति

आकार या लंबाई के आधार पर नारियल के मुख्य वर्गीकरण निम्नानुसार हैं:

1. लंबे ताड़: इनको var.typica भी कहा जाता है। विश्वभर के सभी क्षेत्रों में आमतौर पर इसकी खेती घरेलू तथा वाणिज्यिक प्रयोजनों के लिए की जाती है। ये ताड़ 20-30 मीटर की ऊँचाई तक बढ़ते हैं। ये धीमी गति से बढ़ते हैं तथा रोपण के 6 से 10 वर्षों के बाद फूलते हैं। लंबे ताड़ दीर्घायु के होते हैं और इनका आर्थिक जीवनकाल 60 से 70 साल होता है। इनमें सामान्य रूप से परपरागण होता है अतः इन्हें विषमयुग्मज माना जाता है। देशी लंबी किस्मों में पश्चिम तटीय लंबी, कोमाडन, काप्पाडम, अंडमान साधारण, लक्षद्वीप साधारण, आयिरम कच्ची, बसंदा, बनावली, कुट्याटी आदि लोकप्रिय हैं तथा इन किस्मों के फल उत्पादन तथा खोपरा उपज अच्छे होते हैं।

2. बौने ताड़: इनको var.nana भी कहा जाता है। बौने ताड़ों को लंबी किस्मों से उत्परिवर्तित (स्पूटेंट) माना गया है। बौने ताड़ छोटे कद के होते हैं जो 5 से 7 मीटर की लंबाई तक बढ़ते हैं। ये शीघ्र याने रोपण के तीन वर्ष के बाद फलने लगते हैं। बौने ताड़ों का 30 से 40 वर्ष का कम उत्पादन काल होता है। सामान्य रूप से इनमें स्वपरागण होता है और अतः इसे समयुग्मज माना जाता है। बौने ताड़ों के फल हरे, पीले और नारंगी आदि तीन रंग के होते हैं। आमतौर पर बौने ताड़ों की खेती डाब तथा संकर उत्पादन के लिए की जाती है।

चावक्काट हरी बौनी, चावक्काट नारंगी बौनी तथा गंगाबोंदम तीन सर्वाधिक लोकप्रिय देशी बौनी प्रजातियाँ हैं।

प्रादेशिक कृषि अनुसंधान केंद्र, पीलिकोट में संरक्षित कुछ लोकप्रिय लंबे और बौने जननद्रव्यों के ब्यौरे नीचे दिए गए हैं:



पश्चिम तटीय लंबी

पश्चिम तटीय लंबी एक लोकप्रिय लंबी प्रजाति है जिसकी खेती भारत के पश्चिमी तट में की जाती है। अच्छी प्रबंधन परिस्थितियों के अधीन यह प्रजाति उच्च उत्पादकता प्रदान करती है। पश्चिम तटीय लंबी की खेती व्यापक रूप से की जाती है क्योंकि यह विभिन्न कृषिजलवायु परिस्थितियों एवं विविध प्रकार की मिट्टियों में उगाया जा सकता है। पुष्पक्रमों में नर चरण और मादा चरण प्रकट होते हैं। इस प्रजाति में परपरागण होता है। फलों के रंग हरे से लेकर हरित पीला और भूरे रंग की विभिन्न आभाओं में होते हैं। फल अंडाकार के या दीर्घाकार के होते हैं। अनुकूल परिस्थितियों में यह प्रजाति रोपण के 6 से 8 वर्षों के बाद उपज देने लगती है। खोपरा, नारियल तेल, कयर आदि के उत्पादन जैसे घरेलू प्रयोजनों के लिए यह प्रजाति उपयोगी होती है। इस प्रजाति से नारियल रस या ताड़ी अच्छी मात्रा में प्राप्त होती है जिसका उपयोग गुड़ या शक्कर बनाने के लिए किया जा सकता है।



पश्चिम तटीय लंबा ताड़ी



पश्चिम तटीय लंबी किस्म का फल

अच्छी गुणवत्ता के छिलके इससे प्राप्त होते हैं जिसका कयर और कयर उत्पादों के निर्माण के लिए व्यापक तौर पर उपयोग किया जाता है। यह प्रजाति सूखा सहनशील होती है। वार्षिक औसत उपज प्रति पेड़ 60 से 80 फल है। खोपरा संघटक प्रति फल 165 ग्राम है। टैपिंग एवं डाब उत्पादन के लिए यह प्रजाति उत्तम है। पश्चिम तटीय लंबी प्रजाति में रोग-कीट प्रतिरोधिता अधिक होती है।

काप्पाडम

केरल के तृश्शूर जिले में यह प्रजाति अधिकतम पाई जाती है। काप्पाडम प्रजाति के फल बड़ा और फल में छिलका कम होता है। इसके फल प्रायः हरे रंग के और गोलाकार,



काप्पाडम किस्म का ताड़ी



काप्पाडम किस्म का फल

दीर्घवृत्ताकार से अंडाकार के होते हैं और फलों का अग्र भाग नुकीला होता है। इस प्रजाति में मात्र परपरागण होता है क्योंकि नर फूल एवं मादा फूल कभी भी एक साथ परागण के लिए सक्षम नहीं हो जाते हैं। काप्पाडम प्रजाति में रोपण के बाद आठ से दस वर्षों की लंबी फलन पूर्व अवधि होती है। औसत वार्षिक उपज प्रति पेड़ 60 से 80 फल है। इस प्रजाति में खोपरा संघटक प्रति फल 285 ग्राम होता है।

कोमाडन

यह प्रजाति मध्य एवं उत्तर केरल में मुख्य रूप से पाई जाती है। कोमाडन आदतन नियमित रूप से फल देने वाली लंबी प्रजाति है और इसके फलों का रंग हरा होता है। कोमाडन प्रजाति में फलों का उत्पादन पश्चिम तटीय लंबी किस्म से अधिक होता है। वार्षिक औसत उपज प्रति पेड़ 120 फल है। इस प्रजाति में खोपरा संघटक प्रति फल 150 से 180 ग्राम होता है। इसका फल पाक प्रयोजनों, खोपरा बनाने एवं कयर उत्पादन के लिए अच्छा होता है। डाब पानी एवं ताड़ी के लिए यह प्रजाति अत्युत्तम है। इसके डाब से 300 मिली लीटर पानी प्राप्त होता है।



कोमाडन किस्म का ताड़ी



कोमाडन किस्म का फल

स्पाइकेटा

इस लंबी प्रजाति के नारियल में शाखाविहीन पुष्पक्रम होता है या कभीकभार एक या दो शूकिकाएं होती हैं। मादा फूलों की संख्या अधिक होती है। ताड़ी में मध्यम आकार के फल





स्पाइकेटा किस्म का फल



स्पाइकेटा किस्म का ताड़



अंडमान साधारण किस्म का ताड़



अंडमान साधारण किस्म का फल

भरे होते हैं। रोपण के पाँच से आठ वर्षों के बाद ताड़ फूलने लगते हैं। फल अंडाकार के होते हैं जिसका अग्रभाग चौंच समान दिखता है। फल पतले छिलके के साथ हरे या हरा सा पीले रंग के होते हैं। खोपरा बनाने और घरेलू उपयोग के लिए इस प्रजाति के फल उपयुक्त होते हैं। औसत उपज प्रति पेड़ 60 से 80 फल है। इस प्रजाति के फलों में खोपरा संघटक 180 ग्राम होता है।

लक्ष्मीप साधारण

यह लक्ष्मीप की अपनी लंबी प्रजाति है और इसके तथा पश्चिम तटीय लंबी प्रजाति के लगभग सारे गुणधर्म एक समान होते हैं। रोपण के 5 से 6 वर्षों के बाद ताड़ फूलने लगते हैं। यह प्रजाति सूखा सहनशील होती है। फल गोलाकार के होते हैं और पूरी तरह परिपक्व हो जाने पर इसका रंग नारंगी हरा हो जाता है। औसत वार्षिक उपज प्रति पेड़ 100 से 120 फल है। गुणवत्तायुक्त खोपरा बनाने के लिए इसकी सिफारिश की जाती है। यह प्रजाति घरेलू उपयोग, डाब पानी और ताड़ी बनाने के लिए अच्छी होती है। इसकी टैपिंग किए जाने पर पश्चिम तटीय लंबी किस्म से उत्पादित ताड़ी की अपेक्षा दुगुनी मात्रा में ताड़ी प्राप्त होती है। प्रति पेड़ खोपरा संघटक 160 ग्राम होता है तथा 300 मिली लीटर डाब पानी प्राप्त होती है जो कि बहुत ही मीठा होता है।

अंडमान साधारण

इस प्रजाति की खेती ज्यादातर अंडमान द्वीपसमूहों में की जाती है। ताड़ लंबे एवं बहुत आकार के होते हैं। यह प्रजाति सूखा सहनशील होती है जो बारानी एवं सिंचित परिस्थितियों के लिए उत्तम है। यह प्रजाति रोपण के 5 से 6 वर्षों के बाद फल देने लगती है। यह किस्म वानस्पतिक गुणधर्मों में पश्चिम तटीय लंबी प्रजाति की तुलना में तेज़ वृद्धि दिखाती है। इसके फल अंडाकार के होते हैं जो परिपक्व होने पर हल्के हरे रंग

के हो जाते हैं। वार्षिक औसत उपज प्रति पेड़ 80 फल है। खोपरा संघटक प्रति फल 173 ग्राम होता है। ताड़ से अधिक मात्रा में ताड़ी भी प्राप्त होती है। बारानी परिस्थिति में भी उच्च उपज एवं उच्च खोपरा संघटक प्राप्त होने के कारण यह अत्यंत लोकप्रिय है।

सैनरेमन

इस प्रजाति की खेती फिलीपीन्स में व्यापक तौर पर की जाती है। इससे काफी बड़े आकार के फल प्राप्त होते हैं तथा उच्च उपज प्राप्त होती है। इस प्रजाति में व्यापक विभिन्नताएँ विशेषकर फलों के आकार एवं रंग में पाई जाती हैं। परिपक्व होने पर फलों का रंग हरा होता है एवं आकार गोल होता है। इस प्रजाति की खास विशेषता है कि फल बड़े आकार के होते हैं जिससे प्रति फल औसतन 377 ग्राम खोपरा संघटक प्राप्त होता है तथा प्रति फल डाब पानी की मात्रा 612 मिली लीटर होती है। वार्षिक औसत उत्पादन प्रति पेड़ 80 से 100 फल होता है।



सैनरेमन किस्म का फल

चावक्काट नारंगी बौना

इस प्रजाति की खेती तृश्शूर जिले के चावक्काट क्षेत्र में व्यापक रूप में की जाती है और आम तौर पर गौरीगात्रम या चेंतेंगु नाम से जाना जाता है। यह शीघ्र फूलने वाली प्रजाति है जिसमें प्रारंभिक पुष्पण 3 से 4 वर्षों में ही होता है। ताड़ों के पर्णवृत्त, पुष्पक्रम तथा फल नारंगी रंग के होते हैं जो कि इसकी खास विशेषता है। इस किस्म में नर और मादा फूल एक साथ परागण के लिए सक्षम होते हुए पाए जाते हैं। ताड़ों में स्वपरागण एवं परपरागण पाया गया है अतः यह देखा गया है कि संततियों में से 80 प्रतिशत ठीक मातृवृक्ष की तरह ही होते हैं एवं शेष 20 प्रतिशत वैसे नहीं होते हैं। फल गोल एवं

● नारियल किस्में

मध्यम आकार के होते हैं। प्रति पेड़ वार्षिक औसत उपज 80 से 100 फल है तथा खोपरा संघटक 99 ग्राम होता है। इस प्रजाति में पुष्पक्रम में मादा फूल अधिक संख्या में पाए जाते हैं। इस प्रजाति का डाब पानी उच्च गुणवत्ता का होता है तथा डाब पानी की मात्रा 400 मिली लीटर होती है।

चावक्काट हरा बौना

चावक्काट हरा बौना भारत के लोकप्रिय बौनी किस्मों में से एक है और इसकी खेती तृशूर ज़िले के चावक्काट इलाके में व्यापक रूप से की जाती है। इस प्रजाति को सामान्य रूप से पतिनेट्टाम पट्टा कहा जाता है। यह रोपण के 3 से 4 वर्षों में फलने लगता है। गहरे हरे रंग के फल और पत्ते इस प्रजाति के खास लक्षण हैं। इस प्रजाति के अंडाकार के फलों का अग्रभाग शंकु आकार में होता है। नर एवं मादा फूल एक साथ परागण के लिए सक्षम हो जाते हैं तथा पुष्पमंजरी में मादा फूल अधिक पाए जाते हैं। यह अनियमित फलन प्रकृति का होता है। वार्षिक औसत उपज प्रति पेड़ 120 फल होती है तथा खोपरा संघटक प्रति फल 90 ग्राम होता है।

गंगाबोंदम

यह मध्यम लंबी किस्म का होता है जो शीघ्र फलन प्रकृति दर्शाता है। पत्ते एवं फलों का रंग गहरा हरा होता है और फल मध्यम एवं अंडाकार के होते हैं। संकर बीजपौधों के उत्पादन के लिए कई संकरण कार्यक्रमों में इस प्रजाति का व्यापक उपयोग किया जाता है। यह शीघ्र ही फलता है तथा रोपण के

4 से 5 वर्षों में फूलने लगता है। औसत वार्षिक उपज प्रति पेड़ 80 फल है और खोपरा संघटक प्रति फल 148 ग्राम होता है। यह प्रजाति उच्च मात्रा में अच्छी गुणवत्ता का खोपरा उत्पादित करती है।

निष्कर्ष

केरल में नारियल के खेतीगत क्षेत्र एवं उत्पादन के रुख विश्लेषण संबंधी अध्ययन से यह स्पष्ट रूप से दर्शित होता है कि राज्य में नारियल के सुहावने दिन धीरे धीरे खत्म हो रहे हैं। नारियल की उत्पादकता एवं आय बढ़ाने के लिए हस्तक्षेप करने की आवश्यकता है क्योंकि केरल के निवासियों के सामाजिक-आर्थिक एवं सांस्कृतिक जीवन से नारियल का अटूट संबंध है। उत्पादकता सुधार अनुसंधान का प्राथमिक ध्यान देने योग्य क्षेत्र रहा है जिसके फलस्वरूप कई देशों में उच्च पैदावार देने वाली प्रजातियों एवं संकरण कार्यक्रमों का विकास हुआ है। इसके अतिरिक्त, नारियल खेती को सुधारने हेतु अनुसंधान को और अधिक सशक्त करने की एवं नारियल पेड़ों का संरक्षण करने की आवश्यकता है जिसके फलस्वरूप आय में वृद्धि लाकर किसानों को लाभान्वित बनाया जा सकता है। अतः दोषकालिक फसल सुधार के लिए प्रजनक के सामने खड़ी चुनौतियों पर काबू पाने और स्थानीय प्रजातियों के व्यापक आनुवंशिक आधार की उपलब्धता खो देने का खतरा कम करने हेतु देशी एवं विदेशी जननद्रव्यों का संग्रहण, विशिष्टीकरण, संरक्षण तथा पुनरुज्जीवन आवश्यक बन जाता है। ■

भारतीय नारियल पत्रिका की एजेंसी संबंधी शर्तें

1. भारतीय नारियल पत्रिका का वार्षिक शुल्क 40 रुपए और आजीवन शुल्क 1000 रुपए है।
2. एजेंसी के लिए ऐसे व्यक्ति हकदार होंगे जो कम से कम 10 ग्राहकों को दर्ज करते हों।
3. एजेंटों को 25 प्रतिशत कमीशन दिया जाएगा।
4. ग्राहकों को दर्ज करने के बाद कमीशन काटकर बाकी रकम अध्यक्ष, नारियल विकास बोर्ड, केरा भवन, कोची-682011 के पक्ष में मनी आर्डर/डिमांड ड्राफ्ट (एरणाकुलम में देय) द्वारा भेजें। मनी आर्डर का कमीशन एजेंट को चुकाना होगा।
5. रकम के साथ साथ ग्राहकों के नाम व पता भी स्पष्ट रूप से लिखकर भेजें। रकम प्राप्त होते ही पत्रिका प्रत्येक ग्राहक को डाक द्वारा भेजी जाएगी।
6. हमारे कार्यालय में दर्ज ग्राहकों के नाम व पता एवं पत्रिका भेजने की तारीख से एजेंट को अवगत कराया जाएगा।
7. अध्यक्ष, नारियल विकास बोर्ड, केरा भवन, कोची-11 के पते पर संपर्क करें तो एजेंसी का आवेदन प्रपत्र मिल जाएगा।



किसान उत्पादक संगठन

संभावनाएं और चुनौतियाँ

दीप्ति नाथर एस.

उप निदेशक, नारियल विकास बोर्ड, कोची-11



आमुख

भारत सरकार की ओर से किसानों को, विशेषकर लघु और सीमांत किसानों को सशक्त बनाने का संगठित प्रयास किए जा रहे हैं ताकि किफायती आय प्राप्त करने के लिए उन्हें सुसज्जित बनाया जा सके। विगत पाँच वर्षों के दौरान किसानों की आय दुगुनी करने, 10,000 किसान उत्पादक संगठन गठित करने आदि लक्ष्य हासिल करने हेतु विविध किसान हितैषी योजनाएं पेश की गयी हैं। लघु और सीमांत किसानों को एकजुट कराने और एकत्रीकरण करने, प्राथमिक प्रसंस्करण सुगम बनाने, तुड़ाई उपरांत प्रबंधन करने और प्रभावी तरीके से मूल्यवर्धन करने के लिए प्रयास किए जा रहे हैं ताकि उपभोक्ता से जो रुपए प्राप्त होते हैं उसका बड़ा हिस्सा किसानों को ही मिल जाए। प्रबंधकीय और वित्तीय क्षेत्र में अनुभव प्राप्त संस्थानों के ज़रिए दोनों स्तर पर किसान उत्पादक संगठनों को समर्थन दिया जाता है ताकि उत्पादन क्षेत्र में व्यवहार्य किसान संगठन स्थापित किया जा सके। किसानों को अच्छी-खासी, स्थायी और किफायती आय प्राप्त होने से उनके लिए आजीविका सुरक्षा ही नहीं प्राप्त होती है बल्कि उनका जीवन स्तर भी सुधर जाता है, ग्रामीण रोजगार सृजित होती है तद्वारा

सामाजिक सुरक्षा में भी योगदान मिलता है। इस प्रकार इस दिशा में किए जा रहे प्रयास इस समुदाय को समग्र रूप से कई गुना प्रभावित करता है और वैश्विक स्तर पर लक्षित सुस्थिर विकास का लक्ष्य हासिल करने में योगदान देता है।

नारियल क्षेत्र में किसान समूह

बोर्ड द्वारा 2009-10 से लेकर त्रिस्तरीय तरीके से नारियल क्षेत्र में किसान समूहों का गठन किया जा रहा है। नारियल विकास बोर्ड नारियल की खेती और उद्योग के एकीकृत विकास हेतु 1981 से लेकर विविध योजनाएं कार्यान्वित करता आ रहा है। इसमें नारियल बागों के वैज्ञानिक प्रबंधन के ज़रिए नारियल का उत्पादन और उत्पादकता बढ़ाना लक्षित करने वाली योजनाएं शामिल हैं जैसे क्षेत्र विस्तार कार्यक्रम, उत्पादकता सुधार हेतु एकीकृत खेती, पुनर्रोपण और पुनरुज्जीवन, न्यूक्लियर नारियल बीज बाग की स्थापना, गुणवत्तापूर्ण रोपण सामग्रियों के उत्पादन हेतु लघु नारियल नर्सरीयों की स्थापना आदि। बोर्ड की फ्लैगशिप योजना नारियल प्रौद्योगिकी मिशन द्वारा कीटों और रोगों के प्रबंधन तथा प्रसंस्करण और उत्पाद विविधीकरण दोनों के लिए प्रौद्योगिकियों का विकास, प्रौद्योगिकियों का निर्दर्शन और प्रौद्योगिकियों का अभिग्रहण सुगम बनाया है और इसके लिए समर्थन दिया जा रहा है। देश में नारियल क्षेत्र के एकीकृत विकास को लक्षित करते हुए विभिन्न प्रकार की विविधीकृत योजनाओं के ज़रिए नारियल का खेतीगत क्षेत्र बढ़ाने और नारियल का उत्पादन एवं उत्पादकता सुधारने में बोर्ड का मयाब हुआ है और हमारा देश नारियल उत्पादन में विश्व का अग्रणी देश बन गया है।

संगठित प्रयास करने के बावजूद भी, इस क्षेत्र में एक के बाद एक करके समस्याएं आती रहीं। मुख्य समस्या प्रतिकूल पर्यावरणीय परिस्थितियाँ थीं जिनके कारण टिकाऊ उत्पादन



और उत्पादकता पर बुरा असर पड़ा। कीटों और रोगों के प्रकोप के कारण भी यह क्षेत्र प्रभावित हुआ और इसकी तीव्रता कृषि जलवायु परिस्थितियों, मुख्यतः बारिश, तापमान आद्रता में बदलाव के अनुसार परिवर्तित होती रही। जलवायु में परिवर्तन के कारण चक्रवात, तूफान, भारी वर्षा, सूखा आदि होने से भी इस क्षेत्र को काफी गहरा सदमा पहुँचा है क्यों कि नारियल ऐसी फसल है जिसकी खेती अधिकांशतः तटीय क्षेत्रों में की जाती है हालाँकि आजकल इसकी खेती गैर परंपरागत इलाकों में भी की जाती है। आक्रामक कीटों ने कुदरती शत्रुओं और प्राकृतिक प्रबंधन परिस्थितियों के अभाव के कारण तबाही मचा दी है। आर्थिक पहलुओं की दृष्टि से देखा जाए तो देशीय और निर्यात बाजारों में भाव में अस्थिरता, प्राप्त मूल्य में कमी, वर्धित खर्च, विपणनयोग्य उत्पादों की कमी, प्रतिस्पर्धी खाद्य तेल आदि के कारण नारियल खेती से प्राप्त पारिश्रमिक में घटाव हुआ है। इस क्षेत्र के सुस्थिर विकास में बाधा डालने वाला मुख्य घटक लघु और सीमांत किसानों की अधिकता थी। राष्ट्रीय स्तर के कमांडिटी बोर्ड होने के नाते बुनियादी स्तर के किसानों तक पहुँचने में अड़चनें आती थीं। लक्ष्यों को प्राप्त करने और प्रत्याशित परिणामों तक पहुँचने में सफलता के साथ योजनाओं का बेहतर तरीके से कार्यान्वयन सुसाध्य करने में एक सामूहिक दृष्टिकोण की आवश्यकता महसूस हुई। इस परिस्थिति में किसानों को एक छत के नीचे लाना आवश्यक बन गया और बोर्ड ने इस क्षेत्र की उन्नति हेतु कार्य करना शुरू किया।

किसान समूह-प्रारंभ

विकासात्मक योजनाओं के कार्यान्वयन हेतु प्रभावी उपाय के रूप में बिखरे हुए लघु और सीमांत नारियल किसानों के सामूहिकीकरण के ज़रिए नारियल क्षेत्र में किसान समूहों का गठन शुरू किया गया। 2005-06 में क्लस्टर कार्यक्रम की शुरुआत के साथ छोटे पैमाने पर किसानों का समूहन शुरू किया गया था। इसका लक्ष्य यह था कि किसान क्लस्टरों के ज़रिए संकेंद्रित क्षेत्र दृष्टिकोण के साथ विकासात्मक योजनाएं कार्यान्वित करें। हरेक क्लस्टर को कम से कम लगभग 25 हेक्टर क्षेत्र के साथ गठित किया गया और इन क्लस्टरों के ज़रिए उत्पाद और उत्पादकता बढ़ाने हेतु योजनाओं का कार्यान्वयन किया गया। इसके फलस्वरूप नारियल बागों का वैज्ञानिक प्रबंधन, कीटों एवं रोगों का सामूहिक आधार पर प्रबंधन, एकजुट होकर आदान सामग्रियों की खरीद और इसका प्रयोग आदि में सामूहिक दृष्टिकोण सृजित हुआ जिसके फलस्वरूप लघु और सीमांत किसानों का खर्च कम होने लगा। योजना का प्रभाव भी कई गुना अधिक था और क्लस्टर आधारित कार्यान्वयन जारी रखा गया।

2009-10 के दौरान, बोर्ड को महसूस हुआ कि इन क्लस्टरों में विधिक संगठन के रूप में परिवर्तित किए जाने की क्षमता है जो नाविबो योजनाओं के लिए ही नहीं बल्कि देश के दूसरे विकासात्मक संस्थानों/प्रभागों की योजनाओं के कार्यान्वयन हेतु विशेष कार्य साधन के रूप में भूमिका निभा सकते हैं। इसी उद्देश्य के साथ बोर्ड द्वारा मौजूदा क्लस्टरों

को नारियल उत्पादक समितियों के रूप में परिवर्तित करने और नई समितियाँ गठित करने का कार्य सुगम बनाया गया। नारियल उत्पादक समिति को चैरिटेबल समिति के रूप में रूपायित किया गया और इस समिति का सदस्य बनने के लिए किसानों के पास कम से कम 10 ताड़ होने की आवश्यकता थी। इस समझ के साथ यह निर्णय लिया गया था कि नारियल उत्पादक समितियों में सामूहिक रूप से कार्य करने के लिए मात्र वे किसान शामिल हो जाएं जिनके पास कम से कम बिक्री करने के लिए नारियल बचता हो। लगभग 4000-6000 ताड़ों सहित 40-100 लघु और सीमांत किसानों को एकजुट कराकर नारियल उत्पादक समिति गठित की गई। नारियल उत्पादक समितियों का गठन 2011-12 से ज़ोर पकड़ लिया और केरल के सभी प्रमुख नारियल उत्पादक जिलों में इसप्रकार किसानों को एकजुट कराया गया। नारियल उत्पादक समितियों के कार्यात्मक क्षेत्र और गतिविधियों में नियमित बैठकें, परिचर्चाएं और गतिविधियों का नियोजन, सामूहिक रूप से कृषि आदान सामग्रियों की खरीद, सामूहिक खेती प्रक्रियाएं, सामूहिक तुड़ाई, उत्पादों का संचयन आदि शामिल हैं।

आगे 2012-13 के दौरान, जब नारियल और खोपरा का भाव गिर गया, नारियल उत्पादक समितियों का एक फेडरेशन गठित करने की संकल्पना पर विचार किया गया जिसके फलस्वरूप नारियल उत्पादक फेडरेशनों का गठन शुरू हुआ। नारियल उत्पादक फेडरेशन को भी लगभग 10-20 नारियल उत्पादक समितियों और तकरीबन एक लाख ताड़ों के साथ चैरिटेबल समिति के रूप में रूपायित किया गया। मूल्य समर्थन योजना के तहत न्यूनतम समर्थन भाव पर खोपरे के प्रापण का लाभ किसानों तक पहुँचा कर उनका समर्थन देने में फेडरेशनों का गठन काफी सार्थक रहा। नारियल उत्पादक फेडरेशनों के कार्य क्षेत्र और गतिविधियों में गुणवत्तापूर्ण रोपण सामग्रियों का उत्पादन, प्राथमिक प्रसंस्करण और सामूहिक विपणन आदि शामिल हैं।

शीर्षस्थ संगठन के रूप में नारियल उत्पादक कंपनी की शुरुआत की गई। भारत सरकार के भारतीय कंपनी अधिनियम के अंतर्गत निजी लिमिटेड कंपनी के रूप में नारियल उत्पादक कंपनी को पंजीकृत किया गया। नारियल उत्पादक कंपनी के कार्य क्षेत्र और गतिविधियों में

प्रसंस्करण और मूल्यवर्धन, ब्रैंडिंग, विपणन और निर्यात शामिल हैं।

किसान समूहों का सकारात्मक प्रभाव और संभावनाएं

किसान समूहों का त्रिस्तरीय तरीके से संस्थानीकरण करने से इस क्षेत्र पर सकारात्मक प्रभाव पड़ा, किंतु उनको जिन समस्याओं का सामना करना पड़ा उनके कारण कभी कभी यह प्रभाव दिखाई पड़ने में बाधा पड़ गयी। नारियल किसानों का एकीकरण और एकत्रीकरण करने से एक मज़बूत संस्था विकसित हुई जिसके ज़रिए असली लाभभोगियों तक सरकारी योजनाएं पहुँचायी जा सकीं। किसान समूह सामुदायिक स्वामित्व आधारित था और वे ऐसे सारे कार्यक्रम कार्यान्वित कर सकते थे जो किसानों के लिए ही नहीं बल्कि समाज और पर्यावरण के लिए भी लाभकर हैं। वर्तमान कृषि परिस्थितियों में जलवायु परिवर्तन के कारण वैश्विक संकट उत्पन्न हुआ है, जिसमें हौसला बढ़ाने, प्राकृतिक खेती को प्रोत्साहित करने की भारत सरकार की संकल्पना को बढ़ावा देने, खाद्य उत्पादन के सुस्थिर साधन की आवश्यकता को पूरा करने आदि क्षेत्रों में कृषि एक प्रमुख भूमिका निभा सकता है-ये सारी गतिविधियाँ किसान समूहों के ज़रिए कार्यक्षम और प्रभावी तरीके से कार्यान्वित करने की गुंजाइश है।

- नारियल की विकासात्मक योजनाएं कार्यान्वित करने में किसान समूह बेहतरीन साधन साबित हुआ है। इससे बुनियादी स्तर के लघु किसानों तक बहुत कम समय में ही योजनाओं का लाभ पहुँचना सुनिश्चित होता है। बोर्ड योजनाओं का कार्यान्वयन करने में सक्षम रहा और 4-5 सालों की कम अवधि में ही उत्पादन एवं उत्पादकता में वृद्धि, प्रसंस्करण और उत्पाद विविधीकरण और विपणन पर खास तौर पर ध्यान केंद्रित करते हुए नारियल किसानों को 200 करोड़ रुपए का समर्थन दे पाया।

- क्षेत्र विस्तार कार्यक्रमों का कार्यान्वयन, टिकाऊ उत्पादन देने में सक्षम अच्छी कृषि पद्धतियाँ, मातृ ताड़ों की पहचान, गुणवत्तापूर्ण बीजफल, संकरण कार्यक्रम, जैविक उत्पादन और प्रमाणन, लागत में कटौती, वर्धित आय, खुदरे आउटलेट, नारियल क्षेत्र के सभी हितधारकों की आजीविका सुरक्षा और सामाजिक सुरक्षा आदि मामला चाहे कुछ भी हो, संसाधनों के टिकाऊ उपयोग को बढ़ावा देने

● किसान उत्पादक संगठन

के साधन के रूप में किसान समूहों को विकसित किया जा सकता है।

● प्रौद्योगिकी अंतरण, विस्तार कार्यक्रम, निर्दर्शन, खेती, प्रसंस्करण, नारियल आधारित सुविधाजनक खाद्य पदार्थ आदि पर क्षमता संवर्धन कार्यक्रम और प्रशिक्षण में किसान समूह प्रभावी उपाय बन सकता है।

● योजना के कार्यान्वयन हेतु विशेष उद्देश्य साधन के रूप में किसान समूहों को पहचाना गया है। स्थानीय स्वशासन संस्थानों द्वारा न्यूनतम समर्थन भाव पर खोपरे के प्रापण हेतु राज्य स्तरीय प्रापण एजेंसी के रूप में नारियल उत्पादक फेडरेशनों को पहचाना गया था।

● केरल में कृषि विभाग द्वारा हरे नारियल का प्रापण अधिकतर किसान समूहों के ज़रिए किया जाता है। खोपरा बनाने का प्राथमिक प्रसंस्करण भी ये समूहों द्वारा चलाया जाता है।

● केंद्रीय रोपण फसल अनुसंधान संस्थान जैसे अनुसंधान संगठनों ने विकेंद्रीकृत नर्सरी कार्यक्रम, मातृ ताड़ चयन आदि किसान समूहों के ज़रिए कार्यान्वयन किए हैं।

● राज्य प्रशासन द्वारा किसान समूहों के ज़रिए नारियल पौधों की आपूर्ति का भी समन्वयन किया गया है।

● इन किसान समूहों के ज़रिए कर्यफेड को नारियल छिलका जैसे उपोत्पादों की आपूर्ति भी की गयी है।

● किसान समूहों के ज़रिए प्रसंस्करण और मूल्यवर्धन कार्य किया जा रहा है। 34 खोपरा ड्रायर इकाइयों, 11 नीरा प्रसंस्करण इकाइयों, 7 नारियल तेल उत्पादन इकाइयों, एक विर्जिन नारियल तेल इकाई, एक डेसिकेटड नारियल इकाई, एक नारियल पानी इकाई और एक फ्लेवर्ड नारियल ज्यूस इकाई के लिए अवसंरचना की स्थापना की गई।

● किसान समूहों द्वारा छोटे पैमाने पर प्रसंस्करण, स्वयं सहायता समूहों के ज़रिए महिला उद्यमिता, किसानों द्वारा संचयन और सामूहिक विपणन, प्रक्षेत्र स्तर पर तुड़ाई उपरांत प्रबंधन और प्राथमिक प्रसंस्करण के लिए श्रेणीकरण के ज़रिए लागत प्रबंधन सुगम बना पाया।

● उद्यमिता विकास हेतु प्रशिक्षण, प्रसंस्करण हेतु कुशल श्रमिकों का विकास, नारियल उत्पादों के लिए परीक्षण सुविधा, दूसरी सरकारी एजेंसियों से तकनीकी और वित्तीय सहायता का

लाभ उठाने और गुणवत्ता प्रमाणन के ज़रिए गुणवत्ता प्रबंधन सुसाध्य बना पाया।

● किसान समूहों के ज़रिए फसल बीमा लागू करते हुए जोखिम से बचाव का आश्वासन दे पाया।

किसान समूहों के ज़रिए जो गतिविधियाँ चलायी जा सकती हैं उनकी सूची अनंत है, किंतु इन गतिविधियों का समवाय और अनुसंधान संस्थानों से लेकर विकासात्मक संगठनों, स्थानीय स्वशासन संस्थानों, अन्य संगठनों (सरकारी और गैर सरकारी दोनों) सहित कृषि क्षेत्र की प्रगति के लिए कार्यरत विविध संस्थानों का सहयोग इनके सफल कार्यान्वयन के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है।

किसान समूहों द्वारा सामना की जा रही चुनौतियाँ

किसान उत्पादक संगठनों का गठन ही कड़ी मेहनत का काम है, किंतु एक बार गठित हो जाने पर किसान समूह अपनी पूरी सफर में कई प्रकार की चुनौतियों का सामना करते हैं। इन चुनौतियों से निपटकर किसान समूह भविष्य की अपनी सफर में हौसला बुलंद करते हैं। वैसे ही वे समस्याओं में उलझकर लड़खड़ाते रहें तो निराश हो जाने की भी बराबर संभावना रहती है। सदस्यों का मानना है कि एक बार गतिविधियाँ शुरू की जाने पर समस्याएं सुलझने लगती हैं। लेकिन समस्याएं दिन ब दिन उत्पन्न होती रहती हैं। रुकावटें जो आ जाती हैं वे संगठनात्मक भी हो सकती हैं और वित्तीय भी और ये गठन पूर्व चरण में या गठन के उपरांत चरण में उत्पन्न हो सकती हैं। अक्सर किसान उत्पादक संगठनों का गठन हो जाते समय आनेवाली चुनौतियाँ विकास के हरेक और सभी चरणों में संगठन का पीछा की जाने की संभावना है, जिन पर कई बार कोई चर्चा नहीं की जाती हैं और उन्हें नज़रअंदाज़ किया जाता है। इससे किसान नेताओं के बीच दुविधा की स्थिति उत्पन्न होती है जब एक के बाद एक करके प्रतिबंध उत्पन्न हो जाते हैं। किसान समूहों द्वारा गठन पूर्व चरण में और गठन के उपरांत जिन चुनौतियों का सामना किया जाता है वे अलग अलग होती हैं। वे कभी संगठनात्मक समस्याएं होती हैं तो कभी वित्तीय समस्याएं होती हैं।

गठन-पूर्व चरण: संगठनात्मक समस्याएं

● गठन-पूर्व चरण के दौरान किसानों का एकीकरण बहुत बड़ी बाधा होती है। किसानों को किसान समूह की संभावनाओं



के बारे में समझा देना और उन्हें एकजुट कराना बड़े परिश्रम का कार्य होता है।

- नेताओं की कमी - यह अत्यंत अनिवार्य होता है कि नारियल किसानों के बीच से ही नेता मिलें जो स्थानीय किसानों को एकजुट कराने में समर्थ हो। अक्सर युवा लोग अपने आप नेता की भूमिका निभाने में विरले ही राजी होते हैं।

- विविध प्रकार की अधिरुचियों के साथ ग्रूप में विविधता-ग्रूप में सांस्कृतिक, सामाजिक, राजनीतिक, धार्मिक भिन्नताएं होती हैं जो किसान समूहों के गठन पर और इसकी सारी गतिविधियों में निस्संदेह प्रभाव डालेगा।

- संकल्प का अभाव: प्रतिष्ठित प्रबंधन संस्थानों के समर्थन के साथ किसान समूहों के कार्यकारी समिति सदस्यों/निदेशक मंडल सदस्यों के लिए प्रबंधकीय प्रशिक्षण और क्षमता निर्माण कार्यक्रमों की लंबी श्रुंखला सुसाध्य करने के बावजूद भी किसान समूहों के लिए एक संकल्प रूपायित करने में समय लगता है। समय के चलते जो संकल्प सदस्यों के मन में अच्छी तरह बैठ जाता है उसी में स्पष्टता होती है। अक्सर सदस्यों में संकल्प का अहसास होने के पहले ही किसान समूहों के गठन में प्रत्याशित गति बनाए रखने के लिए गतिविधियाँ त्वरित गति से चलायी जाती हैं। संस्थान की सुस्थिरता पर इसका प्रभाव पड़ता है।

- गठन पूर्व चरण में दैनंदिन आधार पर प्रबंधकीय समस्याएं लगातार होती रहती हैं। मामले की संवेदनशीलता को ध्यान में रखते हुए लोकतांत्रिक तरीके से इनसे निपटना चाहिए।

- सक्षम अग्रगामी एवं पिछड़ा एकीकरण विकसित करने एवं मज़बूत किसान संगठन स्थापित करने के बजाय सहायिकी मिलने के बारे में अधिक प्रतीक्षा रखी जाती है।



गठन-पूर्व चरण: वित्तीय मामले

- मुख्य अड़चन शेयर जुटाने में होती है। किसानों को भविष्य में प्राप्त होने वाले वास्तविक हितलाभों के बारे में, वह भी नारियल जैसी फसल के लिए जिसके भाव में अत्यधिक उतार-चढ़ाव होता है, विश्वास दिलाना बहुत ही कठिन है। शेयर जुटाते समय नेताओं को काफी अधिक बाधाओं का सामना करना पड़ता है।

- ऋण के स्रोतों में कमी: बहुत सारी ऋण सुविधाएं होने के बावजूद भी किसान समूहों को ऋण मिलने में कठिनाई महसूस होती है।

- ऋण सुविधाएं किसान उत्पादक संगठन हितौषी नहीं हैं: हालाँकि बहुत सारी योजनाएं प्रचलित हैं, वे कहाँ तक किसान समूह हितैषी हैं इन पर अध्ययन चलाना होगा। जब किसान उत्पादक कंपनियों को निजी लिमिटेड कंपनी के बराबर माना जाता है, उनके सामने की अड़चनें तिल से ताढ़ बनकर खड़ी हो जाती हैं।

- सहायिकी विमोचित करने में विलंब: सहायिकी में विलंब का मतलब है सहायिकी का इनकार। सहायिकी प्राप्त करने हेतु प्रक्रियाओं के भाग के रूप में इतने सारे कागजाती कार्य और कार्यालयीन औपचारिकताएं पूरा करने के बाद सहायिकी विमोचित होने में प्रायः विलंब लगता है। यह किसान समूहों के वित्तीय संतुलन को प्रभावित करता है और ब्याज दर एवं बकाया देय बढ़ जाने से उन्हें अधिक बोझ उठाना पड़ जाता है।

गठन के उपरांत चरण: संगठनात्मक समस्याएं

- एकजुट बने रहना: इन किसान समूहों का गठन अत्यधिक उम्मीदों और आस्था के साथ बेहतर भविष्य के लिए किया जाता है कि लागत कम हो जाए और आय में वृद्धि हो जाए। लेकिन सकारात्मक परिणाम धीरे धीरे होता है और रास्ता काफी दुर्गम होता है। इस दौरान विभिन्नता युक्त समूहों को एकजुट बनाकर रखना बहुत बड़ी चुनौती है, खासतौर पर नेताओं या कार्यालय पदधारियों के लिए।

- स्वामित्व का अभाव: समय के चलते किसान समूह की गतिविधियाँ चलाने का दायित्व मात्र कुछ नेताओं के सिर पर आ जाता है और इनके खिलाफ भी लोग खड़े होने लगते हैं जो हमेशा इनकी आलोचना करते हैं और अपनी राय प्रकट

● किसान उत्पादक संगठन

करते हैं। सकारात्मक आलोचना संगठन की वृद्धि में सहायक होती है लेकिन जब यह पूरी तरह नकारात्मक हो जाता है तो नेताओं का मनोबल टूट जाता है।

● समस्याओं में पारदर्शिता: किसान समूह में सारे निर्णयों और संव्यवहार में पारदर्शिता होनी चाहिए। अकेली एक घटना भी भरोसा और विश्वास तोड़ देता है और यह वापस पाना लगभग नामुम्किन बन जाता है।

● प्रबंधकीय मामले: प्रबंधन द्वारा किसान समूह के सारे सदस्यों के साथ एकसमान व्यवहार किया जाना चाहिए। प्रबंधन को निर्णय लेते समय बिना कोई क्षेत्रवार अभिरुचि प्रकट किए तटस्थ रहना चाहिए। किंतु इतनी अधिक विभिन्नता युक्त समूह के साथ ऐसी परिस्थितियाँ उत्पन्न होने के अवसर अधिक हैं और किसान समूह की आयु लोकतांत्रिक रूप से समस्याओं को प्रभावी तरीके से निपटने पर निर्भर रहती है।

● व्यावसायिक प्रबंधन में विशेषज्ञता की कमी: वाणिज्यिक गतिविधियाँ चलाने में विशेषज्ञता अनुभव के साथ प्राप्त होता है, वह भी बड़ी मुश्किल से। चाहे जितना भी प्रशिक्षण प्राप्त हो जाए अनुभव की जगह नहीं ले सकता है। वाणिज्यिक गतिविधियों के प्रबंधन में पेशेवरों को लगाने के लिए सरकारी योजनाएं सहायता प्रदान करती हैं। 2-3 सालों की छोटी अवधि के लिए ऐसी नियुक्ति में स्वामित्व का स्तर कम पाया जाता है, जो अंततः किसान संगठन पर बुरा प्रभाव डालता है।

● दूसरी कंपनियों के उत्पादों के साथ प्रतिस्पर्धा: प्रतिष्ठित बहुराष्ट्रीय कंपनियाँ और निजी कंपनियाँ समान उत्पादों का उत्पादन कर रही होंगी और किसान समूहों को उनसे प्रतिस्पर्धा करनी पड़ती है। जब ऐसी कंपनियाँ कच्ची सामग्रियाँ बहुत कम लागत पर खरीद लेती हैं, उसी समय किसान संगठन सदस्य किसानों को बेहतर आय सुनिश्चित करते हुए किफायती भाव पर खरीदते हैं। इस वजह से दूसरी प्रतिष्ठित कंपनियों से किसान समूह प्रतिस्पर्धा नहीं कर पाते हैं, जो ग्राहकों को काफी आकर्षक ऑफर देते हैं। इसके साथ साथ किसान उत्पादक संगठनों के बीच आपस में प्रतिस्पर्धा भी प्रचलित है और ये भी उन्हें अपाहिज बना देते हैं।

● आपूर्ति श्रुंखला का टूट जाना: महामारी के दौरान किसान समूहों को काफी कुछ झेलना पड़ा, इतने सालों के मेहनत से बनायी गई आपूर्ति श्रुंखलाएं टूट गयीं, विकसित बाजार की

पहुँच नष्ट हुई और प्रणालियाँ तहस-नहस हो गईं। प्रारंभ की गई वाणिज्यिक गतिविधियों से माल का निरंतर उत्पादन करते रहना विकसित आपूर्ति श्रुंखला बनाए रखने के लिए अत्यंत आवश्यक है। उदाहरण के लिए, किसान संगठन जो मासिक आधार पर 50 मेट्रिक टन नारियल तेल का प्रसंस्करण करता है, के सुनिश्चित खरीदार बनाए होंगे। यदि गतिविधियों में कोई ढिलाई की वजह से उत्पादन कम हो जाता है तो खरीदार नष्ट होने के साथ साथ किसान उत्पादक संगठन की प्रतिष्ठा को भी ठेस पहुँचता है।

● व्यापार गतिविधियों में निर्णय लेना: विभिन्नता युक्त ग्रूपों का समूह होने के नाते, निर्णय लेना अत्यंत नाजुक मामला होता है, क्योंकि इसमें स्वामित्व निकाय से भिन्न अधिक लोग शामिल हो जाते हैं।

गठन उपरांत चरण: वित्तीय समस्याएं

● कार्यशील पूँजी में कमी: यह सारे किसान संगठनों द्वारा सामना की जा रही मुख्य चुनौती है। प्रति दिन 10,000 नारियलों का प्रसंस्करण करने वाली एक किसान कंपनी को कच्ची सामग्रियों की खरीद हेतु किसानों को भुगतान करने के लिए प्रति दिन कम से कम 1.5 लाख रुपए की ज़रूरत होती है। यदि कंपनी हफ्ते में तीन दिवस कार्य कर रही हो तो मात्र सदस्य किसानों को भुगतान करने के लिए कार्यशील पूँजी के रूप में प्रति माह 20 लाख रुपए की आवश्यकता पड़ती है। एक किसान कंपनी होने के नाते वाजिब समय के अंदर ही किसानों को भुगतान करना पड़ता है। बिक्री गतिविधियों से जो आय प्राप्त होती है वह शायद बाद में मिलती है और किसान कंपनी को गतिविधियाँ निरंतर चलाते रहने के लिए कार्यशील पूँजी अपेक्षित होती है।

● परियोजना लागत में वृद्धि: किसान कंपनियाँ प्रायः अत्यंत सीमित बजट में कार्य करती हैं और वे अधिक खर्च करने के काबिल नहीं होते हैं। कई बार ऐसा होता है कि विभिन्न कारणों से परियोजना लागत बढ़ने की स्थिति उत्पन्न होती है, यहाँ तक कि प्रारंभ होने के पहले ही इनकी गतिविधियों पर इसका विपरीत प्रभाव पड़ता है।

● इक्विटी और सावधिक ऋण: अधिकतर किसान कंपनियों के मामले में इकट्ठे किए गए इक्विटी, लिए गए सावधिक ऋण, प्राप्त उद्यम पूँजी सहायता आदि सभी का



निवेश गतिविधियाँ चलाने के लिए चाहे वह प्रसंस्करण हो या विपणन हो या निर्यात, उसके लिए अपेक्षित अवसंरचना विकास हेतु किया जाता है। उन्हें हमेशा निधी की तंगी होती है जिसका प्रभाव निर्णयन पर पड़ता है।

- भाव की संवेदनशीलता: कच्ची सामग्री और अंतिम उत्पाद दोनों, पहले वाले की अस्थिरता और बाद वाले की प्रतिस्पर्धिता के कारण कंपनी के कार्यकलापों पर बहुत असर डालते हैं।

- ऋण का भुगतान विपणन की प्रमुख चुनौती है। जब वे अपने उत्पादों के लिए बाजार की पहचान, विकास और समेकन के लिए प्रयास करते हैं तो इन किसान समूहों को विक्रेता पंजीकरण से लेकर अंतिम ऋण भुगतान तक कुछ गुप्त व्यय भी उठाना पड़ जाता है। यहाँ तक कि बाजार में जागरूकता सृजित करने और बाजार की प्राप्ति हेतु नमूनों का वितरण भी किसान संगठनों के लिए बोझ बन जाता है।

- प्रबंधकीय व्यय: प्रायः किसान समूहों का गठन अत्यंत धूमधाम से और गरिमा एवं उम्मीदों के साथ होता है। पूरे जोश और उत्साह के साथ सारा काम निकलवाते समय व्यय के प्रबंधन से ध्यान हट जाता है। यही नहीं विविधकृत और विभिन्नता युक्त समूह भी जाने अनजाने में खर्च बढ़ा देता है जिसे टाला जा सकता था। इन मुद्दों को जब तक समय पर पहचान कर निपटाया नहीं जाता जवाबदेही और पारदर्शिता घट जाने लगेगी जिसके कारण सदस्य किसानों में असहमति उत्पन्न हो जाएगी और भरोसा टूट जाएगा।

- सांविधिक औपचारिकताएँ: किसान उत्पादक कंपनी किसी भी दूसरी निजी कंपनी के बराबर होती है और हर वर्ष समय पर कई सांविधिक औपचारिकताएँ पूरी करनी होती हैं। यदि किसान उत्पादक कंपनियों को इन प्रक्रियाओं और कार्यविधियों से अच्छी तरह वाकिफ विशेषज्ञों का समर्थन नहीं मिल जाता है तो उन्हें दंड और जुरमाना आदि समस्याओं का सामना करना पड़ जाता है, कभी कभी इन पर कानूनी कार्रवाई भी चलायी जाती है।

भविष्यगामी योजनाएँ

किसान उत्पादक संगठनों के साथ काम करने से प्राप्त अनुभवों के आधार पर भविष्य के मार्ग पर उन्हें समर्थन देने हेतु कुछ सुझाव प्रस्तुत किए जा रहे हैं:

- विकासात्मक कार्यक्रमों में समवाय-सरकारी योजनाओं से जुड़े किसान उत्पादक संगठनों को पहचानें।
- किसान समूहों को योजनाओं के कार्यान्वयन का साधन बनाना चाहिए-बुनियादी स्तर के किसानों तक अधिकतम पहुंच बनाएं।
- योजनाएँ लगातार जारी रखनी चाहिए - विविध मंत्रालयों की योजनाओं का लाभ-उठाकर किसान समूह की आवश्यकता और वृद्धि के चरणों के अनुरूप वार्षिक कार्यक्रम बनाकर।
- किसान उत्पादक संगठनों के लिए अनुकूलित ऋण सुविधा।
- योजना पूरी होने के बाद (बैक एंडेड) सहायिकी देने के बदले शुरुआत के लिए (फ्रंट एंड) सहायिकी देना।
- सामान्य प्रसंस्करण सुविधा-यह पहल राज्य सरकारों के स्तर पर किया जा सकता है।
- सामान्य ब्रैंडिंग सुविधा-यह पहल राज्य सरकारों के स्तर पर किया जा सकता है।
- सहकारिताओं के समान मानना और सरकारी प्राप्ति में वरीयता देना।
- किसान कंपनियों के उत्पादों के विपणन हेतु अनुकूल वातावरण-विपणन संघों द्वारा तेल की खरीद/ सार्वजनिक वितरण प्रणाली (पीडीएस) आदि में शामिल कराना।
- वार्षिक बैठकें-निरंतर मूल्यांकन-रुकावटों की पहचान और समुचित नेटवर्किंग।

निष्कर्ष

इस वर्ष विश्व खाद्य दिवस का विषय था किसी को भी पीछा न छोड़ें जिसका तात्पर्य है सब को आहार प्रदान करें। किसानबन्धु सभी के लिए आहार उत्पादित करने हेतु रोज़ कठिन परिश्रम कर रहे हैं। इसमें कोई शक नहीं है कि किसान संगठन किसानों के समावेशी विकास की ओर कार्य करने में समर्थ होंगे। किंतु उन्हें समर्थन और सहायता की आवश्यकता है और इस नेक काम के लिए कार्यरत गैरवान्वित सामाजिक कंपनी के रूप में उनके साथ व्यवहार करना होगा। उनकी चुनौतियों में उन्हें समर्थन देना होगा, उनकी भलाई के लिए नहीं बल्कि मानवराशि की भलाई के लिए, क्योंकि वे ही हमें आहार प्रदान करते हैं। इनसे जुड़े विविध संस्थानों द्वारा सहयोगात्मक तरीके से किसान कंपनियों के विकास के विविध स्तरों में नई पहलें शुरू करनी होंगी ताकि सफलता की नई गाथा रच सकें। ■

नारियल बागों में मासिक कार्य

जनवरी

बीजफलों का एकत्रीकरण और भंडारण

चयनित मात्र ताड़ों से बीजफलों की तुड़ाई सावधानी से की जानी चाहिए और फल के अंदर का पानी सूख न जाए, इसके लिए समुचित रूप से भंडारण करना चाहिए। जहाँ भी ज़मीन ठोस हो, फलों की तुड़ाई करके रस्सी के सहारे उसे नीचे लाना चाहिए।

नर्सरी प्रबंधन

नर्सरी के नारियल पौधों के लिए सिंचाई जारी रखनी चाहिए। जहाँ भी आवश्यक हो खरपतवार निकाल देना चाहिए। यदि नर्सरी में दीमक का प्रकोप पाया जाता है तो क्लोरपाइरफोस (2 मि.ली. क्लोरपाइरफोस एक लीटर पानी में घोलकर) से सराबोर करना चाहिए। स्पाइरलिंग सफेद मक्खी के प्रकोप से बचने के लिए नारियल पौधों के पत्तों के निचले भाग पर पानी का छिड़काव करना चाहिए।

छाया प्रदान करना

नवरोपित पौधों को यदि छाया प्रदान नहीं की गयी हो तो अब छाया प्रदान करनी चाहिए।

सिंचाई

नारियल बागों में सिंचाई जारी रखनी चाहिए। यदि थाला सिंचाई विधि अपनाई गई हो तो प्रति ताड़ 200 लीटर की दर पर चार दिनों में एक बार सिंचाई की जानी चाहिए। नारियल की सिंचाई के लिए सबसे उपयुक्त विधि ड्रिप सिंचाई है। रेतीली मिट्टी में ड्रिपिंग नोकों की संख्या छह और अन्य प्रकार की मिट्टियों में यह चार होनी चाहिए। वाष्णीकरण की दर के अनुसार नारियल की खेती की जाने वाले विभिन्न क्षेत्रों में ड्रिप सिंचाई विधि के ज़रिए कितना पानी देना चाहिए यह तय किया जा सकता है। जनवरी में केरल में प्रति दिन प्रति ताड़ 30-35 लीटर और तमिलनाडु एवं कर्नाटक में 35-45 लीटर पर्याप्त होता है।



जीर्ण और अनुत्पादक नारियल पेड़ों को हटाना

नारियल बाग के जीर्ण और अनुत्पादक ताड़ों को काटकर निकालें और बाग को स्वच्छ रखने के लिए उनका समुचित रूप से निपटारा करें।

कीटों एवं रोगों का प्रबंधन

जनवरी के महीने में जाड़े का मौसम इसप्रकार होता है कि रातें ठंडी और दिन गरम होता है और आर्द्धता कम हो जाती है। इस अवधि के दौरान कीट पर निगरानी रखना अनिवार्य होता है क्योंकि दिन का समय खुशक रहना और रात का समय ठंडा होना चूसने वाले कीटों और रोगाणुओं की आबादी बढ़ने के लिए अनुकूल वातावरण पैदा करता है। नारियल के गेंडा भृंगों का प्रजनन स्थान सूखा रहने से भृंगों के लिए अंडा डालने और सूँडियों के विकास के लिए अनुकूल माहौल बना रहता है। पतंग वर्ग के कीट जैसे कि कृष्णशीर्ष इल्ली और स्लग इल्ली केरल, तमिलनाडु, आँध्र प्रदेश और कर्नाटक के सभी प्रकोपित क्षेत्रों में इस महीने के दौरान अधिक संक्रामक और तीव्र रहते हैं।

कीट

कृष्णशीर्ष इल्ली, ओपिसिना एरेनोसेला

नारियल की कृष्णशीर्ष इल्ली, ओपिसिना एरेनोसेला, पूरे देश में नारियल की खेती किए जाने वाले लगभग सभी इलाकों में सर्दियों में पाया जाने वाला प्रमुख कीट है विशेषतया



कीट प्रकोपित बाग



गोनियोज़ेस निफेंटिडिस

जलाशय के निकट स्थित क्षेत्रों में। कीट प्रकोपित हिस्सा सूख जाता है और निचले पत्तों की ऊपरी सतह पर धूसर रंग के धब्बे बनने लगते हैं। गंभीर प्रकोप की स्थिति में शिखर के मध्य से भीतर की ओर के पत्ते पूरी तरह सूख जाते हैं जिससे पेड़ का शिखर जला हुआ सा दीखता है। कीट प्रकोप के प्रमुख लक्षण हैं कृष्णशीर्ष इल्ली की मौजूदगी, पत्तियों पर जाल सा बनना और सूखा मल दीखना आदि। प्रकोपित नए क्षेत्रों में यदि मित्र कीट नहीं मौजूद हों तो इसका प्रकोप तेज़ी से बढ़ता है और तेज़ गति से चारों तरफ फैल भी जाता है। कीट प्रकोप के परिणामस्वरूप इसका प्रकाशसंश्लेषण क्षेत्र कम हो जाता है, पुष्पक्रमों के उत्पादन में कमी होती है, अपक्व फलों का गिराव बढ़ जाता है और वृद्धि मंद हो जाती है। नारियल की पत्तियाँ अधिक मात्रा में इल्लियों का आहार बन जाने से पैदावार में 45.4 प्रतिशत का नुकसान होने के साथ साथ पत्ते गूँथने लायक या अन्य प्रयोजनों के लिए अनुपयुक्त हो जाते हैं। किसानों को घबराने की कोई ज़रूरत नहीं है और मित्र कीटों के ज़रिए सफलतापूर्वक तेज़ी से जैविक नियंत्रण करने का यह उत्कृष्ट उदाहरण है।

प्रबंधन

- रोगप्रकोप की गुंजाइश वाले क्षेत्रों में कीट की मौजूदगी का पता लगाने के लिए ताड़ के पत्तों का नियमित रूप से अनुवीक्षण करते रहना चाहिए।
- 2-3 पुराने और सूखे पत्तों को काट दें जिन पर विविध अवस्था वाले कीट बसते हैं और उन्हें पूरी तरह नष्ट कर देना चाहिए। इल्लियों/प्यूपों की आबादी कम करने के लिए उन पत्तों को जला देना चाहिए।
- कीट प्रकोपित क्षेत्रों से कीट मुक्त क्षेत्रों में नारियल पत्तों को नहीं ले जाना चाहिए और इसप्रकार क्षेत्र विशेष में संगरोध सशक्त बनाना चाहिए।
- यदि कीट, विकास की तीसरी अवस्था वाले या इससे अधिक आयु के लार्व के रूप में हो तो लार्वा परजीवी गोनियोज़ेस

निफेंटिडिस (प्रति ताड़ 20 परजीवी की दर पर) एवं ब्राकोन ब्रेविकोर्निस (प्रति ताड़ 30 परजीवी) को अधिक संभ्वा में बाग में छोड़ देनी चाहिए। पूर्वप्यूपा परजीवी (एलैसमस निफेंटिडिस) और प्यूपा परजीवी (ब्रेकिमेरिया नोस्टोय) को हर 100 पूर्व प्यूपे और प्यूपे के लिए क्रमशः 49 प्रतिशत और 32 प्रतिशत की दर पर छुड़ाने से प्रभावी रूप से इस कीट का प्रबंधन मुम्किन हुआ है।

- परजीवियों को छुड़ाने से पहले इन्हें पर्याप्त मात्रा में शहद देना चाहिए और पोषक गंधों (गैलरी के वाष्पशील पदार्थ) से सुगम्य बनाना चाहिए ताकि पोषक कीटों की खोज करने की क्षमता बढ़ जाए।
- ताड़ का स्वास्थ्य सुधारने के लिए पर्याप्त सिंचाई और अनुशंसित मात्रा में पोषकतत्वों का प्रयोग सुनिश्चित करें।

फल छेदक कीट, साइक्लोडस ओम्मा

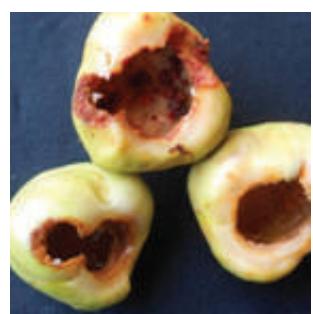
पोल्लाची (तमिलनाडु) के कुछ बागानों में फल छेदक का प्रकोप पाया गया है। यह एक छिटपुट कीट है जो आमतौर पर बैने जीनप्रस्तुपों और संकरों में पाया जाता है। नत्रजनन्युक्त उर्वरकों के अतिरिक्त पोषण से जो रसीलापन आता है वह भी कीट के प्रकोप का प्रमुख कारण है। परागण के बाद बुतामों और अपक्व फलों को छेदकर इल्ली अंदर घुस जाती है और रात के समय इसके भीतरी भागों को खा जाती है जिसके फलस्वरूप बुताम झड़ जाते हैं। जिन ताड़ों पर कृत्रिम परागण होता है, वे इस कीट के प्रकोप का शिकार जल्दी हो जाते हैं। ताड़ के शिखर के अपशिष्टों पर प्यूपा अवस्था में कीट पाए जाते हैं।

प्रबंधन

- शिखर की सफाई करके अपक्व अवस्था के कीटों को हटाना चाहिए।



फल छेदक कीट



कीट प्रकोपित फल

● फसल अनुरक्षण

- रसीलापन से बचने के लिए नत्रजनयुक्त उर्वरकों का प्रयोग विवेकपूर्ण रूप से तथा आवश्यकता के आधार पर करना चाहिए।
- हस्त चालित स्प्रेयर का प्रयोग करके कीट-रोगजनक बैसिलस थुरिंजियैसिस प्रति लीटर 20 ग्राम की दर पर और नीम तेल 0.5 प्रतिशत (10 ग्राम साबुन पाउडर के साथ 5 मि.ली. प्रति लीटर) का छिड़काव करने से कीट का प्रकोप कम हो जाता है।

नारियल एरियोफिड माइट, एसेरिया गुरुर्सॉनिस

नारियल एरियोफिड माइट एक आक्रामक कीट है जिसके बारे में सबसे पहले 1998 में रिपोर्ट की गई थी और जाड़े के मौसम पूर्व इसका प्रकोप अधिक होता है। यह मकड़ी परिवार का कीट है जिसके दो युगल पैर होते हैं। इसका आकार इतना छोटा है (200-250 माइक्रोमीटर) कि माइक्रोस्कोप से ही इसको देख सकते हैं। यह 100-150 अंडे डालता है और इसका जीवनचक्र 7-10 दिनों में पूरा हो जाता है। परागण के बाद विकासशील फलों पर माइट का प्रकोप तुरंत होता है और यह पत्राभ के अंदर सीमित रहता है और परिदलपुंज के निचले भाग के मेरिस्टमी ऊतकों को खा लेता है। परिदलपुंज के नीचे लंबाकार में सफेद लकीरें दर्शित होती हैं जो कि इसके प्रकोप का पहला लक्षण है। कुछ ही दिनों में परिदलपुंज के चारों ओर पीला मंडल प्रकट होता है जो मस्से जैसा बन जाता है और अंत में वहाँ पर दरारें, छेद और गोंदार्ति(गम्मोसिस) उत्पन्न होते हैं। बुतामों और अपक्व फलों का झड़ना और फलों की कुरुरूपता आदि माइट के प्रकोप के अन्य लक्षण हैं।

प्रबंधन

- सूखे शूकीछद, पुष्पक्रम के अपशिष्ट, गिरे फल आदि को हटाएं और इन्हें मिट्टी में गाढ़ देना या जला देना कीट की आबादी कम करने के लिए अनिवार्य है।



एरियोफिड माइट से प्रकोपित फल

एरियोफिड माइट की कॉलोनी

- नीम तेल-लहसुन मिश्रण 2 प्रतिशत गाढ़ता पर या 0.004 प्रतिशत की दर पर एज़ाडिरेक्टिन 10000 पीपीएम छिड़कना या 10 मि.ली. की दर पर एज़ाडिरेक्टिन 10000 पीपीएम तुल्य मात्रा में पानी के साथ जड़ों द्वारा साल में तीन बार याने मार्च-अप्रैल, अक्टूबर-नवंबर और दिसंबर-जनवरी के दौरान देना अनुशंसित है। रोगरोधी उपाय के रूप में गर्मियों में तापमान बढ़ने से पहले का प्रयोग भी उचित होता है।
- नीम दवा के साथ साथ तीन बार प्रति ताड़ प्रति लीटर 20 ग्राम की दर पर 1.6×10^8 सीएफयू रोगजनक फफूँद (एकरोपैथोजन) हिरसुटेल्ला थोमसोनी निहित टैल्क आधारित दवा का प्रयोग।
- बाग में कल्प हरिता (कुलशेखरम लंबे से चयनित) किस्म पर माइट का प्रकोप अत्यंत कम पाया गया है।
- अनुशंसित मात्रा में उर्वरकों का प्रयोग, जैवभार का पुनर्चक्रण, नारियल थालों में हरी खाद फसलें उगाना और इनमें फूल निकलने पर उन्हें उखाड़कर वहीं मिट्टी में मिला देना, गर्मी के समय सिंचाई और समुचित उपायों से मिट्टी और जल संरक्षण करने से ताड़ों का स्वास्थ्य सुधरता है और कीट का प्रकोप कम होता है।

रोग

नारियल की पर्ण चित्ती (लेसियोडिप्लोडिया थियोब्रोमी)

इसके रोगाणु से पत्तों और फलों को नुकसान होता है। प्रकोपित पत्तियाँ अग्रभाग से सूखने लगती हैं और यह जला हुआ सा प्रकट होता है। तीसरे से चौथे छल्लों के पत्तों पर इसका प्रकोप होता है। पर्ण चित्ती रोग के कारण निचले पत्तों पर उल्टे 'V' आकार में सूखा-हुआ सा दीखता है और इस रोग के प्रकोप का लक्षण बिलकुल वैसा ही है जैसा कि सूखे और अन्य दबावों से पेड़ पर प्रकट होता है। पत्तियों पर व्यापक ऊतकक्षय साफ किनारों के साथ प्रकट होता है और क्षतिग्रस्त ऊतकों और स्वस्थ ऊतकों के किनारे स्पष्ट रूप से प्रकट होते हैं। रोगाणु सबसे पहले पर्णशिरा (रैकिस) पर अपनी कॉलोनी बनाता है, जिससे अंतरिक ऊतकक्षय होता है जो तने की तरफ बढ़ जाता है। ऊतकक्षयी ऊतकों पर दरार पड़ने लगते हैं जिसके कारण पर्णवृत्तों के निचले भाग से गोंद निकलता है। नारियल में अपक्व फलों के परिदलपुंज भाग पर छोटे

काले धब्बे प्रकट होते हैं। जब लगभग पके/परिपक्व फलों पर रोगप्रकोप होता है तो अंदर की तरफ मध्य फल भित्ति तक इसका प्रकोप फैल जाता है जिसके कोई भी लक्षण बाहर प्रकट नहीं होता है। प्रकोपित फल शोषित, सिकुड़ा हुआ, कुरुपित होता है और अपक्व स्थिति में ही गिर जाता है जिससे पैदावार में 10 से 25 प्रतिशत तक का नुकसान होता है।

प्रबंधन

- ट्राइकोडेर्मा हर्जियानम से संयुष्ट 5 कि.ग्रा. नीम खली का प्रयोग और मिट्टी की जाँच आधारित पोषण प्रदान करने से ताड़ का स्वास्थ्य सुधर जाता है।
- पर्याप्त मात्रा में सिंचाई और मिट्टी एवं जल संरक्षण उपाय अपनाना अनुशंसित है।
- साल में तीन बार 2 प्रतिशत की दर पर हेक्साकोनाजोल (प्रति ताड़ 100 मि.ली. दवा) जड़ों द्वारा दें।

जड़मुझा रोग

जड़मुझा रोग तिरुवनंतपुरम, आलप्पुषा, कोल्लम, कोट्टयम, पत्तनंतिट्टा, इटुकिक, एरणाकुलम और तुशशूर आदि केरल के आठ दक्षिणी जिलों में पाया गया है। राज्य के मलप्पुरम, पालक्काट, कोषिक्कोट, वयनाट और कण्णूर आदि शेष जिलों के बागों में भी इधर-उधर इसका प्रकोप पाया गया है। तमिलनाडु के कोयंबत्तूर, तेनी, सेंकोट्टै और कन्याकुमारी जिलों में भी यह रोग पाया गया है। कर्नाटक के दक्षिण कन्नड़ जिले में और गोवा में भी इस रोग का प्रकोप रिकोर्ड किया गया है।

इस रोग का प्रत्यक्ष रोगलक्षण यह है कि पत्तियाँ असाधारण रूप से मुड़ जाती हैं या उन पर मात्र तीलियाँ रह जाती हैं जिसे फ्लैसिडिटी कहा जाता है। सामान्य पीलापन और पत्तियों के किनारे पर ऊतकक्षय प्रकट होना इसके अन्य रोगलक्षण हैं। कुछ मामलों में जड़ों का सड़न, अपक्व फलों का गिराव, शूक्रीछदों का सूखना और अनखुले पुष्पक्रमों की शूकिकाओं का ऊतकक्षय भी देखा गया है। रोगप्रकोपित ताड़ों के फलों का छिलका, गरी और तेल खराब गुणवत्ता के होते हैं। खोपरे का तेल संघटक भी कम हो जाता है। सभी आयु वर्ग के ताड़ इस रोग के शिकार हो जाते हैं। हालाँकि यह रोग घातक नहीं होता है किंतु ताड़ को दुर्बल बना देता है। तथापि, फलनपूर्व आयु के ताड़ जब इस रोग से प्रकोपित

होता है, वे पुष्पण और फलन स्थिति तक नहीं पहुँचते हैं। इस रोग का प्रकोप होने पर ताड़ पर कई अंदरूनी परिवर्तन होने लगते हैं।

16 एसआर आरएनए ग्रूप XI के फ्लोएम बाउंड बैक्टीरिया-फाइटोप्लास्मा को इसके रोगाणु के रूप में पहचाना गया है। लेस बग (स्टेफनाइटिस ट्रिपिका) और पादप फुदका (प्रौटिस्टा मोएस्टा) द्वारा इस रोग का संक्रमण होता है।

प्रबंधन

इस रोग की एक मुख्य विशेषता यह है कि यह घातक रोग नहीं है बल्कि पेड़ को दुर्बल बना देता है जो उपयुक्त प्रबंधन विधियाँ अपनाई जाने पर अच्छी वृद्धि दिखाता है। जड़मुझा रोग के लिए दो रणनीतियाँ अपनायी जाती हैं, एक गंभीर रूप से प्रकोपित सटे हुए क्षेत्रों के लिए और दूसरा हल्के तौर पर प्रकोपित क्षेत्रों के लिए।

क. गंभीर रूप से रोगप्रकोपित क्षेत्रों के लिए रणनीति

गंभीर रूप से प्रकोपित क्षेत्रों में ताड़ की उपज को टिकाऊ रखने या उसे सुधारने के लिए निम्नलिखित एकीकृत प्रबंधन प्रणालियाँ अपनायी जा सकती हैं:

- गंभीर रूप से रोग प्रकोपित और छोटे ताड़ों को निकालना
- पत्ता सड़न रोग का प्रबंधन
- संतुलित उर्वरक प्रयोग
- जैविक खाद का प्रयोग
- थालों में हरी खाद फसलों की खेती करके उसे मिट्टी में मिला देना
- गर्भी के महीनों में सिंचाई
- कीटों का प्रबंधन
- अंतर और मिश्रित फसल प्रणाली अपनाना
- रोगप्रकोपित बागों में मिश्रित खेती जिसके अंतर्गत पेड़ों के बीच की जगह पर चारा घास की खेती, दुधारू गायों को पालना और जैविक अपशिष्टों का पुनर्चक्रण आते हैं।

ख. हल्के तौर पर रोगप्रकोपित क्षेत्रों के लिए रणनीति

सभी रोगग्रस्त ताड़ों को हटाएँ: व्यवस्थित रूप से निगरानी करके और जैसे जैसे रोगप्रकोपित ताड़ों की पहचान होती है उन पर निशान लगाकर रोगों का फैलाव रोका जा सकता है। रोगप्रकोपित ताड़ों की सटीक और समय पर पहचान एकीकृत कीट नियंत्रण का अनिवार्य संघटक है। इस रोग की शोध

● फसल अनुरक्षण

पहचान हेतु केन्द्रीय रोपण फसल अनुसंधान संस्थान ने एलिसा (ELISA) जॉच विकसित की है। रोगलक्षण बाहर प्रकट होने के 24 महीने पूर्व रोगप्रकोपित ताड़ों को पहचाना जा सकता है और इन्हें रोग के आगे के फैलाव को रोकने के लिए काटकर निकाला जा सकता है।

रोगमुक्त स्वस्थ पौधों के साथ पुनर्रोपण: ऐसे बागों में जहाँ पर्याप्त मात्रा में जगह उपलब्ध हो गुणवत्तापूर्ण नारियल पौधों से पुनर्रोपण करें। जड़मुझा रोग परंपरागत पौधा संरक्षण उपायों से नियंत्रित नहीं होता है इसलिए इस रोग का प्रबंधन करने का उत्तम उपाय रोगसहनशील किस्मों की खेती करना है। केन्द्रीय रोपण फसल अनुसंधान संस्थान से विमोचित रोग सहनशील किस्में कल्परक्षा (मलयन हरा बौना से चयनित), कल्पश्री (चावककाट हरा बौना से चयनित) और संकर किस्म कल्प संकरा (चावककाट हरा बौना x पश्चिम टटीय लंबा) जड़मुझा रोग प्रकोपित क्षेत्रों में खेती करने के लिए उपयुक्त हैं।

असाधारण फल गिराव

गत कुछ महीनों के दौरान असाधारण और अविवाल बारिश के कारण ताड़ों द्वारा पौष्टिकतत्वों का अवशोषण काफी कम हुआ है और यह मुख्यतः मिट्टी से पौष्टिकतत्वों के निक्षालन के कारण हुआ है। अधिकांश बागों में पानी का जमाव और जड़ों की अनुचित श्वसन प्रक्रिया देखी गयी है। यही नहीं, केरल के कई नारियल बागों में असाधारण फल गिराव

पाया गया है जिसका कारण है बारिश के चरण में फलों पर कीटों और रोगों का संयुक्त प्रकोप। वैसे भी इस अवधि के दौरान ताड़ों पर बहुत कम संख्या में ही फल लगते हैं। फल कीटों में नारियल एरियोफिड माइट (एसेरिया गुरुरांनिस), कोरिड बग (पैराडेसिनस रोस्ट्रैटस) और फँकूद रोगाणु (फाइटोफ्थोरा पामिवोरा और लैसियोडिप्लोडिया थियोब्रोमे) शामिल हैं। मेरिस्टमी ऊतकों को अपना आहार बनाने वाले माइट फँकूद प्रकोप को और भड़काता और बिगाड़ता है। अतः इस समस्या से निपटने के लिए एक समग्र प्रबंधन रणनीति की अनुशंसा दी जाती है।

प्रबंधन

- जल जमाव वाले क्षेत्रों में जल निकासी के लिए नल खोदें और बारिश रुक जाने के बाद ताड़ के थालों में जमी जलोढ़क मृदा को निकाल दें।
- तुरंत ही मृदा विश्लेषण करके उसके आधार पर अपेक्षित मात्रा में पौष्टिकतत्व प्रदान करें।
- शिखर की सफाई करें और रोगरोधी उपाय के रूप में पर्ण कक्षों में नीमखली और रेत मिश्रित करके भरें।
- माइट एवं कोरिड बग के प्रकोप की जाँच करने के लिए परागण के बाद गुच्छों पर 2 प्रतिशत नीमतेल (प्रति लीटर 20 मि.ली.) का छिड़काव करें। फँकूद प्रकोप को कम करने के लिए एक प्रतिशत बोर्डो मिश्रण का प्रयोग करें।

फरवरी

बीजफलों का एकत्रीकरण और भंडारण

चयनित मातृ ताड़ों से बीजफलों की तुड़ाई करके समुचित रूप से भंडारण करें। यदि ज़मीन ठोस हो तो रस्सी के सहरे फलों को नीचे लाया जाए।

नर्सरी प्रबंधन

जैसा कि पहले बताया गया है नर्सरी प्रबंधन के लिए समुचित उपाय अपनाया जाए।

छाया प्रदान करना

यदि नव रोपित पौधों को छाया प्रदान करने की व्यवस्था नहीं की गई है तो छाया प्रदान करें।



सिंचाई

नारियल बागानों में सिंचाई जारी रखनी चाहिए। जनवरी महीने में बताए गए अनुसार इस महीने के दौरान भी उपयुक्त सिंचाई विधि अपनायी जाएं।

नमी संरक्षण

यदि पहले नहीं किया गया हो तो पलवार लगाना और अन्य मिट्टी एवं नमी संरक्षण उपाय अपनाना चाहिए।

कीट एवं रोग प्रबंधन

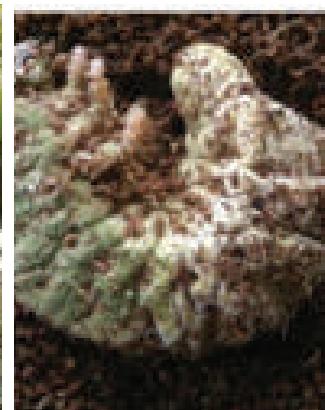
जनवरी में भी तापमान बढ़कर उच्च रहने के कारण ऐसा लगता है कि फरवरी का महीना शुष्क होने वाला है। किंतु रातें काफी ठंडी रहती हैं। आर्द्रता की प्रतिशतता धीरे धीरे कम होने लगती है और वाष्णव का स्तर बढ़ जाता है। नदी के निकट क्षेत्र और खारे पानी वाले क्षेत्र तथा मध्यवर्ती भूभागों में शोषक कीट जैसे रूगोंस स्पाइरलिंग सफेद मक्खी और अन्य सफेद मक्खियों के प्रकोप के लिए अनुकूल वातावरण पैदा हो जाता है। केरल, तमिलनाडु, आँध्र प्रदेश, कर्नाटक और लक्ष्मीपुर्णीपाटनम् (कवरत्ती और मिनिकॉय) में रूगोंस स्पाइरलिंग सफेद मक्खी या नेस्टिंग सफेद मक्खी या दोनों का एकसाथ भारी प्रकोप पाया गया है। परजीविता स्तर में ऐसा परिवर्तन होगा जो विशेषतया अवयस्क ताड़ों और नर्सरियों में कीटों की आबादी बढ़ने के लिए अनुकूल वातावरण पैदा करेगा। बारिश खत्म होने के बाद कज्जली फफूँद भक्षी भृंग की आबादी कम हो जाती है। नारियल पौधों और सजावटी पौधों के परिवहन के समय कड़ी स्वदेशी संगरोध अपनानी चाहिए। कृष्ण शीर्ष इल्ली और स्लग इल्ली जैसे मुख्य कीटों के प्रकोप की गुंजाइश वाले क्षेत्रों को ध्यानपूर्वक समझना होगा और तदनुसार प्रबंधन विधियाँ अपनानी होंगी। पत्ता सड़न रोग और मूल तना विगलन रोग के रोगाणुओं की संख्या प्रकोप की गुंजाइश वाले क्षेत्रों में बढ़ सकती है।

गैंडा भृंग (ऑरिक्टस रिनोसेरस)

यह एक सर्वव्यापी कीट है, अतः गैंडा भृंग का प्रकोप हमेशा से होता रहता है। किंतु मानसून के समय इसका प्रकोप और बढ़ जाता है जब नए पौधों का रोपण भी किया जाता है। नव रोपित पौधों में भृंग के प्रकोप से कॉपल को नुकसान पहुँचता है और वह कुरुपित हो जाता है। अवयस्क ताड़ों पर भी कीट का



मछली जाल से संरक्षण



मेटाराइज़ियम प्रकोपित सूँड़ी

प्रकोप अधिक होता है और कभी कभी वह हाथी के दाँत समान रोगलक्षण प्रकट करता है। नुकसान ग्रस्त अवयस्क ताड़ों की वृद्धि रुक जाती है और उस पर फूल निकलने में विलंब लग जाता है। बाद में फल पर छेद जैसे रोगलक्षण भी पाए जाते हैं। यहीं नहीं, गैंडा भृंग का प्रकोप होने से उस ताड़ पर लाल ताड़ घुन अंडे डालने लगते हैं और कली सड़न रोग कारक रोगाणु भी इस दौरान पेड़ पर प्रवेश करता है।

प्रबंधन

- रोगरोधी उपचार के रूप में पेड़ के सबसे भीतरी तीन पर्ण कक्षों में या तो वानस्पतिक खली(नीम खली/चालमुगरा खली/पोंगम खली (250 ग्राम)) उतनी ही मात्रा में रेत मिश्रित करके भरें या 12 ग्राम नेफ्थलिन गोलियाँ रेत मिश्रित करके रखें।

- सुबह सुबह रोज़ाना ताड़ की छानबीन करें और प्रकोपित क्षेत्र से भृंगों को बीटल हुक से निकाल दें। यह प्रक्रिया अपनाने से कीटों की बढ़ती आबादी कम की जा सकती है।

- अवयस्क ताड़ों के कॉपल क्षेत्र को मछली पकड़ने की जाल से सुरक्षित रखें। इससे गैंडा भृंग को फँसाया जा सकता है और कीट का प्रकोप रोकने के लिए सबसे भीतरी तीन पर्ण कक्षों में 3 ग्राम क्लोरेंट्रानिलप्रोल/फिप्रोनिल निहित छेद्युक्त सेशे रखें।

- पशुपालन उद्योग से जुड़े किसान खाद गड्ढों को प्रति घन मीटर 5×10^{11} की दर पर हरी मस्कार्डिन कवक, मेटाराइज़ियम एनिसोप्लि से उपचार करें ताकि गैंडा भृंग की बढ़ती सूँड़ियों पर जंतुमारी (एपिज़ोटिक) का प्रकोप करा सकें। यह उपाय समूचे इलाके के किसान एकसाथ अपनाने से कीट

● फसल अनुरक्षण

प्रकोप बहुत सफलतापूर्वक कम किया जा सकता है और यह कीटों की संख्या कम करने में परिस्थिति अनुकूल तरीका बन जाता है।

- प्रजनन गड़दों में भाँट (क्लिरोडेंड्रोन इनफोर्मेटम) नामक खरपतवार पौधा मिलाने से हार्मोन संबंधी विसंगतियों के कारण कीट की अवयस्क अवस्था में ही इनका विकास रुक जाता है।

- अंतर खेती और पारिस्थितिक इंजीनियरी सिद्धांतों द्वारा फसल विविधता लाने से कीटों को गुमराह किया जा सकता है और किसानों को लगातार आमदनी प्राप्त होती है और अतिरिक्त रोज़गार उत्पन्न होता है।

रूगोस स्पाइरलिंग सफेद मक्खी (एल्यूरोडिक्स रुगियोपेक्सिलेटस)

इस अवधि के दौरान आक्रामक रूगोस स्पाइरलिंग सफेद मक्खी (एल्यूरोडिक्स रुगियोपेक्सिलेटस) का प्रकोप नए क्षेत्रों में पाया जा सकता है और पहले से प्रकोप रिपोर्ट किए गए क्षेत्रों में दोबारा इसका प्रकोप पाया गया। दिन का तापमान अधिक होना और आपेक्षिक आर्द्रता कम होने जैसे अनुकूल जलवायु परिस्थितियों के कारण कीट की आबादी बढ़ जाती है। इस कीट का प्रकोप होने पर ताड़ की पत्तियों की निचली सतह पर सफेद मक्खी की कालोनी की उपस्थिति और पत्तियों की ऊपरी सतह पर काला फँकूद का जमाव पाया जा सकता है। गंभीर प्रकोप की स्थिति में, पत्ते शीघ्र जीर्ण हो जाते हैं और वयस्क पत्तियाँ जल्दी सूख जाती हैं। सफेद मक्खी का प्रकोप पत्तियों, डंठलों और फलों पर भी होता है और यह रिपोर्ट किया गया है कि केला, बर्ड ऑफ पैराडाइस, हेलिकोनिया प्रजाति आदि इसके परपोषी पादप हैं। सफेद मक्खियों का आहार लगातार बन जाने से ताड़ का स्वास्थ्य बिगड़ जाता है जिसके लिए नारियल पेड़ की देखभाल करना अत्यंत आवश्यक हो जाता है।

प्रबंधन

- छोटे ताड़ों में, जेट स्पीड से पानी का छिड़काव करने से सफेद मक्खी को पत्तियों से निकाला जा सकता है और कीट की आहार लेने की तथा प्रजनन की क्षमता कम की जा सकती है।

- छोटे और वयस्क ताड़ों का स्वास्थ्य सुधारने के लिए मृदा जाँच के अनुसार की गई सिफारिशों के आधार पर बेहतर



रूगोस स्पाइरलिंग सफेद मक्खी

पोषण प्रदान करें और पर्याप्त सिंचाई सुनिश्चित करें। जहाँ भी संभव हो सके अंतर फसलों का रोपण सहित ताड़ का कृषीय स्वास्थ्य प्रबंधन अत्यंत महत्वपूर्ण होता है ताकि वाष्पशील संकेतों में विविधता लाया जा सके और सूक्ष्म जलवायु सुधार सके जिससे कि सफेद मक्खी की आबादी कम की जा सके।

- कीटनाशी का प्रयोग नहीं करना चाहिए जो कीट के दोबारा प्रकोप का कारण बन सकता है और यह कुदरती एफिलिनिड परजीवी एनकार्शिया गुआडेलूपे को पूरी तरह मार सकता है। परजीवी की वृद्धि के लिए कीटनाशी का प्रयोग थोड़े समय के लिए रोकने की सलाह दी जाती है।

- पीले चिपचिपे फँदे की स्थापना और एनकार्शिया गुआडेलूपे का प्रयोग करते हुए संरक्षी जैव नियंत्रण करने से कीटों की आबादी 70 प्रतिशत तक कम की जा सकती है और परजीविता 80 प्रतिशत तक बढ़ सकती है।

- काला फँकूद भक्षी भृंग लियोक्रिनस नीलगिरियानस के प्राकृतिक आवास का संरक्षण करने से पत्तियों पर जमे सारे काले फँकूदों को यह खा जाता है और उन्हें इस प्रकार साफ करता है कि ताड़ों की प्रकाशसंश्लेषण क्षमता बेहतर हो जाती है।

- नारियल खेती प्रणाली पर नेस्टिंग सफेद मक्खी सहित दूसरी सफेद मक्खियों की उपस्थिति की छानबीन बारीकी से करनी चाहिए।

नेस्टिंग सफेद मक्खी

(पैरालेरोड्स बॉंडारी और पैरालेरोड्स मिनी)

रूगोस स्पाइरलिंग सफेद मक्खी के अलावा नारियल की पत्तियों पर और दो नेस्टिंग सफेद मक्खियाँ (पैरालेरोड्स बॉंडारी और पैरालेरोड्स मिनी) भी पायी गई हैं। नेस्टिंग सफेद मक्खी का आकार (1.1 मि.मी.) रूगोस स्पाइरलिंग सफेद मक्खी (2.5 मि.मी.) के आकार से छोटा होता है। इसके निम्फ

सपाट आकृति के होते हैं जिसकी पीठ में से फाइबर ग्लास समान तंतु निकला हुआ होता है जबकि रूगोस स्पाइरलिंग सफेद मक्खी का निम्फ कॉन्वेक्स आकार का होता है। वयस्क नेस्टिंग सफेद मक्खी पंछियों के घोंसले के समान अंडे सेने की जगह (ब्रूडिंग चेंबर) बनाती है और उसमें रहती है। पी.बोंडारी के पंखों पर 'x' आकार का टेढ़ा काला निशान होता है और दंडाकार के नर जननेंद्रिय पर दो छोटे उभार होते हैं जबकि पी.मिनी के पंखों पर काला निशान नहीं होता है और इसका जननेंद्रिय कुक्कुट के सिर के समान होता है। नेस्टिंग सफेद मक्खी रूगोस स्पाइरलिंग सफेद मक्खी के साथ होड़ करती है और कई मामलों में रूगोस स्पाइरलिंग सफेद मक्खी का प्रकोप कम करती है।

प्रबंधन

- छोटे ताड़ों में, जेट स्पीड के साथ पानी छिड़कने से सफेद मक्खी को हटाया जा सकता है और इसके आहार लेने की क्षमता और प्रजनन क्षमता कम की जा सकती है।
- छोटे और वयस्क ताड़ों का स्वास्थ्य सुधारने के लिए अच्छा पोषण और पर्याप्त मात्रा में पानी मिलना सुनिश्चित करना चाहिए।
- साइबोसेफलस प्रजाति के प्रभावी निटिडुलिड परभक्षी ताड़ प्रणाली में पाया गया था और जैविक नियंत्रण को सुरक्षित रखने के लिए कीटनाशी प्रयोग को कुछ समय के लिए रोकने की सलाह दी जाती है।

कृष्णशीर्ष इल्ली (ओपिसिना एरेनोसेला)

यदि कृष्णशीर्ष इल्ली का प्रकोप पाया जाता है तो समुचित प्रबंधन उपाय अपनाएं।

पत्ता सड़न रोग (कोलेटोट्रिकम ग्लोइयोस्पोरियोइड्स, एक्सेरोहिलम रोस्ट्रेटम)

यह आम तौर पर जड़ मुर्झा रोग ग्रस्त ताड़ों पर पाया जाता है जिनमें नई निकली नारियल की कॉपलों पर और निकटस्थ पत्तों पर ऊतकक्षय पाया जाता है। यह रोग मुख्यतया दिसंबर महीने के दौरान मानसून के बाद के चरणों में पाया जाता है। रोगप्रकोपित पत्तों का ऊतकक्षय हो जाता है और यह ताड़ से अलग नहीं होता है और उस पर टिका रहता है। प्रारंभ में यह रोग छोटे छोटे धब्बे के रूप में प्रकट होता है जो बाद में बड़ा



पत्ता सड़न रोगग्रस्त ताड़

रोगप्रकोपित पत्तियाँ

होकर एक दूसरे से मिल जाता है और व्यापक रूप से सड़ जाता है जिससे ताड़ की प्रकाशसंश्लेषण क्षमता पर विपरीत प्रभाव पड़ता है। इस रोग का प्रकोप मुख्यतः जड़ मुर्झा रोग प्रकोपित क्षेत्रों में होता है।

प्रबंधन

- शिखर पर आवश्यकता आधार पर रोगग्रस्त कॉपल एवं आसपास के पत्तों को काटकर नष्ट कर देना चाहिए।
- रोगप्रकोपित कॉपल और उसके आसपास 300 मि.ली.पानी में हेक्साकोनाज़ोल 2 मि.ली. मिलाकर छिड़काव करना चाहिए।
- ताड़ का स्वास्थ्य सुधारने के लिए मृदा की जाँच करके अपेक्षित पोषण और पर्याप्त सिंचाई सुनिश्चित करना है।

मूल तना विगलन रोग (गैनोडर्मा प्रजाति)

यह एक विनाशकारी रोग है जो नारियल की खेती किए जाने वाले सभी इलाकों में पाया जाता है और उच्च पीएच वाली मिट्टी में और नम दबाव परिस्थिति में अत्यधिक गंभीर रूप में प्रकट होता है। रोग प्रकोप की प्रारंभिक स्थिति में रोगाणु जड़ तंत्र पर वार करता है जो प्रत्यक्ष रूप से प्रकट नहीं होता है। तमिलनाडु के तंजावुर, आंध्र प्रदेश में पूर्वी गोदावरी जिले के कुछ इलाकों और कर्नाटक के अरसिकेरे में यह गंभीर रूप में पाया जाता है। सबसे बाहरी पत्ते पहले पीले रंग के और फिर धीरे धीरे भूरे रंग के हो जाते हैं और बाद में तने से जुड़े भाग से नीचे की ओर झुक जाता है जो नीचे की तरफ लटककर तने के शीर्ष पर लहँगे के समान प्रकट होता है। समय के साथ रोग का प्रकोप बढ़ जाने से तने का शीर्ष शंकु आकार का हो जाता है और धड़ क्षेत्र पर रिसाव के लक्षण प्रकट हो जाते हैं।

● फसल अनुरक्षण

तने के मूलभाग पर लाल भूरे रंग का घाव प्रकट होता है, जिससे गाढ़े चिपचिपे पदार्थ रिसने लगता है। ये भूरे धब्बे ज़मीनी स्तर से एक मीटर की ऊँचाई तक फैल जाते हैं और कभी तने से छाल निकलते हुए भी पाया जाता है। कभी-कभार प्रकोपित तने पर रोगाणु के फलन काय(बेसिडियोकार्प) का विकास होता है।

- तने के निकट कचरा और ताड़ का अपशिष्ट न जलाएं ताकि तना/जड़ को घाव लगने से बचाया जा सके।
- मृत ताड़ और गंभीर रूप से रोगप्रकोपित ताड़ों को काटकर निकालें तथा रोगग्रस्त ताड़ों के धड़ और जड़ भागों का नाश करें ताकि रोग संरोपों को हटाया जा सके।
- रोगप्रकोपित ताड़ों के चारों ओर(तने के निचले भाग से 1.2 मीटर की दूरी में) नाली खोदकर (60 सें.मी. गहरा और 30 सें.मी. चौड़ा) आसपास के स्वस्थ ताड़ों से अलग रखें।
- प्रति वर्ष प्रति ताड़ छह महीने के अंतराल पर ट्राइकोडेर्मा हर्जियानम(सीपीटीडी 28) टैल्क दवा (50 ग्राम) से संपुष्ट

नीम खली (5 कि.ग्रा.) का प्रयोग करने से रोग की तीव्रता कम हो जाती है।

- 2 प्रतिशत की दर पर हेक्साकोनाज़ोल जड़ों द्वारा देना (प्रति ताड़ 100 मि.ली. घोल) और 0.2 प्रतिशत हेक्साकोनाज़ोल या 1 प्रतिशत बोर्डो मिश्रण के 40 लीटर से नारियल थालों में मिट्टी को शराबोर करना अनुशंसित है।

कीटों और माइट कीटों तथा रोगकारक रोगाणुओं का सटीक और समय पर पहचान प्रभावी प्रबंधन तंत्र के कार्यान्वयन के लिए अत्यंत आवश्यक है। यदि रोग या रोगकीट का पता देरी से लगाया जाता है तो कीट प्रकोप से बचाव करने में भी अधिक समय लगेगा। अतः प्रभावी तलाशी के ज़रिए बारीकी से ताड़ों की छानबीन करने और समय पर रोग की पहचान करने से उत्पादन में बढ़ोत्तरी होती है और किसानों को दुगुनी आय प्राप्त होने लगती है। नारियल के कीटों और रोगों से निपटने के लिए ताड़ का स्वास्थ्य प्रबंधन अत्यंत महत्वपूर्ण होता है।

मार्च

बीजफलों का एकत्रीकरण और भंडारण

पहले बताए गए अनुसार बीजफलों की तुड़ाई करके इसका भंडारण समुचित रूप से करें।

नर्सरी प्रबंधन

जैसा कि पहले बताया गया है नर्सरी प्रबंधन के लिए समुचित उपाय अपनाएं।

उर्वरक प्रयोग

सिंचित नारियल बागों में नारियल पेड़ों को रासायनिक उर्वरकों की अनुशंसित मात्रा के एक चौथाई भाग का प्रयोग करें।



सिंचाई

नारियल बागानों में सिंचाई जारी रखनी चाहिए। इसके लिए उपयुक्त विधि अपनायी जाए।

नमी संरक्षण

नारियल की खेती की जाने वाले अधिकांश क्षेत्रों में गर्मी के चरम दिनों में सिंचाई करने के लिए पानी की अपर्याप्तता काफी गंभीर समस्या बन जाएगी। अतः नारियल किसानों को सिंचाई के लिए पानी का उपयोग काफी विवेकपूर्ण ढंग से करना अनिवार्य हो जाता है। पानी की बचत करने के लिए ड्रिप सिंचाई सुविधा का प्रयोग करना चाहिए। यदि पहले नहीं किया गया हो तो पलवार लगाना और अन्य मिट्टी एवं नमी संरक्षण उपाय अपनाना चाहिए। पानी के अभाव वाले क्षेत्रों में जहाँ भी व्यवहार्य हो, नारियल पेड़ों की जान बचाने/सुरक्षित रखने के लिए अपेक्षित सिंचाई की व्यवस्था करनी चाहिए। इस प्रकार जान बचाने/संरक्षण के लिए सिंचाई करते समय

थालों से पलवार लगाई गई सामग्रियाँ हटा देनी चाहिए और सिचाई के तुरंत बाद थालों में फिर से इन सामग्रियों से पलवार लगाना चाहिए।

छाया प्रदान करना

यदि नव रोपित पौधों को छाया प्रदान करने की व्यवस्था नहीं की गई है तो छाया प्रदान करें।

कीटों और रोगों का प्रबंधन

मार्च का महीना शुरू से अंत तक शुष्क रहता है, किंतु एकाध बार बारिश होने से गर्मी की तीव्रता कम हो जाती है और आर्द्धता थोड़ी बढ़ जाने से कीट प्रकोप के लिए अनुकूल वातावरण पैदा हो जाता है। सफेद मक्खी और नारियल एरियोफिड माइट जैसे शोषक कीट इस अवधि के दौरान बढ़ जाते हैं। स्लग इल्ली के प्रकोप वाले क्षेत्रों का कड़ी अनुवीक्षण करना चाहिए और कीट प्रकोपित पुराने पत्तों को नष्ट करते हुए इसका व्यापक फैलाव रोकने के लिए एहतियाती उपाय अपनाना चाहिए। रुग्गोस स्पाइरलिंग सफेद मक्खी के लिए यह जलवायु परिस्थितियाँ काफी अनुकूल होती हैं। इसलिए उपयुक्त स्वास्थ्य प्रबंधन विधियाँ अपनाते हुए पर्याप्त मात्रा में पोषण और पानी की व्यवस्था करके ताड़ को स्वस्थ बनाए रखें ताकि कीट के प्रकोप को झेलने के लिए ताड़ पर और अधिक पत्ते निकल सकें।

रुग्गोस स्पाइरलिंग सफेद मक्खी और नेस्टिंग सफेद मक्खी के प्रकोप की जाँच करने के लिए नर्सरी के नारियल पौधों का कड़ी अनुवीक्षण करना चाहिए। तमिलनाडु और आँध्र प्रदेश में चक्रवाती तूफान से क्षतिग्रस्त हुए क्षेत्रों में ताड़ के सड़े अपशिष्टों के गंध से आकृष्ट होकर लाल ताड़ घुन उस क्षेत्र के अकेले खड़े ताड़ों पर अंडा डालने के लिए केन्द्रित हो सकते हैं जिसका सख्ती से अनुवीक्षण करने की आवश्यकता है। ताड़ के थालों में फसलों का अपशिष्ट नहीं जलाना चाहिए क्योंकि यह तने के ऊतकों को नरम बना सकते हैं जो तना स्ववरण और मूल तना विगलन रोगकारी रोगाणुओं के लिए रास्ता खोल सकता है। ताड़ के स्वास्थ्य का बेहतर अनुवीक्षण करने के लिए और कीट प्रकोप से बचने के लिए मार्च के महीने के दौरान कड़ी अनुवीक्षण करते रहना चाहिए।

लाल ताड़ घुन, रिंकोफोरस फेरुजिनस

गेंडा भूंग का प्रकोप होने पर घातक कीट लाल ताड़ घुन की आक्रामक क्षमताएं अधिक हो जाती हैं क्योंकि इस कीट को किसी ताड़ पर केन्द्रित होने और अंडा देने के लिए ताड़ पर घाव होना ज़रूरी होता है। मध्यम छल्ले के क्षेत्र का पीला होना, भूरे रंग का तरल पदार्थ रिसना, ताड़ पर छेद होना, तर्कु पत्ता क्षेत्र का रोधन और तने से सूँडियों के कुतरने की आवाज़ सुनाई देना आदि जैसे लक्षण कीट की क्षति को समय पर पहचानने में सहायक हैं। प्रारंभिक स्थिति में कीट के प्रकोप की पहचान करने में किसान असमर्थ हो जाते हैं क्योंकि यह कीट ताड़ के भीतर छिपा रहता है। बौनी किस्म के और 5-15 वर्ष की आयु के ताड़ों पर इसका प्रकोप अपेक्षतया अधिक होता है। प्रकोपित ताड़ के भीतर सभी अवस्था के कीट पाए जाते हैं। ताड़ का घातक शत्रु होने के कारण एक प्रतिशत प्रकोप को रोकथाम के उपाय अपनाने का समयसीमा निर्धारित किया गया है।

प्रबंधन

- अंडा देने के लिए तैयार घुनों को बाग से दूर रखने के लिए ताड़ पर कोई घाव लगने न देना अनिवार्य होता है और इसलिए पत्तों को काटते समय तने से कम से कम एक मीटर लंबाई में पर्णवृत्त को छोड़कर काटना चाहिए।
- कीट प्रकोपित ताड़ों/शिखर गिरे ताड़ों को तुरंत काटकर नष्ट कर देना चाहिए।
- कीट का प्रकोप कम करने के लिए फसल ज्यामिति और समुचित दूरी बनाए रखना अत्यंत अनिवार्य है।
- प्रकोपित ताड़ों पर प्रकोपित स्थानों में इमिडाक्लोप्रिड 0.002 प्रतिशत (प्रति लीटर पानी में 1 मि.ली.) या इंडोक्सोकार्ब 0.04 प्रतिशत(प्रति लीटर पानी में 2.5 मि.ली.) का यथासमय प्रयोग करने से सूँडियाँ मर जाती हैं और ताड़ प्रकोप से मुक्त होकर उस पर नई कॉपल निकलने लगती है।
- प्रतिरक्षकों और परागणकर्ताओं को उत्तेजित करते हुए नारियल आधारित फसल प्रणाली के ज़रिए फसलों में विविधता (परिस्थितिकीय जैवइंजीनियरी) रखने से ताड़ से जुड़े वाष्पशील संकेत कम होगा और कीटों की संख्या

● फसल अनुरक्षण

कम करने में मदद मिलेगी। एकल फसल प्रणाली की अपेक्षा बहुफसल प्रणाली अपनाने से कीट का प्रकोप कम हो जाता है।

नारियल एरियोफिड माइट, ऐसेरिया गुरुरोनिस

नारियल एरियोफिड माइट का प्रकोप होने पर जैसा कि पहले बताया गया है समुचित उपाय अपनाया जाए।

स्लग इल्ली (डार्ना नैरेरिया)

आँध्र प्रदेश के पूर्व गोदावरी जिले में और कर्नाटक के तुम्कूर में स्लग इल्ली, डार्ना नैरेरिया का प्रकोप हो सकता है क्यों कि इस दौरान नदी के तटों पर और खारे पानी वाले इलाकों में लगाए गए नारियल पेड़ों पर इस कीट की आबादी बढ़ने के लिए अनुकूल वातावरण पैदा होता है। कई सैकड़ों इल्लियाँ पेड़ पर एकत्र हो जाएंगी और ताड़ की पत्तियों की निचली सतह को अपना आहार बना लेगी जिससे चमकदार चित्तियाँ उत्पन्न होती हैं और इसके साथ साथ धूसर पर्ण चित्ती रोग का प्रकोप होने से सारी पत्तियाँ जली हुई सी प्रतीत होती हैं। गंभीर प्रकोप की स्थिति में, पत्तियाँ सूखकर गिर जाती हैं और मात्र मध्यशिरा रह जाती है। उच्च तापमान और ठंडा मौसम इसका प्रकोप बढ़ने के कारण हो सकते हैं।

प्रबंधन

- कीट प्रकोप के प्रारंभ में ही प्रकोपित पत्तों का तुरंत ही पूरी तरह से नाश करना चाहिए ताकि कीटों की संख्या और अधिक बढ़ने से रोका जा सके। ध्यान रहे कि इस कीट में ज़हरीले स्कोली मौजूद होने के कारण इनसान की त्वचा के साथ संपर्क में आने पर अत्यंत खुजली उत्पन्न होती है।
- यूलोफिड लार्वा परजीवी पेड़ियोबियस इम्ब्रुएस से जैविक नियंत्रण करने के साथ साथ प्रकाश जाल की स्थापना और



स्लग इल्ली

प्रति लीटर 5 ग्राम की दर पर बैसिलस थुरिंजिएनसिस का छिड़काव प्रभावी पाया गया है।

तना स्वरण (थिलावियोप्सिस (सेराटोसिस्टिस) पैराडोक्सा)

यह केरल की अम्लीय मिट्टियों में अधिकांशतः सीमित रोग है और इस अवधि के दौरान इसका प्रकोप अधिक होता है। तने पर लाल-भूरे रंग के चिपचिपे तरल पदार्थ रिसने लगता है जो सूख जाने पर काले रंग का हो जाता है। प्रारंभिक स्थिति में लंबी दरार के साथ रिसने वाले छोटे धब्बों के रूप में यह प्रकट होता है, जो बाद में एकसाथ मिलकर बहुत बड़ा घाव बन जाता है। इसके निचले भाग के ऊतक बेरंग हो जाते हैं और बाद में ये सड़ जाते हैं। गंभीर प्रकोप की स्थिति में बाहरी पत्ते पीले हो जाते हैं और ये सूखकर समय से पूर्व गिर जाते हैं जिससे ताड़ के संपूर्ण स्वास्थ्य पर बुरा असर पड़ता है। डायोकैलेंड्रा और क्साइलिबोरस जैसे स्कोलिटिड भृंगों के प्रकोप से तना और भी कमज़ोर हो जाता है।

प्रबंधन

- कचरा एवं ताड़ के अन्य अपशिष्ट तने के निकट नहीं जलाएं ताकि तना/जड़ पर घाव लगने से बचाया जा सके।
- पर्याप्त सिंचाई और मृदा एवं जल संरक्षण उपाय अपनाना अनुशंसित है।
- ट्राइकोडेर्मा हर्जियानम से संपुष्ट 5 कि.ग्रा. नीम खली का प्रयोग और मृदा जाँच आधारित पोषण प्रबंधन तरीका अपनाना चाहिए।
- तने के रिसने वाले घावों पर ट्राइकोडेर्मा हर्जियानम टैल्क के पेस्ट का प्रयोग भी तना स्वरण रोग का फैलाव रोकने के लिए प्रभावी पाया गया है।

मूल तना विगलन रोग (गैनोडर्मा प्रजाति)

इस रोग का प्रकोप होने पर पहले बताए गए अनुसार उचित प्रबंधन विधि अपनाएं।

कीटों और रोगों की क्षति की संभावनाएं कम करने के लिए टिकाऊ अनुवीक्षण और रोगरोधी उपाय अपनाना होगा और सही समय पर स्वास्थ्य प्रबंधन रणनीतियाँ अपनाने की आवश्यकता है। ताड़ का स्वास्थ्य बनाए रखते हुए टिकाऊ उत्पादन और कीटों एवं रोगों के प्रकोप से ताड़ को सुरक्षित रखने के लिए मार्च में सामयिक कीट प्रबंधन रणनीतियाँ अपनायी जानी चाहिए। ■

सर्वोत्तम नारियल विस्तार कार्यकर्ता डा. शिवकुमार टी., कायंकुलाम, आलप्पुष्टा, केरल

डा.शिवकुमार टी. (44), विषय विशेषज्ञ (कृषि कीट विज्ञान), आईसीएआर-कृषि विज्ञान केंद्र, आलप्पुष्टा, केरल ने 2016-18 के दौरान नारियल किसानों को प्रशिक्षण, विधि प्रदर्शन, समूह चर्चा, संगोष्ठियाँ आदि के माध्यम से 25 से अधिक क्षमता निर्माण कार्यक्रम (सीबीपी) आयोजित किए हैं, जिनसे 750 से अधिक किसान लाभान्वित हुए हैं।

डा.शिवकुमार ने किसान सहभागिता प्रौद्योगिकी प्रदर्शनों और फ्रंटलाइन प्रदर्शनों तथा ॲन फार्म टेस्टिंग (एफएलडी एण्ड ओएफटी) के माध्यम से आईसीएआर-सीपीसीआरआई द्वारा विकसित नारियल उत्पादन एवं संरक्षण प्रौद्योगिकी पैकेजों के मूल्यांकन का समन्वय एवं आयोजन किया है और छोटे नारियल पेड़ संरक्षण में किसान फील्ड स्कूल (एफएफएस) के लिए नवीनतम कार्यप्रणाली तैयार की है, जो देश में इस तरह की सर्वप्रथम प्रणाली है।

वर्ष 2016-18 के दौरान उन्होंने विभिन्न कृषि विषयों पर 150 से अधिक लोकप्रिय लेख प्रकाशित किए हैं; जिनमें से 17 लेख नारियल उत्पादन एवं संरक्षण प्रौद्योगिकियों से संबंधित हैं। उन्होंने रेडियो साक्षात्कार, वार्ताओं के माध्यम से नारियल प्रौद्योगिकियों का प्रचार-प्रसार किया है और नारियल पर लाइव फॉन इन प्रोग्राम भी किए हैं। इसके अतिरिक्त एकीकृत कीट प्रबंधन एवं एकीकृत फसल प्रबंधन पर भी कार्यक्रम चलाए गए हैं। पिछले तीन वर्षों के दौरान 564 कृषि नैदानिक सेवाएं प्रदान की गईं और नारियल तथा अन्य अंतर फसलों में विभिन्न समस्याओं के समाधान के लिए 100 से अधिक प्रक्षेत्र दौरे किए गए। नारियल में समस्याओं का हल करने, कृषि-नैदानिक गतिविधियों का समर्थन करने, वास्तविक समय जन संपर्क कार्यक्रम आदि के लिए आईसीटी उपकरण उनके द्वारा विवेकपूर्ण तरीके से लागू किए गए थे।

सर्वोत्तम गैर सरकारी संगठन/पंजीकृत सहकारी समिति अंजराक्कण्टी फार्मर्स सर्वोस को-ऑपरेटीव बैंक लि., कण्णूर, केरल



कामकाज में सुधार करके आज बड़े आकार के प्राथमिक सहकारिता कृषि समिति बन गई है।

बैंक के प्रसंस्करण संयंत्र में खोपरा ड्रायर एवं नारियल तेल उत्पादन इकाई (एक्स्पेल्लर इकाई) तथा उत्पादें जैसे विर्जिन नारियल तेल, नारियल दूध, डेसिकेटड नारियल पाउडर, दीप जलाने का तेल, बच्चों के लिए तेल, केश तेल, नारियल तेल साबुन आदि शामिल हैं। ड्रायर संयंत्र में 24 घंटे के भीतर प्रति दिन 50,000 फलों को खोपरे में बदलने की क्षमता है। प्रति दिन 8 घंटे की एक शिप्ट में प्रति दिन तेल उत्पादन क्षमता 5000 लीटर, विर्जिन नारियल तेल उत्पादन क्षमता 150 लीटर, नारियल दूध 800 लीटर और डेसिकेटड नारियल पाउडर 100 कि.ग्रा. है। इसके अलावा कंपनी 2000 कि.ग्रा. नारियल तेल खली और 300 लीटर दीप जलाने के तेल का उत्पादन करती है। उत्पादों के प्रसंस्करण के दौरान स्वच्छता और सफाई के उच्चतम मानक का अनुपालन किया जाता है। कंपनी के उत्पादों को एग्रार्स एवं एफएसएसएआई प्रमाणीकरण के साथ 'सहकारी' ब्रैंड दिया गया है।

सर्वोत्तम नारियल ताड़ारोहक, परंपरागत तरीके से चढ़नेवाला ताड़ारोहक - पुरुष श्री वी.आई.कुरियन, एरणाकुलम, केरल

केरल के एरणाकुलम जिले के श्री वी.आई.कुरियन (55) गत 35 वर्षों से एक पूर्णकालिक नारियल ताड़ारोहक है। यह पेशेवर ताड़ारोहक इस ग्रीन गॉलर काम से प्रति माह लगभग 50000 रुपए कमाते हैं। श्री कुरियन प्रति दिन लगभग 50-75 पेड़ों पर चढ़ते हैं। इस इलाके के किसान अपने नारियल बाग में कीट एवं रोग प्रबंधन तथा शिखर की सफाई के लिए भी श्री कुरियन पर निर्भर करते हैं।



सर्वोत्तम नारियल ताड़ारोहक, परंपरागत तरीके से चढ़नेवाला ताड़ारोहक - पुरुष (सांत्वना) श्री परेश बैश्य, नलबारी, असम



असम के नलबारी के श्री परेश बैश्य (43) एक परंपरागत नारियल ताड़ारोहक है जो 2001 से इस पेशे में हैं। श्री परेश बैश्य प्रति दिन 10 पेड़ों पर चढ़ते हैं और उनकी लगभग आय प्रति माह 8000 और 9000 रुपए के बीच है।

सर्वोत्तम नारियल ताड़ारोहक, बोर्ड के एफओसीटी कार्यक्रम में प्रशिक्षित ताड़ारोहक - पुरुष श्री गिदुगु शेषगिरी राव, पूर्वी गोदावरी, आंध्र प्रदेश



आंध्र प्रदेश के पूर्वी गोदावरी जिले के निवासी श्री गिदुगु शेषगिरी राव (69) ने अपनी आजीविका के लिए नारियल ताड़ारोहण को अपने पेशे के रूप में चुना है। उन्होंने बोर्ड के एफओसीटी प्रशिक्षण में भाग लिया है जिससे वे प्रति दिन लगभग 1000 रुपए कमा सकते हैं। वर्तमान में वे एफओसीटी प्रशिक्षण कार्यक्रमों के मास्टर प्रशिक्षक के रूप में भी काम कर रहे हैं। श्री गिदुगु शेषगिरी राव कीट एवं रोग प्रकोप के खिलाफ शिखर की सफाई करने तथा पौधा संरक्षण तरीकों में किसान समूहों को प्रशिक्षण देने में सक्रिय रूप से शामिल हैं।

सर्वोत्तम नारियल ताड़ारोहक, बोर्ड के एफओसीटी कार्यक्रम में प्रशिक्षित ताड़ारोहक - महिला श्रीमती सुनी ली, तिरुवनंतपुरम, केरल

केरल के तिरुवनंतपुरम के वर्कला की मूल निवासी श्रीमती सुनी ली (50) नवंबर 2011 को तिरुवनंतपुरम के ग्रामीण पठना केंद्र में आयोजित बोर्ड के एफओसीटी कार्यक्रम में प्रशिक्षित हुई। वे प्रतिदिन 25 पेड़ों पर चढ़ती हैं और उनकी औसतन मासिक आय 35,000 रुपए हैं। वे पिछले 5 वर्षों से नारियल विकास बोर्ड के फ्रेंड्स ऑफ कोकनट ट्री प्रशिक्षण कार्यक्रम के मास्टर प्रशिक्षक के रूप में भी काम कर रही हैं। वे नारियल क्षेत्र में किसान उत्पादक संगठन (एफपीओ) के गठन में सक्रिय हैं। उन्होंने मलेशिया में एक साल के लिए नारियल ताड़ारोहक के रूप में भी काम किया है।



सर्वोत्तम नीरा तकनीशियन - अखिल भारतीय श्री दिलीप कुमार पी., कासरगोड़, केरल

केरल के कासरगोड़ के श्री दिलीप कुमार पी. (33) एक नीरा तकनीशियन हैं, जो वर्ष 2010 से केरल कृषि विश्वविद्यालय, कृषि कॉलेज, पटन्नक्काट से जुड़े हुए हैं। वे रोजाना पाँच पेड़ों से नीरा निकाल रहे हैं। उन्हें पौधा संरक्षण विधियों का भी अच्छा अनुभव है। वे नीरा टैपिंग के अलावा पौधा संरक्षण गतिविधियाँ और नारियल की तुड़ाई करते हैं। वे नीरा तकनीशियन प्रशिक्षण कार्यक्रम के मास्टर प्रशिक्षक के रूप में भी काम कर रहे हैं।



सर्वोत्तम नारियल उत्पादक फेडरेशन मंगलम केरा कर्षका फेडरेशन, तिरुर, मलापुरम, केरल

केरल में तिरुर जिले के नारियल उत्पादक समितियों का मंगलम केरा कर्षका फेडरेशन 566.67 हेक्टर क्षेत्र में स्थित है और इसके अधीन 113344 नारियल पेड़ हैं। फेडरेशन में 1445 सदस्य किसान हैं। सीपीएफ की वार्षिक औसत उपज 54.91 लाख नारियल हैं। सीपीएफ के अधीन आनेवाले क्षेत्रों में बोर्ड पुनर्रोपण एवं पुनरुज्जीवन योजना एवं निर्दर्शन प्लोटों की स्थापना कार्यक्रम का कार्यान्वयन कर रहे हैं। मंगलम केरा कर्षका फेडरेशन की एक नारियल नर्सरी है और वे नारियल का प्राप्तन कर रहे हैं।



नाविबो का सर्वोत्तम प्रबीउ फार्म - स्थापना के प्रारंभिक चरण में प्रबीउ फार्म, पालघर, महाराष्ट्र

महाराष्ट्र के पालघर में 40 हेक्टर में स्थित नारियल विकास बोर्ड का प्रदर्शन सह बीज उत्पादन फार्म प्रदर्शन, प्रशिक्षण एवं अन्य गतिविधियों के अलावा कॉंकण क्षेत्र की गुणवत्तापूर्ण रोपण सामग्री की आवश्यकता को पूरा करता है।



40 हेक्टर के फार्म में 5867 पेड़ हैं और फार्म को 21 प्लोटों में विभाजित किया गया है और इनके 80 प्रतिशत में बौनी प्रजातियों को लगाए गए हैं और शेष 20 प्रतिशत में लंबी प्रजातियों एवं जननद्रव्य संग्रहण के साथ साथ ड्रिप सिंचाई प्रणाली की अवसंरचना लगाई गई है। फार्म में कीट और रोग की निगरानी नियमित रूप से की जाती है। लंबी

और बौनी किस्म की पौधे हर वर्ष नर्सरी में उगाई जाती हैं और विभिन्न जिलों के नारियल उत्पादकों को वितरित की जाती हैं। इससे फार्म को अच्छी आमदानी प्राप्त होती है। फार्म में केले के पौधे, चीकू, नींबू और मौसमी सब्जियाँ उगाई जाती हैं।

नाविबो का सर्वोत्तम प्रबीउ फार्म - उत्पादन चरण में प्रबीउ फार्म, वेगिवाड़ा, आंध्र प्रदेश

आंध्र प्रदेश के वेगिवाड़ा में नारियल विकास बोर्ड का फार्म 71.80 हेक्टर में स्थित है और खेती योग्य क्षेत्र केवल 40 हेक्टर तक सीमित है। यह फार्म एलुरु, पश्चिम गोदावरी से लगभग 25 कि.मी. दूर स्थित है। फार्म में विभिन्न किस्मों के 3892 नारियल पेड़ हैं जिनमें से 3593 फलदार पेड़ हैं और 2066 पेड़ों को मातृ वृक्ष के रूप में चुने गए हैं। पूर्व तटीय लंबी, पश्चिम तटीय लंबी, तिप्पूर लंबी, फिलिपीन्स साधारण, चावक्काट नारंगी बौनी (सीओडी), चावक्काट हरी बौनी, गंगा बोंदम, मलयन पीली बौनी आदि फार्म में उगाई जानेवाली नारियल किस्में हैं।



नारियल नुसखे

नारियल और सूजी का केक

सामग्रियाँ	
सूजी	1 कप
ताज़ा कद्दुकस नारियल	1 कप
चीनी पिसी हुई	1 कप
मक्खन पिघला हुआ	1 कप
दही	1 कप
दूध	2 बड़ा चम्मच
वैनिला एसेन्स	1/2 छोटा चम्मच
बेकिंग सोडा	1 छोटा चम्मच
बेकिंग पाउडर	1 छोटा चम्मच
आटा	डस्ट करने के लिए
नमक	एक चुटकी भर



पकाने की विधि: एक 9 इंच और 5 इंच व्यास के बेकिंग टिन को पिघले हुए मक्खन से चुपड़ लें, आटा छिड़क दें और सभी जगह अच्छी तरह फैला दें। टिन को थप-थपाकर बचा हुआ सारा आटा निकाल दें।

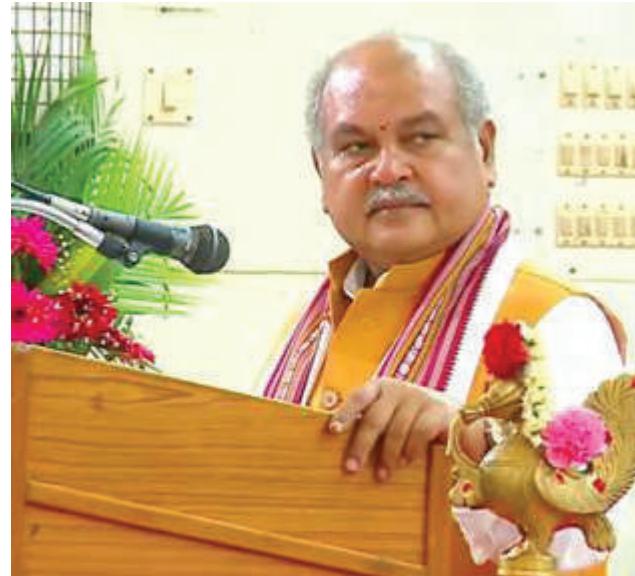
सारी सामग्री को एक गहरे प्याले में लेकर अच्छी तरह से मिला दें। इस मिश्रण को चुपड़े और डस्ट किए हुए केक टिन में डालकर अच्छी तरह से फैला लें। एल्यूमिनियम फोइल (Aluminium foil) से लपेटके बंद करें और दो घंटे के लिए एक तरफ रखें। एल्यूमिनियम फोइल निकालकर पहले से गरम किए हुए अबन में 180 डिग्री सेल्शियस तापमान पर 40 मिनट तक बेक कर लें। 15 मिनट के लिए ठंडा होने दें और टिन में से केक निकाल लें। काट कर परोसें।

केंद्र सरकार नारियल किसानों के लिए समर्थन जारी रखेगी: श्री नरेंद्र सिंह तोमर



भारत नारियल उत्पादन में विश्व का अग्रणी देश है और नारियल उत्पादन में तमिलनाडु का अहम स्थान है। किसानों की आय दुगुनी करने के लिए भारत सरकार कई योजनाएं कार्यान्वित कर रही है, श्री नरेंद्र सिंह तोमर, माननीय केंद्रीय कृषि एवं किसान कल्याण मंत्री, भारत सरकार ने कहा। वे नारियल विकास बोर्ड, भा.कृ.अनु.प.-गन्ना प्रजनन संस्थान, कोयम्बत्तूर और तमिलनाडु कृषि विश्वविद्यालय द्वारा संयुक्त रूप से 14 अक्टूबर 2022 को तमिलनाडु कृषि विश्वविद्यालय में आयोजित किसान सम्मेलन में उद्घाटन भाषण दे रहे थे। उन्होंने किसानों को आवाजान किया कि देश की अर्थव्यवस्था में नवोदय लाने के लिए राज्य और केंद्रीय सरकारों को कंधे से कंधा मिलाकर चलना होगा। श्री नरेंद्र सिंह तोमर ने कहा कि देश में नारियल खेती को बढ़ावा देने के लिए तटीय क्षेत्र में स्थित राज्यों के किसानों को हर संभव समर्थन प्रदान करना जारी रखेंगे। विगत कुछ सालों से अनुसंधान और विकास के क्षेत्र में किए गए प्रयासों के फलस्वरूप खेती और प्रसंस्करण क्षेत्र में नई प्रौद्योगिकियाँ विकसित हुईं और उपलब्ध प्रौद्योगिकियों को और उन्नत बनाया गया है। लगभग 1000 से अधिक नारियल किसानों, गन्ना किसानों और नारियल आधारित उद्यमियों ने सम्मेलन में भाग लिया।

श्री तोमर ने आगे बताया कि नारियल किसानों के बीच होते हुए उन्हें बहुत खुशी महसूस हो रही है। उन्होंने नारियल विकास बोर्ड एवं गन्ना प्रजनन संस्थान को नारियल किसान समुदाय की



श्री नरेंद्र सिंह तोमर जी किसानों को संबोधित करते हुए

समृद्धि के लिए किए जा रहे पहलों के लिए बधायी दी। उन्होंने कहा कि कृषि क्षेत्र देश की अर्थव्यवस्था की रीढ़ की हड्डी है, इसलिए इसको सशक्त बनाना, बढ़ावा देना और किसानों के लिए लाभदायक खेती सुनिश्चित करना राज्य और केंद्रीय सरकारों का उत्तरदायित्व है। देश में नारियल के कुल खेतीगत क्षेत्र का 21 प्रतिशत और उत्पादन का 26 प्रतिशत तमिलनाडु का योगदान है। उन्होंने कहा कि राज्य में 4.44 लाख हेक्टर में नारियल की खेती की जाती है और उत्पादकता प्रति हेक्टर 11,256 नारियल है जो प्रति हेक्टर 9123 नारियल के राष्ट्रीय

औसत से काफी अधिक है। नारियल प्रसंस्करण गतिविधियों में तमिलनाडु अबल स्थान पर है और नारियल के खेतीगत क्षेत्र की दृष्टि से कोयम्बत्तूर प्रथम स्थान पर है जहाँ 88467 हेक्टर क्षेत्र में नारियल की खेती की जाती है। नारियल विकास बोर्ड के नारियल प्रौद्योगिकी मिशन कार्यक्रम के अंतर्गत प्रति वर्ष 3,638 मिलियन नारियल की प्रसंस्करण क्षमता के साथ देश में 537 नई प्रसंस्करण इकाइयाँ स्थापित करने हेतु सहायता प्रदान की गई है। इनमें से 136 इकाइयाँ तमिलनाडु राज्य में हैं। इन इकाइयों में सक्रियत कार्बन, वर्जिन नारियल तेल, डेसिकेटड नारियल पाउडर, दूध पाउडर, पैकटबंद डाब पानी, प्रशीतित कद्कस नारियल आदि का विनिर्माण किया जाता है जो रोजगार के अवसर प्रदान करने के साथ साथ किसानों की आर्थिक स्थिति सुधारने में मदद करता है। गत वित्तीय वर्ष के दौरान क्यार उत्पादों को छोड़कर 3236.83 करोड़ रुपए मूल्य के नारियल उत्पादों का निर्यात किया गया है। यह पिछले वर्ष की अपेक्षा 41 प्रतिशत अधिक है।

उन्होंने यह भी कहा कि कोविड महामारी के बीच में भी, जब दूसरे सारे उद्योग वित्तीय संकट से जूझ रहे थे, भारत के माननीय प्रधान मंत्री जी के प्रयासों के फलस्वरूप विभिन्न फसलों में ज़बरदस्त उपज के साथ कृषि क्षेत्र ने देश के सकल घरेलू उत्पाद में योगदान दिया। पीएम किसान सम्मान निधि, पीएम फसल बीमा योजना और सूक्ष्म सिंचाई योजना के ज़रिए सरकार किसानों को सहायता प्रदान कर रही है। अपना भाषण समाप्त करते हुए उन्होंने कहा कि किसानों की आजीविका स्तर सुधारने हेतु तमिलनाडु में गुणवत्तापूर्ण रोपण सामग्रियों का उत्पादन करने एवं नारियल उत्पादों का प्रसंस्करण एवं विपणन करने में समर्थन देने के लिए 697 नारियल उत्पादक समितियाँ, 73 नारियल उत्पादक फेडरेशन और 19 नारियल उत्पादक कंपनियाँ कार्यरत हैं। माननीय मंत्री जी ने राज्य सरकार के ज़रिए कार्यान्वित भारत सरकार की विविध कल्याणकारी योजनाओं के तहत लाभार्थियों को मंजूरी आदेश वितरित किए।

श्री एम.आर.के.पन्नीरसेल्वम, कृषि एवं किसान कल्याण मंत्री, तमिलनाडु सरकार ने अपने विशेष भाषण में कहा कि तमिलनाडु सरकार नारियल किसानों के हित के लिए कई कल्याणकारी योजनाएं कार्यान्वित कर रही हैं और वर्ष 2022-23 के दौरान कृषि क्षेत्र के विकास हेतु अलग बजट आवंटित किया है। उन्होंने कहा कि तमिलनाडु के किसानों



श्री एम.आर.के. पन्नीर सेल्वम, माननीय कृषि एवं किसान कल्याण मंत्री, तमिलनाडु सरकार विशेष भाषण देते हुए

से 50,000 टन खोपरे के प्रापण हेतु केंद्र सरकार ने अनुमति प्रदान की है और राज्य ने प्रति कि.ग्रा. 105.90 रुपए पर खोपरे का प्रापण किया है। मंत्री ने सूचित किया कि राज्य साल भर खोपरे का प्रापण करने के लिए तैयार है बशर्ते कि केंद्र सरकार की अनुमति प्राप्त हो और प्रापण मूल्य बढ़ाकर प्रति कि.ग्रा. 150 रुपए करा दिया हो। श्री पन्नीरसेल्वम ने कहा कि सार्वजनिक वितरण प्रणाली आउटलेटों में नारियल तेल की आपूर्ति करने संबंधी नारियल किसानों की माँग पर अध्ययन करेगा।

डा.प्रभात कुमार, बागवानी आयुक्त, भारत सरकार ने इस अवसर पर सभा को संबोधित करते हुए कहा कि हमारे माननीय प्रधान मंत्री जी ने देश में किसानों की आय दुगुनी बनाने का जो संकल्प रखा है इसे पूरा करने हेतु नारियल विकास बोर्ड प्रयासरत है। उन्होंने सूचित किया कि मूल्यवर्धन, गुणवत्तापूर्ण रोपण सामग्रियों का उत्पादन, कौशल विकास आदि को प्रोत्साहित करने के लिए नारियल विकास बोर्ड 10 प्रमुख कार्यक्रम चला रहा है। उन्होंने किसान प्रतिनिधियों से



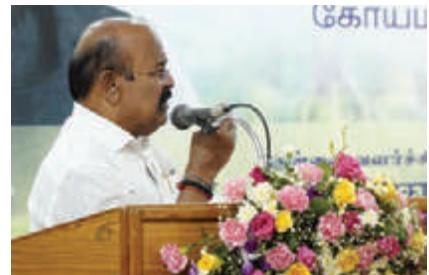
श्री प्रभात कुमार, बागवानी आयुक्त, भारत सरकार



श्री अम्मन के.अर्जुन, माननीय विधायक,
कोयम्बत्तूर नोर्थ



श्रीमती वानति श्रीनिवासन, माननीय विधायक,
कोयम्बत्तूर साउथ



श्री पोल्लाची के.जयरामन, माननीय विधायक,
पोल्लाची



माननीय केंद्रीय कृषि एवं किसान कल्याण मंत्री श्री नरेंद्र सिंह तोमर
तमिलनाडु कृषि विश्वविद्यालय परिसर में प्रदर्शनी का उद्घाटन करते हुए

अनुरोध किया कि किसान उत्पादक संगठन का सक्रिय सदस्य बनकर नाविबो कार्यक्रमों का भरपूर लाभ उठाएं।

श्री अम्मन के.अर्जुन, माननीय विधायक, कोयम्बत्तूर नोर्थ, श्रीमती वानति श्रीनिवासन, माननीय विधायिका, कोयम्बत्तूर साउथ और श्री पोल्लाची जयरामन, माननीय विधायक, पोल्लाची और तिरु. समयमूर्ति भा.प्र.से., कृषि उत्पादन आयुक्त, तमिलनाडु सरकार ने भी किसानों को संबोधित किया। डा.जी.एस.समीरन भा.प्र.से., जिलाधीश, कोयम्बत्तूर, नाविबो के सदस्य तिरु. एस.वी.मुत्तुरामलिंगम और तिरु.आर.इलंगो और डा.बी.हनुमंते गौडा, मुख्य नारियल विकास अधिकारी, नाविबो इस अवसर पर समुपस्थित थे।

डा.जी.हेमप्रभा, निदेशक, भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद -गन्ना प्रजनन संस्थान, कोयम्बत्तूर ने स्वागत भाषण दिया और डा.वी.गीतालक्ष्मी, कुलपति, तमिलनाडु कृषि विश्वविद्यालय, कोयम्बत्तूर ने सभा का धन्यवाद अदा किया।

माननीय मंत्री जी ने तमिलनाडु कृषि विश्वविद्यालय कैंपस में प्रदर्शनी का भी उद्घाटन किया। मंत्री जी ने तमिलनाडु कृषि विश्वविद्यालय, भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद -गन्ना प्रजनन संस्थान, राज्य कृषि विभाग और नारियल विकास बोर्ड के स्टाल में प्रदर्शित मूल्यवर्धित उत्पादों के बारे में और विविध फसलों संबंधी प्रौद्योगिकी के बारे में पूछताछ की।

माननीय केंद्रीय कृषि एवं किसान कल्याण मंत्री ने सर्वश्री इंडियन कोकनट प्रोडक्ट्स, जो कि कोयम्बत्तूर के पोल्लाची में स्थित डेसिकेटड नारियल उत्पाद विनिर्माण इकाई है, का दौरा किया। प्रस्तुत इकाई ने नाविबो के नारियल प्रौद्योगिकी मिशन परियोजना के अंतर्गत सहायता प्राप्त की थी। इकाई की कुल परियोजना लागत 314.56 लाख रुपए है और प्रसंस्करण क्षमता प्रति दिन 1,10,000 नारियल है।

रिपोर्ट: मिनी मैथ्यू, सहायक निदेशक, प्रचार और जन संपर्क, नाविबो

सचिव, कृषि, भारत सरकार ने नारियल विकास बोर्ड के कार्यक्रमों की समीक्षा की



श्री मनोज आहूजा भा.प्र.से., सचिव(कृषि) नाविबो की गतिविधियों की समीक्षा करते हुए। नाविबो एवं डीसीसीडी के पदाधिकारी चित्र में दर्शित हैं।

श्री मनोज आहूजा भा.प्र.से., सचिव (कृषि) और श्री संजीव कुमार भा.प्र.से., अपर सचिव एवं वित्तीय सलाहकार, कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय, भारत सरकार ने 19 अक्टूबर 2022 को नारियल विकास बोर्ड, केरा भावन, कोची का दौरा किया और नारियल विकास बोर्ड तथा काजू और कोको विकास निदेशालय की गतिविधियों की समीक्षा की। डा. वेंकटेश एन.हुब्बल्ली, निदेशक, काजू और कोको विकास

निदेशालय और श्री प्रमोद पी. कुरियन, सहायक निदेशक, नाविबो ने संबंधित संगठनों की योजनाओं को प्रस्तुत किया और विभिन्न गतिविधियों और कार्यक्रमों पर अद्यतन व्यौरा प्रदान किया। सचिव, कृषि ने संगठनों के सुचारू कामकाज के लिए हर संभव सहयोग का वादा किया और कर्मचारियों से कृषि क्षेत्र के कल्याण के लिए इमानदारी से काम करने का आह्वान किया।

एग्रि और होर्टि एक्स्पो 2022



बोर्ड का स्टाल

नारियल विकास बोर्ड, बाज़ार विकास सह सूचना केंद्र, दिल्ली ने 14 से 16 अक्टूबर 2022 को पीतमपुरा दिल्ली हाट, नई दिल्ली में संपन्न एग्रि-होर्टि एक्स्पो 2022 में भाग लिया। प्रदर्शनी में बागवानी एवं कृषि क्षेत्र में हुई प्रगति, बेहतर खेती के लिए भूमि विकास, संरक्षित खेती, ग्रीन हाउस/पॉली हाउस प्रौद्योगिकी उत्पादन और बागवानी फसलों के तुड़ाइ उपरांत प्रबंधन आदि प्रदर्शित किए। नाविबो ने प्रदर्शनी में मूल्य वर्धित नारियल उत्पाद और नारियल तथा उसके उत्पादों पर सूचनात्मक साहित्य एवं बोर्ड के प्रकाशन प्रदर्शित किए।

कृषि मेला 2022



कृषि मेला 2022 में माननीय केंद्रीय कृषि एवं किसान कल्याण मंत्री श्री नरेंद्र सिंह तोमर बोर्ड के स्टाल में

नारियल विकास बोर्ड, प्रबीउ फार्म, कॉडागांव, छत्तीसगढ़ ने पुलिस ग्राउंड, मोरेना, मध्य प्रदेश में 11 से 13 नवंबर 2022 को संपन्न कृषि मेला और कृषि प्रदर्शनी 2022 में भाग लिया। श्री नरेंद्र सिंह तोमर, माननीय केंद्रीय कृषि मंत्री ने बोर्ड के स्टॉल का दौरा किया। बोर्ड ने अपनी योजनाओं तथा नारियल के गुणों पर विभिन्न सूचनाप्रकर पोस्टर प्रदर्शित किए। विभिन्न मूल्य वर्धित उत्पादों जैसे डाब पानी, विर्जिन नारियल तेल, चिप्स आदि के विनिर्माताओं ने भी बोर्ड के बैनर के तहत मेले में भाग लिया।

कोची में लाभ के पद संबंधी संसदीय समिति का अध्ययन दौरा



लाभ के पद संबंधी संसदीय समिति के सदस्य



समिति के सदस्य बोर्ड के वरिष्ठ अधिकारियों के साथ परिचर्चा करते हुए

लाभ के पद संबंधी संसदीय समिति ने कोची में अध्ययन दौरा किया। समिति के अध्यक्ष थे श्री सत्य पाल सिंह, लोकसभा सांसद, बागपत निर्वाचन क्षेत्र, उत्तर प्रदेश एवं सदस्य रहे श्री श्याम सिंह यादव, लोकसभा सांसद, जौनपुर निर्वाचन क्षेत्र, उत्तर प्रदेश और सुश्री दोला सेन, राज्यसभा सांसद, पश्चिम बंगाल। समिति ने 10 नवंबर 2022 को नारियल विकास बोर्ड, कॉफी बोर्ड, राष्ट्रीय नौवहन बोर्ड, कृषि और प्रसंस्कृत खाद्य उत्पाद निर्यात विकास प्राधिकरण और केरल सरकार के वरिष्ठ अधिकारियों के साथ परिचर्चा की।

डा.एन.विजयलक्ष्मी भा.प्र.से., मुख्य कार्यपालक अधिकारी, नारियल विकास बोर्ड, डा.के.जी.जगदीशा भा.प्र.से., मुख्य कार्यपालक अधिकारी, कॉफी बोर्ड, डा.मालिनी वी शंकर, अध्यक्ष, राष्ट्रीय नौवहन बोर्ड और श्री आर.रवींद्र, महाप्रबंधक, कृषि और प्रसंस्कृत खाद्य उत्पाद निर्यात विकास प्राधिकरण ने समिति के साथ परिचर्चा की। डा.वी.पी.जोय भा.प्र.से., मुख्य सचिव के साथ डा.राजु नारायण स्वामी भा.प्र.से., प्रधान सचिव, संसदीय कार्य, श्री हरि नायर, सचिव (कानून) ने विचार-विमर्श में केरल सरकार का प्रतिनिधित्व किया।

भारत अंतर्राष्ट्रीय व्यापार मेला, 2022



नारियल विकास बोर्ड ने 14 से 27 नवंबर 2022 तक प्रगति मेदान, नई दिल्ली में संपन्न भारत अंतर्राष्ट्रीय व्यापार मेले के 41वें संस्करण में भाग लिया। केरा टेक, एग्रीकोल्स, मधुरा एग्रो प्रोसेस सर्विस प्रा.लि., केकेआर एक्सट्रैक्शन प्रा.लि., वेपुरी एग्रो प्रोडक्ट्स, अंजराकंडी फार्मर्स सर्विस कोऑपरेटिव बैंक, नाटा न्यूट्रिको, मेषुकाट्रिटल मिल्स, केएलएफ निर्मल इंडस्ट्रीस, हैबिट वेलनेस, रब्को, ग्लोबल कोकनट फार्मर्स प्रोड्यूसर कंपनी, होलिस्टा ट्रैंज़वर्ल्ड प्रा.लि. जैसे प्रसिद्ध विनिर्माताओं ने पैकटबंद डाब पानी, नारियल दूध पाउडर और नारियल दूध, नारियल चिप्स, डेसिकेटड नारियल, विर्जिन नारियल तेल, नीरा, नारियल आटा, नारियल पेस्ट, नाटा डी कोको आदि जैसे नारियल उत्पादों का प्रदर्शन बोर्ड के पवलियन में किया। मेले का विषय था 'वोकल फॉर लोकल, लोकल टू ग्लोबल'।

अनुसूचित जनजाति किसानों के लिए दक्षता विकास कार्यक्रम

आय एवं रोज़गार के अवसर बढ़ाने हेतु नारियल आधारित खेती प्रणाली के विभिन्न पहलुओं और उद्यमों पर अनुसूचित जनजाति किसानों के ज्ञान एवं कौशल को बढ़ाने के उद्देश्य से नारियल विकास बोर्ड, कोची के वित्तीय समर्थन के साथ नारियल आधारित खेती एवं उद्यमों के द्वारा आय एवं रोज़गार अवसर बढ़ाना विषयक विशेष सहयोगात्मक क्षमता विकास कार्यक्रम आयोजित किया गया। यह कार्यक्रम भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद - केंद्रीय रोपण फसल अनुसंधान संस्थान, कासरगोड एवं कृषि भवन, कोट्टियूर के सहयोग से चलाया गया। कार्यक्रम 6 अक्तूबर को कोट्टियूर तथा 7 अक्तूबर 2022 को कूनम्पल्ला में दो बैचों में आयोजित किए गए।

कोट्टियूर में क्षमता विकास कार्यक्रम का उद्घाटन श्री रॉय नम्बूडकम, अध्यक्ष, कोट्टियूर ग्राम पंचायत ने किया। अपने उद्घाटन भाषण में श्री रॉय ने अनुसूचित जनजाति किसानों को नारियल क्षेत्र में आय एवं रोज़गार सृजन के लिए विभिन्न तरीकों की जानकारी से अवगत कराने हेतु दक्षता विकास कार्यक्रम आयोजित करने की आवश्यकता पर प्रकाश डाला।

कूनम्पल्ला में कार्यक्रम का उद्घाटन श्री थॉमस पी.सी., सदस्य, कोट्टियूर ग्राम पंचायत ने किया। अपने उद्घाटन भाषण में श्री थॉमस ने कोट्टियूर ग्राम पंचायत के पहाड़ी



सभा का दृश्य

इलाकों के कूनम्पल्ला अनुसूचित जनजाति कॉलनी में स्थित अनुसूचित जनजाति किसानों के वासभूमि बागों में रोपण हेतु अच्छी गुणवत्तापूर्ण नारियल पौधों की उपलब्धता सुनिश्चित कराने की आवश्यकता पर प्रकाश डाला।

डा.तम्पान सी. और डा.ए.सी.मैथू, प्रधान वैज्ञानिक, भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद - केंद्रीय रोपण फसल अनुसंधान संस्थान, कासरगोड और श्री पी.जे.विनोद, कृषि अधिकारी, कोट्टियूर कृषि भवन ने विभिन्न विषयों पर बात की।

बागवानी मूल्य श्रुंखला सम्मेलन

नारियल विकास बोर्ड ने कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय, भारत सरकार और वानिकोम, पूरे के द्वारा 1 नवंबर 2022 को महाराष्ट्र के पूरे में आयोजित बागवानी मूल्य श्रुंखला सम्मेलन में भाग लिया। सर्वश्री ग्लोबल कोकनट फार्मर्स प्रोड्यूसर कंपनी लि.(जीसीएफपीसीएल), पल्लडम, तमिलनाडु ने श्री नरेंद्र सिंह तोमर, माननीय केंद्रीय कृषि एवं किसान कल्याण मंत्री, भारत सरकार के करकमलों से नारियल फसल के तहत 'बागवानी मूल्य उत्कृष्टता हेतु बहुमूल्य योगदान' के लिए पुरस्कार प्राप्त किया। जीसीएफपीसीएल पहला किसान उत्पादक संगठन है जिसने टेट्रा पैक में तेन्नीरा ब्रैंड नाम से नारियल नीरा पेश की है जो छह महीने तक खराब नहीं होती है।



बोर्ड का स्टाल

नाविबो की राष्ट्र स्तरीय समीक्षा बैठक



समीक्षा बैठक का दृश्य

वर्ष 2022-23 के दौरान नाविबो योजनाओं के कार्यान्वयन की प्रगति की समीक्षा करने हेतु डा.एन.विजयलक्ष्मी भा.प्र.से., मुख्य कार्यपालक अधिकारी, नाविबो की अध्यक्षता में 27 और 28 अक्टूबर 2022 को हाइब्रिड मोड में नाविबो, कोची में राष्ट्र स्तरीय समीक्षा बैठक आयोजित की गई। बैठक में अधिकारियों एवं कर्मचारियों ने भाग लिया।

डा. बी.हनुमंते गौडा, मुख्य नारियल विकास अधिकारी ने अपने स्वागत भाषण में अधिकारियों से लक्ष्य को प्राप्त करने और बोर्ड की गतिविधियों में सुधार एवं नई पहल करने के लिए इमानदारी से काम करने का भी आह्वान किया। डा.प्रभात कुमार, बागवानी आयुक्त, भारत सरकार ने इस अवसर पर भाषण देते हुए सभी अधिकारियों से आग्रह किया कि उत्पादकता में अंतर-राज्य विविधता के मद्देनज़र संभावित क्षेत्र/किस्में; निर्देशन प्लॉटों की स्थापना/एकीकृत कीट प्रबंधन के लिए जागरूकता कार्यक्रम और किसानों के साथ जानकारी को पहुँचाना; पौधों के लिए गुणवत्ता स्रोतों की स्थापना; मूल्यवर्धन को प्रोत्साहित करना आदि पर ध्यान केंद्रित करते हुए नारियल क्षेत्र के समग्र विकास के लिए रणनीति तैयार करें।

बैठक में प्रस्तुत कार्यान्वयन की स्थिति का अवलोकन करने पर डा.एन.विजयलक्ष्मी भा.प्र.से., मुख्य कार्यपालक अधिकारी ने योजनाओं के कार्यान्वयन हेतु कार्य योजना तैयार करने की आवश्यकता पर और तद्वारा चालू वित्तीय वर्ष के दौरान बोर्ड के लिए आवंटित पूरे बजटीय प्रावधानों का उपयोग करने पर जोर दिया।

बोर्ड के अधिकारियों द्वारा कार्यान्वयन की स्थिति पर राज्य वार/ योजना वार प्रस्तुतीकरण, कार्य योजना, प्रस्तावित संशोधन, मुद्रे आदि प्रस्तुत किए गए।

नारियल पौध संरक्षण में हासिल प्रगति पर प्रशिक्षण कार्यक्रम

नाविबो समर्थित परियोजना 'नारियल सफेद सूँडी ल्यूकोफोलिस कोनियोफोरा बर्मिस्टर के लिए जैव-गहन एकीकृत कीट प्रबंधन रणनीतियों का महत्वपूर्ण प्रदर्शन' के सिलसिले में विस्तार कर्मियों के लिए 11 नवंबर 2022 को भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद - केंद्रीय रोपण फसल अनुसंधान संस्थान, कासरगोड़ में 'नारियल पौध संरक्षण में हासिल प्रगति' पर प्रशिक्षण कार्यक्रम चलाया गया। डा.के.बी.हेब्बार, प्रभारी निदेशक, भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद - केंद्रीय रोपण फसल अनुसंधान संस्थान ने कार्यक्रम का उद्घाटन किया।



कार्यक्रम के सहभागी

तकनीकी सत्र में डा.सी.तम्पान, प्रधान वैज्ञानिक ने 'कासरगोड जिले के विशेष संदर्भ में नारियल में कीट एवं रोग प्रकोप एवं तीव्रता' पर भाषण दिया। उन्होंने कहा कि नारियल में एकीकृत कीट प्रबंधन तथा एकीकृत रोग प्रबंधन का प्रक्षेत्र स्तरीय अभिग्रहण बढ़ाने हेतु सामुदायिक कार्रवाई पर ध्यान देने के साथ विस्तार रणनीतियाँ अपनाई जाएं।

डा.पी.एस.प्रतिभा, वैज्ञानिक ने कीट प्रबंधन के अद्यतन नवाचारों तथा प्रौद्योगिकियों और आक्रामक कीट एवं उनके प्रबंधन के बारे में विवरण देते हुए 'नारियल में रोगकीट प्रबंधन में प्रगति' पर भाषण दिया।

डा.डालियामोल, वैज्ञानिक (पादप रोगविज्ञान) ने नारियल के रोग प्रबंधन में नई प्रवृत्ति पर सत्र संभाला जिसमें नारियल के रोगों के एकीकृत प्रबंधन में नवीनतम विकास पर परिचर्चा

की गई। प्रतिभागियों के अनुरोध पर नारियल को प्रकोपित रोग विषयक सत्र में सुपारी को नए ग्रसित पर्ण चित्ती रोग एवं उसके तदर्थ प्रबंधन रणनीतियों पर भी परिचर्चा की गई। सत्र के दौरान ट्राइकोडर्मा के बड़े पैमाने पर उत्पादन एवं ट्राइकोडर्मा क्यार खली के उत्पादन के लिए प्रौद्योगिकियों पर भी विस्तृत रूप से परिचर्चा हुई।

प्रशिक्षण कार्यक्रम के सिलसिले में कीट विज्ञान / रोग विज्ञान प्रयोगशाला, वर्माकम्पोस्ट उत्पादन इकाई, कृषि प्रसंस्करण केंद्र एवं संस्थान के फार्म के परीक्षण प्लॉटों का भी दौरा किया। 'नारियल के कीट/रोग प्रबंधन हेतु जड़ों द्वारा दवा देने की तकनीक' पर प्रक्षेत्र प्रदर्शन भी आयोजित किया गया। इस एक दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम में कासरगोड जिले के राज्य कृषि विभाग से 51 विस्तार कर्मियों ने भाग लिया।

भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद - केंद्रीय रोपण फसल अनुसंधान संस्थान ने क्षमता निर्माण के ज़रिए एफपीओ को सशक्त बनाने हेतु केवीके-लक्ष्यद्वीप के साथ हाथ मिलाया

एफपीओ को सशक्त बनाने के उद्देश्य से भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद - केंद्रीय रोपण फसल अनुसंधान संस्थान ने कृषि विज्ञान केंद्र के सहयोग से 17 से 19 अक्टूबर 2022 को कवरती, नाविबो में नारियल के सुस्थिर उत्पादन एवं मूल्य वर्धन पर क्षमता निर्माण कार्यक्रम आयोजित किया। डा.अनिता करुण, निदेशक, भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद - केंद्रीय रोपण फसल अनुसंधान संस्थान ने कार्यक्रम का उद्घाटन किया और श्री मुसुनद, अध्यक्ष, कवरती द्वीपसमूह नारियल उत्पादक को-ऑपरेटीव सोसाइटी लि. ने अध्यक्षता की। डा. अनिता करुण ने अपने उद्घाटन भाषण में सुस्थिर नारियल उत्पादन हेतु अच्छी कृषि पद्धतियों को एवं प्रसंस्करण द्वारा मूल्य वर्धन को बढ़ावा देने हेतु लक्ष्यद्वीप द्वीपसमूह में कृषि विज्ञान केंद्र के सहयोग से भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद - केंद्रीय रोपण फसल अनुसंधान संस्थान द्वारा ली जा रही विशेष रुचि पर बात की। क्षमता निर्माण कार्यक्रम में एफपीओ के सदस्यों एवं निदेशक मंडल सहित 30 प्रतिभागियों ने भाग लिया।

केंद्रीय रोपण फसल अनुसंधान संस्थान के वैज्ञानिकों ने तकनीकी सत्र संभाला। डा.सी.तम्पान, डा.ए.सी.मैथ्यू



सभा का दृश्य

डा.पी.सुब्रमणियन और डा.एम.आर.मणिकंठन ने सामूहिक विपणन तकनीक, गुणवत्तापूर्ण खोपरा निर्माण, नारियल उत्पादन सुधारने हेतु तकनीक, नारियल का मूल्य वर्धन एवं प्रसंस्करण तथा एफपीओ को सशक्त बनाने के लिए कृषि विस्तार सलाहकार सेवाएं प्रदान करने में अन्य तकनीकी पहलुओं पर ध्यान केंद्रित किया। एफपीओ के लिए विकसित व्यापार योजनाओं को अंतिम रूप भी दिया गया।

क्षमता निर्माण कार्यक्रम का समापन समारोह खोपरा निर्माण की व्यवहार्यता और एफपीओ द्वारा इसकी उत्पादन लागत पर प्रस्तुतीकरण के साथ संपन्न हुआ। श्री सुजीष मोन, प्रबंधक, भारतीय स्टेट बैंक, भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद - केंद्रीय

रोपण फसल अनुसंधान संस्थान के वैज्ञानिक, एफपीओ सदस्य एवं किसानों ने सत्र में भाग लिया। डा.पी.एन.अनंत, अध्यक्ष, कृषि विज्ञान केंद्र, डा.अब्दुल गफूर, एसएमएस, कृषि विज्ञान केंद्र और डा.मुहम्मद कोया, वैज्ञानिक ने कार्यक्रम का समन्वय किया।

नारियल विकास बोर्ड ने कुआलालंपुर में संपन्न कोकोटेक सम्मेलन में भाग लिया



कोकोटेक सम्मेलन के सहभागी

नारियल विकास बोर्ड ने मलेशिया के कुआलालंपुर कन्वेंशन सेंटर में 7 से 11 नवंबर 2022 तक संपन्न 50वें अंतर्राष्ट्रीय कोकोटेक सम्मेलन और प्रदर्शनी में भाग लिया। सम्मेलन का आयोजन इंटरनेशनल कोकनट कम्यूनिटी (आईसीसी) और मलेशिया सरकार द्वारा कृषि एवं खाद्य उद्योग मंत्रालय के द्वारा संयुक्त रूप से किया गया। सम्मेलन का विषय था सुदृढ़ और सुस्थिर नारियल कृषि उद्योग के लिए जलवायु परिवर्तन अनुकूलन और समाधान रणनीति। डा.हनुमंते गौडा, मुख्य नारियल विकास अधिकारी और श्रीमती दीप्ति नायर एस., उप निदेशक, नाविबो ने सम्मेलन में भारत का प्रतिनिधित्व किया।

डा.जेल्फिना सी.एलोव, कार्यकारी निदेशक की अगुआई में इंटरनेशनल कोकनट कम्यूनिटी (आईसीसी) और डेटो हसलिना बिन्ती अब्दुल हमिद, महा सचिव की अगुआई में कृषि एवं खाद्य उद्योग मंत्रालय (एमएफआई), मलेशिया ने इस कार्यक्रम का समन्वयन किया। महा सचिव, एमएफआई ने अपने स्वागत भाषण में सभी सहभागियों को इस कार्यक्रम में भाग लेने हेतु मलेशिया में आने के लिए तहे दिल से बधायी दी। डा. विलियम टोलेड मनु, अध्यक्ष, आईसीसी और कृषि, खाद्य

एवं वन मंत्रालय, टोंगा के मुख्य कार्यपालक अधिकारी ने भी पाँच दिवसीय सम्मेलन में सभी प्रतिनिधिमंडल एवं हितधारकों का स्वागत किया। डा. जेल्फिना सी.एलोव, कार्यकारी निदेशक ने सम्मेलन का संक्षिप्त परिचय दिया। वाईबी दातुक सेरी हाजी एहमद बिन हमज़ा, उप मंत्री, एमएफआई, मलेशिया सरकार ने औपचारिक रूप से 50वें कोकोटेक सम्मेलन और इसके साथ आयोजित प्रदर्शनी का उद्घाटन किया। कृषि एवं मात्स्यिकी सहयोगी मंत्री, समोआ सरकार माननीय मयावा फुइमावनो तितो एसाफो इस कार्यक्रम में समुपस्थित थे। इस अवसर पर आईसीसी के तिमाही मार्केट बुलेटिन का लोकार्पण भी किया गया।

कोकोटेक सम्मेलन में आठ प्रमुख सत्र थे जिनमें विश्व भर के 44 वक्ताओं ने अपनी प्रस्तुति की और नारियल खेती एवं उद्योग से जुड़े विभिन्न पहलुओं पर प्रौद्योगिकीय एवं आशय प्रस्तुत किए। संपन्न आठ सत्रों में सुदृढ़ और सुस्थिर नारियल कृषि उद्योग और किसानों की आजीविका के लिए जलवायु परिवर्तन समाधानों के संबंध में नीति सामंजस्य, नारियल उत्पादों के हरित निर्यात के विकास को बढ़ावा देना,



कार्यक्रम के सिलसिले में विविध विषयों पर आयोजित सत्रों की झलक

जलवायु परिवर्तन के प्रति कृषि संबंधी अनुकूलन रणनीतियाँ, नारियल के कीटों और रोगों के खतरों के लिए नया एकीकृत कीट प्रबंधन नमूना, जलवायु परिवर्तन के प्रति आनुवंशिक अनुकूलन रणनीतियाँ, जलवायु परिवर्तन, गैर नवीकरणीय ऊर्जा और गैर अवक्रमणीय उत्पादों से निपटने के लिए नूतन उत्पादों का विकास, सुस्थिर परिरक्षण और नारियल के आनुवंशिक संसाधनों का उपयोगीकरण और जलवायु परिवर्तन की समस्या को कम करने में उनका प्रभाव और देश के

आर्थिक विकास हेतु अनुकूलन, लोगों के स्वास्थ्य में सुधार और रोग की रोकथाम में नारियल उत्पादों की भूमिका आदि विषयों पर व्याख्यान एवं परिचर्चाएं संपन्न हुईं।

इसके अलावा एक समांतर सत्र भी संपन्न हुआ जिसमें युवा वैज्ञानिकों, अनुसंधानकर्ताओं, स्टार्टअपों और विशेषज्ञों में से 11 वक्ताओं ने नारियल क्षेत्र में अनुप्रयोग करने की गुंजाइश वाली नूतन प्रौद्योगिकी प्रस्तुत की। समांतर सत्र में नारियल में जलवायु परिवर्तन प्रभावों के प्रति कृषीय अनुकूलन और जलवायु परिवर्तन सहनशील नारियल आधारित खेती प्रणाली को बढ़ावा देना आदि दो विषयों पर परिचर्चाएं हुईं।

कोकोटेक सम्मेलन ने जोरांक एग्रिकल्चर सेंटर, जोहोर जहाँ नारियल नर्सरियों के प्रबंधन में आईओटी आधारित स्मार्ट सिंचाई प्रणाली स्थापित है और लिनैको मैनुफैक्चरिंग (एम) एसडीएन बीएचडी, जोहोर जो नारियल पानी, दूध, दूध पाउडर और विविध उत्पादों के विनिर्माता है, का दौरा करने का अवसर भी प्रदान किया।

कोकोटेक ने नारियल क्षेत्र के हितधारियों के लिए सहयोग और सांझा करने, किसानों, प्रसंस्करणकर्ताओं, वैज्ञानिकों और उद्यमियों के बीच गठबंधन बनाने और देशों के बीच द्विपक्षीय और बहुपक्षीय साझेदारी हेतु उपयुक्त मंच प्रदान किया। कोकोटेक सम्मेलन के इन पाँच दिनों के दौरान कम्यूनिटी ने एक सुर में कार्य किया ताकि सुदृढ़ और सुस्थिर कृषि उद्योग विकसित किया जा सके।

एफओसीटी के कर्मी दल के लिए संवाद कार्यक्रम

नारियल विकास बोर्ड ने केरल के आलप्पुऱ्णा जिले में एफओसीटी के कर्मी दल तथा प्रगतिशील नारियल किसानों के लिए 14 दिसंबर 2022 को संवाद कार्यक्रम आयोजित किया। कार्यक्रम गाँधी स्मारक ग्राम सेवा केंद्रम, एस.एल.पुरम, आलप्पुऱ्णा, केरल के सहयोग से आयोजित किया गया था। डा.हनुमंते गौडा, मुख्य नारियल विकास अधिकारी, नाविबो कार्यक्रम के मुख्यातिथि रहे। उन्होंने चुनिदे फ्रेंड्स ऑफ कोकनट ट्री प्रशिक्षणार्थियों के साथ बातचीत की जिन्होंने गाँधी स्मारक ग्राम सेवा केंद्र में प्रशिक्षण प्राप्त किया था और वर्तमान में वे आलप्पुऱ्णा जिले में नारियल की तुडाई तथा अन्य पौधा संरक्षण गतिविधियाँ सामूहिक रूप से चला रहे हैं।



संवाद कार्यक्रम सभा का दृश्य

एफओसीटी के ग्रूप लीडर श्री रमेशन ने कर्मी दल द्वारा चलाई जा रही गतिविधियों के बारे में संक्षिप्त परिचय दिया।

आलप्पुऱ्गा जिले के प्रगतिशील नारियल किसानों ने नारियल क्षेत्र में सामना की जा रही समस्याओं को प्रस्तुत किया। डा. हनुमंते गौडा, मुख्य नारियल विकास अधिकारी ने आश्वासन दिया कि नाविबो किसान समूह के हितलाभ के लिए क्लस्टर आधार पर नाविबो योजनाओं के कार्यान्वयन के सिलसिले में एफओसीटी कर्मी दल का उपयोग बेहतर तरीके से करने की योजना बना रहा है। श्री रवि पालतुंकल, अध्यक्ष,

गाँधी स्मारक ग्राम सेवा केंद्रम ने कार्यक्रम की अध्यक्षता की। श्रीमती मिनी मैथ्यू, सहायक निदेशक एवं श्री बी. चिन्नराज, विकास अधिकारी ने इस अवसर पर भाषण दिया। श्रीमती रमा रवींद्र मेनोन, सचिव, गाँधी स्मारक ग्राम सेवा केंद्र ने सभा का स्वगत किया। श्री मनु, कार्यक्रम अधिकारी, गाँधी स्मारक ग्राम सेवा केंद्र ने धन्यवाद ज्ञापित किया।

58वां आईसीसी सत्र और अनुसंचिवीय बैठक

टोंगा सरकार की अध्यक्षता में इंटरनेशनल कोकनट कम्यूनिटी (आईसीसी) की 58वां आईसीसी सत्र और अनुसंचिवीय बैठक 28 और 30 नवंबर 2022 के दौरान आयोजित की गई। बैठक में सदस्य देशों में नारियल की खेती तथा उद्योग की स्थिति और इस क्षेत्र की बेहतर संभावनाओं के लिए भावी योजनाओं पर परिचर्चा हुई। डा. हनुमंते गौडा, मुख्य नारियल विकास अधिकारी, नाविबो ने इस अवसर पर भारत पर देशीय प्रस्तुति की। डा. जेल्फिना सी एलोव, कार्यकारी निदेशक ने वार्षिक रिपोर्ट प्रस्तुत की और आईसीसी द्वारा की जा रही गतिविधियों के बारे में बताया। सत्र के दौरान वर्ष 2023 के लिए प्रस्तावित कार्यक्रमों एवं गतिविधियों का अनुमोदन किया गया। आईसीसी के सदस्य देशों और पर्यवेक्षक संगठनों जैसे एफएओ, एसपीसी, एसीआईएआर, सीआईआरएडी, सीएबीआई, सीएआरडीआई आदि ने सत्र में सक्रिय रूप से भाग लिया।



बैठक का दृश्य

असम अंतर्राष्ट्रीय एग्रि-होर्टि प्रदर्शनी - 2022

नारियल विकास बोर्ड, क्षेत्रीय कार्यालय, असम ने 17 से 19 दिसंबर 2022 तक वेटिनरी प्ले ग्राउंड, खानापारा, गुवाहाटी में आयोजित 7वें असम अंतर्राष्ट्रीय एग्रि-होर्टि प्रदर्शनी -2022 में भाग लिया। श्री परिमल शुक्लबैया, माननीय परिवहन, मार्तियकी एवं उत्पादन शुल्क मंत्री, असम ने बोर्ड के स्टॉल का दौरा किया। बोर्ड ने अपनी योजनाओं तथा नारियल की खूबियों पर विभिन्न सूचनाप्रक पोस्टर, बोर्ड के प्रकाशन प्रदर्शित किए। बोर्ड के स्टॉल में डाब पानी, विर्जिन नारियल तेल, चिप्स, डेसिकेटड नारियल पाउडर आदि जैसे विभिन्न मूल्य वर्धित उत्पादें प्रदर्शित किए।



बोर्ड का स्टाल

बाज़ार समीक्षा

सितंबर 2022

नारियल तेल

नारियल तेल का भाव सितंबर 2022 के दौरान कोची और आलप्पुऱ्हा बाज़ारों में प्रति किंवटल 14200 रुपए पर और कोषिककोट बाज़ार में प्रति किंवटल 14450 रुपए पर खुला और कोची बाज़ार में प्रति किंवटल 600 रुपए, आलप्पुऱ्हा बाज़ार में प्रति किंवटल 500 रुपए और कोषिककोट बाज़ार में प्रति किंवटल 550 रुपए की शुद्ध हानि के साथ बंद हुआ।

तमिलनाडु के कंगयम बाज़ार में महीने के दौरान नारियल तेल का भाव प्रति किंवटल 11533 रुपए पर खुला और 10533 रुपए पर बंद हुआ।

पेषण खोपरा

महीने के दौरान पेषण खोपरे का भाव कोची बाज़ार में प्रति किंवटल 8300 रुपए, आलप्पुऱ्हा बाज़ार में प्रति किंवटल 8250 रुपए और कोषिककोट बाज़ार में प्रति किंवटल 8550 रुपए पर खुला और उसी भाव पर बंद हुआ।

पेषण खोपरे का भाव कोची बाज़ार में प्रति किंवटल 600 रुपए, आलप्पुऱ्हा बाज़ार में प्रति किंवटल 500 रुपए और कोषिककोट बाज़ार में प्रति किंवटल 550 रुपए की शुद्ध हानि के साथ प्रति किंवटल क्रमशः 7700 रुपए, 7750 रुपए और 8000 रुपए पर बंद हुआ।

तमिलनाडु के कंगयम बाज़ार में पेषण खोपरे का भाव महीने के दौरान प्रति किंवटल 7700 रुपए पर खुला और प्रति किंवटल 300 रुपए की शुद्ध हानि के सथ प्रति किंवटल 7400 रुपए पर बंद हुआ।

खाद्य खोपरा

महीने के दौरान कोषिककोट बाज़ार में राजापुर खोपरे का भाव प्रति किंवटल 13100 रुपए पर खुला और प्रति किंवटल 400 रुपए के शुद्ध लाभ के साथ 13500 रुपए पर बंद हुआ।

गोल खोपरा

तिप्पुर बाज़ार में गोल खोपरे का भाव प्रति किंवटल 13600 रुपए पर खुला और प्रति किंवटल 300 रुपए की शुद्ध हानि के साथ प्रति किंवटल 13300 रुपए पर बंद हुआ।

सूखा नारियल

कोषिककोट बाज़ार में सूखा नारियल का भाव प्रति किंवटल 10750 रुपए पर खुला और महीने के दौरान उसी भाव पर बंद हुआ।

नारियल

महीने के दौरान केरल के नेटुमंगाट बाज़ार में नारियल का भाव प्रति हज़ार फल 13000 रुपए पर खुला और उसी भाव पर बंद हुआ।

तमिलनाडु के पोल्लाच्ची बाज़ार में नारियल का भाव प्रति टन 21500 रुपए पर खुला और उसी भाव पर बंद हुआ।

महीने के दौरान कर्नाटक के बेंगलूरु बाज़ार में नारियल का भाव 17000 रुपए पर खुला और प्रति हज़ार फल 3000 रुपए के शुद्ध लाभ के साथ प्रति हज़ार फल 20000 रुपए पर बंद हुआ।

कर्नाटक के मेंगलूर बाज़ार में नारियल का भाव प्रति टन 26000 रुपए पर खुला और प्रति टन 3000 रुपए की शुद्ध हानि के साथ 23000 रुपए पर बंद हुआ।

अंतर्राष्ट्रीय भाव

नारियल

फिलीपीन्स, इंडोनेशिया, श्रीलंका और भारत के विविध देशीय बाज़ारों में नारियल का भाव सारणी में दर्शाया गया है।

नारियल तेल

महीने के दौरान प्रमुख नारियल उत्पादक देशों में नारियल तेल का अंतर्राष्ट्रीय और देशीय भाव में घटाव का रुख रहा।

विविध अंतर्राष्ट्रीय/देशीय बाज़ारों में नारियल तेल का अंतर्राष्ट्रीय और देशीय भाव सारणी में दर्शित है।

खोपरा

फिलीपीन्स, श्रीलंका, इंडोनेशिया और भारत के विविध देशीय बाज़ारों में महीने के दौरान खोपरे के भाव में घटाव का रुख दर्शित हुआ।

फिलीपीन्स, इंडोनेशिया और भारत के विविध देशीय बाज़ारों में खोपरे का भाव सारणी में दर्शाया गया है।



अक्तूबर 2022

नारियल तेल

नारियल तेल का भाव अक्तूबर 2022 के दौरान कोची बाजार में प्रति किंवटल 13300 रुपए, आलप्पुऱ्गा बाजार में प्रति किंवटल 13500 रुपए और कोषिककोट बाजार में प्रति किंवटल 13800 रुपए पर खुला।

कोची बाजार में प्रति किंवटल 100 रुपए के शुद्ध लाभ के साथ प्रति किंवटल 13400 रुपए पर और आलप्पुऱ्गा तथा कोषिककोट बाजारों में प्रति किंवटल 100 रुपए की शुद्ध हानि के साथ प्रति किंवटल क्रमशः 13400 रुपए और 13700 रुपए पर बंद हुआ।

तमिलनाडु के कंगयम बाजार में महीने के दौरान नारियल तेल का भाव प्रति किंवटल 10533 रुपए पर खुला और प्रति किंवटल 10800 रुपए पर बंद हुआ।

पेषण खोपरे

महीने के दौरान पेषण खोपरे का भाव कोची बाजार में प्रति किंवटल 7600 रुपए, आलप्पुऱ्गा बाजार में प्रति किंवटल 7650 रुपए और कोषिककोट बाजार में प्रति किंवटल 7900 रुपए पर खुला।

पेषण खोपरे का भाव कोची बाजार में प्रति किंवटल 100 रुपए और कोषिककोट बाजार में प्रति किंवटल 300 रुपए के शुद्ध लाभ के साथ कोची, आलप्पुऱ्गा और कोषिककोट बाजारों में प्रति किंवटल क्रमशः 7700 रुपए, 7650 रुपए और 8200 रुपए पर बंद हुआ।

तमिलनाडु के कंगयम बाजार में पेषण खोपरे का भाव महीने के दौरान प्रति किंवटल 7400 रुपए पर खुला और प्रति किंवटल 50 रुपए के शुद्ध लाभ के साथ प्रति किंवटल 7450 रुपए पर बंद हुआ।

खाद्य खोपरे

महीने के दौरान कोषिककोट बाजार में राजापुर खोपरे का भाव प्रति किंवटल 13500 रुपए पर खुला और प्रति किंवटल 200 रुपए की शुद्ध हानि के साथ 13300 रुपए पर बंद हुआ।

गोल खोपरे

तिप्पुर बाजार में गोल खोपरे का भाव प्रति किंवटल 14000 रुपए पर खुला और प्रति किंवटल 500 रुपए की शुद्ध हानि के साथ प्रति किंवटल 13500 रुपए पर बंद हुआ।

सूखा नारियल

कोषिककोट बाजार में सूखा नारियल का भाव प्रति किंवटल 10750 रुपए पर खुला और महीने के दौरान उसी भाव पर बंद हुआ।

नारियल

महीने के दौरान केरल के नेटुमंगाट बाजार में नारियल का भाव प्रति हजार फल 13000 रुपए पर खुला और उसी भाव पर बंद हुआ।

तमिलनाडु के पोल्लाच्ची बाजार में नारियल का भाव प्रति टन 21500 रुपए पर खुला और प्रति टन 500 रुपए की शुद्ध हानि के साथ प्रति टन 21000 रुपए पर बंद हुआ।

महीने के दौरान कर्नाटक के बैंगलूर में नारियल का भाव प्रति हजार फल 20000 रुपए पर खुला और महीने के दौरान उसी भाव पर बंद हुआ।

कर्नाटक के मैंगलूर बाजार में नारियल का भाव प्रति टन 23000 रुपए पर खुला और प्रति टन 3000 रुपए के शुद्ध लाभ के साथ 26000 रुपए पर बंद हुआ।

अंतर्राष्ट्रीय भाव

नारियल

फिलीपीन्स, इंडोनेशिया, श्रीलंका और भारत के विविध देशीय बाजारों में नारियल का भाव सारणी में दर्शाया गया है।

नारियल तेल

विविध अंतर्राष्ट्रीय/देशीय बाजारों में नारियल तेल का अंतर्राष्ट्रीय/देशीय भाव सारणी में दर्शित है।

खोपरा

फिलीपीन्स, श्रीलंका, इंडोनेशिया और भारत के विविध देशीय बाजारों में खोपरे का भाव सारणी में दर्शाया गया है।

नवंबर 2022

नारियल तेल

नारियल तेल का भाव नवंबर 2022 के दौरान कोची और आलपुण्डी बाज़ारों में प्रति किंवटल 13400 रुपए पर और कोषिककोट बाज़ार में प्रति किंवटल 13800 रुपए पर खुला।

कोची और आलपुण्डी बाज़ारों में प्रति किंवटल 800 रुपए के शुद्ध लाभ के साथ प्रति किंवटल क्रमशः 14200 रुपए और कोषिककोट बाज़ार में प्रति किंवटल 1300 रुपए के शुद्ध लाभ के साथ 15100 पर बाज़ार बंद हुआ।

तमिलनाडु के कंगयम बाज़ार में महीने के दौरान नारियल तेल का भाव प्रति किंवटल 11467 रुपए पर खुला और प्रति किंवटल 933 रुपए के शुद्ध लाभ के साथ 12400 रुपए पर बंद हुआ।

पेषण खोपरे

महीने के दौरान पेषण खोपरे का भाव कोची बाज़ार में प्रति किंवटल 7700 रुपए, आलपुण्डी बाज़ार में प्रति किंवटल 7650 रुपए और कोषिककोट बाज़ार में प्रति किंवटल 8250 रुपए पर खुला।

पेषण खोपरे का भाव कोची और आलपुण्डी बाज़ारों में प्रति किंवटल 1500 रुपए और कोषिककोट बाज़ार में प्रति किंवटल 1150 रुपए के शुद्ध लाभ के साथ प्रति किंवटल क्रमशः 9200 रुपए, 9150 रुपए और 9400 रुपए पर बंद हुआ।

तमिलनाडु के कंगयम बाज़ार में पेषण खोपरे का भाव महीने के दौरान प्रति किंवटल 7800 रुपए पर खुला और प्रति किंवटल 700 रुपए के शुद्ध लाभ के साथ प्रति किंवटल 8500 रुपए पर बंद हुआ।



खाद्य खोपरा

महीने के दौरान कोषिककोट बाज़ार में राजापुर खोपरे का भाव प्रति किंवटल 13100 रुपए पर खुला और उसी भाव पर बंद हुआ।

गोल खोपरा

तिपुर बाज़ार में गोल खोपरे का भाव प्रति किंवटल 13000 रुपए पर खुला और प्रति किंवटल 1000 रुपए की शुद्ध हानि के साथ प्रति किंवटल 12000 रुपए पर बंद हुआ।

सूखा नारियल

कोषिककोट बाज़ार में सूखा नारियल का भाव प्रति किंवटल 10750 रुपए पर खुला और प्रति किंवटल 200 रुपए की शुद्ध हानि के साथ प्रति किंवटल 10550 रुपए पर बंद हुआ।

नारियल

महीने के दौरान केरल के नेटुमंगाट बाज़ार में नारियल का भाव प्रति हज़ार फल 13000 रुपए पर खुला और प्रति हज़ार फल 2000 रुपए के शुद्ध लाभ के साथ प्रति हज़ार फल 15000 रुपए पर बंद हुआ।

तमिलनाडु के पोल्लाच्ची बाज़ार में नारियल का भाव प्रति टन 22000 रुपए पर खुला और महीने के दौरान प्रति टन 3000 रुपए के शुद्ध लाभ के साथ प्रति टन 25000 रुपए पर बंद हुआ।

महीने के दौरान कर्नाटक के बैंगलूरु में नारियल का भाव प्रति हज़ार फल 20000 रुपए पर खुला और महीने के दौरान उसी भाव पर बंद हुआ। कर्नाटक के मैंगलूर बाज़ार में नारियल का भाव प्रति टन 28000 रुपए पर खुला और प्रति टन 3000 रुपए की शुद्ध हानि के साथ 25000 रुपए पर बंद हुआ।

अंतर्राष्ट्रीय भाव

नारियल

विविध अंतर्राष्ट्रीय / देशीय बाज़ारों में नारियल का भाव सारणी में दर्शाया गया है।

नारियल तेल

विविध अंतर्राष्ट्रीय/देशीय बाज़ारों में नारियल तेल का अंतर्राष्ट्रीय/देशीय भाव सारणी में दर्शित है।

खोपरा

फिलीपीन्स, श्रीलंका, इंडोनेशिया और भारत के विविध देशीय बाज़ारों में खोपरे का भाव सारणी में दर्शाया गया है।

बाजार भाव-देशीय

सितंबर 2022

तारीख	नारियल तेल					पेषण खोपरा					खाद्य खोपरा	गोल खोपरा	सूखा नारियल	आंशिक रूप से छिले नारियल		
	(रु. / क्वि.)										(रु./1000 फल)					
	कोची	आलप्पुळा	कोषि वकोट	कंगयम	कोची (एफएक्यू)	आलप्पुळा (राशि खोपरा)	कोषि वकोट	कंगयम	कोषि वकोट	तिप्पूर	कोषि वकोट	नेटुमंगाट	पोल्लाच्ची	बैंगलूर	मैंगलूर काला नारियल ¹ (1 टन)	
01.09.2022	14200	14200	14450	11533	8300	8250	8550	7700	13100	13600	10750	13000	21500	17000	26000	
03.09.2022	14200	14200	14350	11400	8300	8250	8400	7600	13300	13800	10750	13000	21500	17000	26000	
10.09.2022	14200	14200	14350	11200	8300	8250	8300	7700	13000	13500	10750	13000	21500	17000	24000	
17.09.2022	14000	14000	14300	10933	8100	8050	8250	7500	13600	13500	10750	13000	21500	20000	23000	
24.09.2022	13900	13900	14200	10867	8000	7950	8150	7600	14200	14000	10750	13000	21500	20000	23000	
30.09.2022	13600	13700	13900	10533	7700	7750	8000	7400	13500	13300	10750	13000	21500	20000	23000	

अक्टूबर 2022

तारीख	नारियल तेल					पेषण खोपरा					खाद्य खोपरा	गोल खोपरा	सूखा नारियल	आंशिक रूप से छिले नारियल		
	(रु. / क्वि.)										(रु./1000 फल)					
	कोची	आलप्पुळा	कोषि वकोट	कंगयम	कोची (एफएक्यू)	आलप्पुळा (राशि खोपरा)	कोषि वकोट	कंगयम	कोषि वकोट	तिप्पूर	कोषि वकोट	नेटुमंगाट	पोल्लाच्ची	बैंगलूर	मैंगलूर काला नारियल ² (1 टन)	
01.10.2022	13300	13500	13800	10533	7600	7650	7900	7400	13500	14000	10750	13000	21500	20000	23000	
08.10.2022	13300	13300	13600	10533	7600	7550	7800	7400	13200	14000	10750	13000	21000	20000	23000	
15.10.2022	13300	13300	13600	10667	7600	7550	8000	7300	13200	13500	10750	13000	21000	20000	23000	
22.10.2022	13300	13300	13600	10733	7600	7550	8000	7400	13100	13700	10750	13000	21000	20000	26000	
29.10.2022	13400	13400	13700	10733	7700	7650	8150	7400	13200	13700	10750	13000	21000	20000	26000	
31.10.2022	13400	13400	13700	10800	7700	7650	8200	7450	13300	13500	10750	13000	21000	20000	26000	

नवंबर 2022

तारीख	नारियल तेल					पेषण खोपरा					खाद्य खोपरा	गोल खोपरा	सूखा नारियल	आंशिक रूप से छिले नारियल		
	(रु. / क्वि.)										(रु./1000 फल)					
	कोची	आलप्पुळा	कोषि वकोट	कंगयम	कोची (एफएक्यू)	आलप्पुळा (राशि खोपरा)	कोषि वकोट	कंगयम	कोषि वकोट	तिप्पूर	कोषि वकोट	नेटुमंगाट	पोल्लाच्ची	बैंगलूर	मैंगलूर काला नारियल ³ (1 टन)	
01.11.2022	13400	13400	13800	11467	7700	7650	8250	7800	13100	13000	10750	13000	22000	20000	28000	
05.11.2022	13500	13500	13850	11467	8000	7750	8350	7800	12800	13000	10750	13000	22000	20000	28000	
12.11.2022	13700	13700	14400	12000	8500	8450	8700	8300	12800	12500	10550	13000	23000	20000	28000	
19.11.2022	13800	13800	14600	11733	8800	8650	9000	8300	12700	12200	10550	13000	24500	20000	26000	
26.11.2022	14200	14200	15100	12400	9200	9150	9600	8500	13100	12000	10550	15000	25000	20000	25000	
30.11.2022	14200	14200	15100	12400	9200	9150	9400	8500	13100	12000	10550	15000	25000	20000	25000	

¹ (स्रोत: इंपेपर, केरला कौमुदी)² (स्रोत: स्टार मार्केट बुलेटिन)³ (स्रोत: स्टार मार्केट बुलेटिन)

बाज़ार भाव-अंतराष्ट्रीय

सितंबर 2022

तारीख	छिले पानी युक्त नारियल (यूएस \$ / मे.ट.)				नारियल तेल (यूएस \$ / मे.ट.)				खोपरा (यूएस \$ / मे.ट.)				
	देशीय				अंतराष्ट्रीय				देशीय				
	फिलीपीन्स	इंडोनेशिया	श्रीलंका	भारत*	फिलीपीन्स	फिलीपीन्स	इंडोनेशिया	श्रीलंका	भारत*	फिलीपीन्स	इंडोनेशिया	श्रीलंका	भारत*
03.09.2022	136	154	175	264	1322	1227	रि.प्रा.न.	1819	1398	679	588	927	932
10.09.2022	134	148	169	264	1275	1218	रि.प्रा.न.	1746	1373	660	567	966	944
17.09.2022	134	144	161	264	1270	1201	रि.प्रा.न.	1736	1341	660	531	854	920
24.09.2022	133	143	158	264	1179	1163	रि.प्रा.न.	1681	1333	647	486	799	932

अक्टूबर 2022

तारीख	छिले पानी युक्त नारियल (यूएस \$ / मे.ट.)				नारियल तेल (यूएस \$ / मे.ट.)				खोपरा (यूएस \$ / मे.ट.)				
	देशीय				अंतराष्ट्रीय				देशीय				
	फिलीपीन्स	इंडोनेशिया	श्रीलंका	भारत*	फिलीपीन्स	फिलीपीन्स	इंडोनेशिया	श्रीलंका	भारत*	फिलीपीन्स	इंडोनेशिया	श्रीलंका	भारत*
01.10.2022	130	144	161	261	1081	रि.प्रा.न.	रि.प्रा.न.	1660	1285	588	495	840	898
08.10.2022	130	144	163	255	1121	रि.प्रा.न.	रि.प्रा.न.	1598	1285	590	499	861	898
15.10.2022	128	143	163	255	1095	1101	रि.प्रा.न.	1680	1295	606	478	867	886
22.10.2022	128	128	171	255	1095	1105	रि.प्रा.न.	1500	1303	615	504	908	898
29.10.2022	129	129	180	255	1075	1129	रि.प्रा.न.	1679	1303	628	536	963	898

नवंबर 2022

तारीख	छिले पानी युक्त नारियल (यूएस \$ / मे.ट.)				नारियल तेल (यूएस \$ / मे.ट.)				खोपरा (यूएस \$ / मे.ट.)					
	देशीय				अंतराष्ट्रीय				देशीय					
	फिलीपीन्स	इंडोनेशिया	श्रीलंका	भारत*	फिलीपीन्स	फिलीपीन्स	इंडोनेशिया	श्रीलंका	भारत*	फिलीपीन्स	इंडोनेशिया	श्रीलंका	भारत*	
05.11.2022	129	127	176	270	1125	1129	रि.प्रा.न.	1692	1405	633	542	928	956	
12.11.2022	131	129	175	282	1169	1194	रि.प्रा.न.	1774	1471	659	546	936	1017	
19.11.2022	133	128	176	300	1174	1218	रि.प्रा.न.	1706	1438	656	532	908	1017	
26.11.2022	रि.प्रा.न.	131	रि.प्रा.न.	306	रि.प्रा.न.	रि.प्रा.न.	रि.प्रा.न.	रि.प्रा.न.	रि.प्रा.न.	1520	रि.प्रा.न.	568	रि.प्रा.न.	1042

* भारत : नारियल तेल - कंगयम बाज़ार, खोपरा - कंगयम बाज़ार, नारियल - पोल्लाच्ची बाज़ार



नारियल विकास बोर्ड के कार्यालय

मुख्यालय

डा. एन.विजयलक्ष्मी भा.प्र.से.

मुख्य कार्यालय अधिकारी : 0484 2375216

डा. वी.हनुमंते गोदा

मुख्य नारियल विकास अधिकारी : 2375999

श्री आर. मधु

सचिव : 2377737

नारियल विकास बोर्ड

(कृषि एवं नियन्त्रण कल्याण मंत्रालय, भारत सरकार)

पो.बा.सं. 1021, केंद्र भवन, कोची - 682 011,
केरल, भारत

कार्यालय ईपीएवीएक्स: 2376265, 2376553,
2377266, 2377267

ग्राम : KERABOARD

फ़ोन : 91 484 2377902

ई-मेल : kochi.cdb@gov.in

वेबसाइट : www.coconutboard.gov.in

कार्यालय

श्री डॉ. विजयलक्ष्मी

प्रभारी नियेशक,

हेठों वाचायांत्र एवं प्रोड्यूसिंग केन्द्र
नारियल विकास बोर्ड, हृषीकेश,
कोकोरिपट्टा रोड, बंगलुरु - 560076.

दृ.भा. : 080-26593750, 26593743

फ़ोन : 080-26594768

ई-मेल : m-bnigh@coconutboard.gov.in

असम

डा. रमेशकुमार चाल

प्रभारी नियेशक, हेठों वाचायांत्र

नारियल विकास बोर्ड, उत्तर पश्चिम राज्य
वाचायांत्र / प्रशिक्षण/प्रोड्यूसिंग केन्द्र,
हात्तमोक्ष वाचायांत्रिक्स, (छत्ता तल),

वाचायांत्र वाचायांत्र रोड, लास्ट गेट,

विस्कूर, गुवाहाटी - 781 006

दृ.भा. : (0361) 2220632 फ़ोन : 0361-2229794

ई-मेल : ro-guwahati@coconutboard.gov.in

तमिलनाडु

श्रीमती वाला नृपाहरि

प्रभारी नियेशक, हेठों वाचायांत्र,

नारियल विकास बोर्ड
सं. 47, एक्स-1, डा. रामस्वामी राहाण,
के.के.साम,

चेन्नई-600 078

दृ.भा. : 044-23662684, 23663685

ई-मेल : ro-chennai@coconutboard.gov.in,

ई-मेल : ro-patna@coconutboard.gov.in

विहार

श्री रामेश भूषण प्रसाद

नियेशक,

विकास प्रशिक्षण केन्द्र सह हेठों वाचायांत्र
नारियल विकास बोर्ड, बोस्टन तालाब के
सामने, जारियापथ, मुख्यालय रोड, डाक-विहार

पश्च. चिकित्सा महाविद्यालय (पी.वी.सी.),

पटना-800014, दृ.भा. : (0612) 2272742

फ़ोन : 0612-2272742

ई-मेल : ro-patna@coconutboard.gov.in

क्षेत्रीय कार्यालय

अन्धमान व निकोबार हीथ मण्ड

उप नियेशक, नारियल विकास बोर्ड

मुख्य वाचायांत्र के पास,
हाउस एम बी सं. 54, गुडगाडा लेन,

पोर्ट बोर्डर-744 101, दिल्ली-अन्धमान

अन्धमान व निकोबार हीथ मण्ड, दृ.भा. : (03192)-233918

ई-मेल : sc-andaman@coconutboard.gov.in

ओंड्र प्रदेश

सहायक नियेशक, राज्य केन्द्र, नारियल विकास बोर्ड, डी.ए.

4-123, राज्यांत्र बाजार

राज्यवर्षयांत्र डाक, तिला परियथ हाइ स्कूल के पास

विळयवाडा-521108, एन.टी.आर. तिला, ओंड्र प्रदेश

टेलीफोन नं. 0866-2842323/मोबाइल: 09866479650

ई-मेल : sc-vijayawada@coconutboard.gov.in

बाजार विकास मह मुच्या बेन्द, दिल्ली

सहायक नियेशक, नारियल विकास बोर्ड

बाजार विकास मह मुच्या बेन्द, 120,

हरनगरिकन एनक्लेय, फ़िल्ड्स- 110 092,

दृ.भा. : 011-22377805, फ़ोन : 011-22377806

ई-मेल : mdic-delhi@coconutboard.gov.in

महाराष्ट्र

उप नियेशक, राज्य केन्द्र, नारियल विकास बोर्ड

फ़ोन नं. - 203, दुसरा तल,

याकालिंग्स बिल्डिंग,

पोड्डुवर रोड, दुसरा (वेस्ट)-400 610, महाराष्ट्र

दृ.भा. : 022-66100106

ई-मेल : sc-thane@coconutboard.gov.in

पश्चिम बंगाल

उप नियेशक, राज्य केन्द्र,

नारियल विकास बोर्ड, डी.ए.-94-सेक्टर-1।

साल्ट लेन, बोलाकाला - 700 064

दृ.भा. : (033) 23599674, फ़ोन : 91 33-23599674

ई-मेल : sc-kolkata@coconutboard.gov.in

श्री वाचायांत्र, लिस्कवनतपुरम्

श्री वाचायांत्र, नारियल विकास बोर्ड,

एविकल्पवर्तन अभ्यन्त होल्डिंग्स मार्केट (वेस्ट मार्केट)

आनंदपुरा डी.ओ., लिस्कवनतपुरम् - 695 029

दृ.भाव, फ़ोन : 0471-2741006,

ई-मेल : lv-nppm@coconutboard.gov.in

ओडिशा

डा. अमेय देशनाथ

उप नियेशक, राज्य केन्द्र, नारियल विकास बोर्ड

नियामिती, कुम्भवस्ता डाक

न्युद्या जिला - 752 055, ओडिशा

दृ.भा. : 0280067723

ई-मेल : sc-pitapalli@coconutboard.gov.in

गुजरात

राज्य बेन्द, जुनागढ़,

वी-विंग, पहला तल, बहुमाली भवन,

राज्य हाईवे 31, दुर्वेल नगर, राशिकुंग,

जुनागढ़, गुजरात - 362001 दुर्घास : 02852990230

ई-मेल : sc-junagadh@coconutboard.gov.in

मी. आई.टी. आल्वा

उप नियेशक (प्रोड्यूसिंग विकास एवं उद्योगिता)

नारियल विकास बोर्ड, प्रोड्यूसिंग विकास बोर्ड,

कोलकाता बाजार, दिल्ली-3, आल्वा पिन-683103,

दृ.भाव : 0484-2679680,

ई-मेल : cit-aluva@coconutboard.gov.in

प्रदर्शन-सह-बीज उत्पादन फार्म

ओंड्र प्रदेश: सहायक नियेशक, प्रदर्शन-सह-बीज उत्पादन फार्म, नारियल विकास बोर्ड, विंगवाडा (गोव) मध्यवर्ती संघरा 688, तांडिकलामुदी (द्वारा), परिवेश गोदावरी (तिला),

ओंड्र प्रदेश - 534 452, दृ.भा. : (0812) 212359, ई-मेल : f-vegiwada@coconutboard.gov.in

असम: सहायक नियेशक, प्रदर्शन-सह-बीज उत्पादन फार्म नारियल विकास बोर्ड, अभ्यन्त अपूर्ण, विंगवाडा डी.एस. - 783 384

दृ.भा. : 9957694242, ई-मेल : f-abhayapuri@coconutboard.gov.in

बिहार: सहायक नियेशक, प्रदर्शन-सह-बीज उत्पादन फार्म, नारियल विकास बोर्ड, सिंहेवर (द्वारा), मध्यपुरा तिला, विहार - 852 128

दृ.भा. : (06476) 283015, ई-मेल : f-madhepura@coconutboard.gov.in

पश्चिम बंगाल: सहायक नियेशक, नारियल विकास बोर्ड, प्रदर्शन-सह-बीज उत्पादन फार्म, पूर्णिया, एसवीआई फूलिया शहरा के पास, एनाए-34,

फैसल डाक, नारियल विकास बोर्ड, 741 402, दृ.भा. : 03473 234002, ई-मेल : f-fulia@coconutboard.gov.in

कर्नाटक: सहायक नियेशक, प्रदर्शन-सह-बीज उत्पादन फार्म, नारियल विकास बोर्ड, नियामिता तिला, कर्नाटक- 571478

दृ.भा. : (08232) 298019, ई-मेल : f-niyamanya@coconutboard.gov.in

केरल: सहायक नियेशक, प्रदर्शन-सह-बीज उत्पादन फार्म, नारियल विकास बोर्ड, नियमिता तिला, केरलाम्बलम, पिन - 686 693

दृ.भा. : (0485) 2554240, ई-मेल : f-neriamangalam@coconutboard.gov.in

छत्तीसगढ़: सहायक नियेशक, प्रदर्शन-सह-बीज उत्पादन फार्म, नारियल विकास बोर्ड, फोडामार्ग - 494 226, बस्तर जिला

दृ.भा. : (07786) 242443, फैक्स : (07786) 242443, ई-मेल : f-kondagaon@coconutboard.gov.in

ओडिशा: सहायक नियेशक, प्रदर्शन-सह-बीज उत्पादन फार्म, नारियल विकास बोर्ड, पितामहानी, कुम्भवस्ता डाक, न्युद्या जिला - 752055

दृ.भा. : 8280067723, ई-मेल : f-pitapalli@coconutboard.gov.in

महाराष्ट्र: सहायक नियेशक, नारियल विकास बोर्ड, प्रबोध फार्म, पालघर, दाकोली गोव, सतपांडी डाक, पालघर-401405, महाराष्ट्र

दृ.भा. : 02525 256090, ई-मेल : f-palghar@coconutboard.gov.in

तमिलनाडु: सहायक नियेशक, प्रबोध फार्म, नारियल विकास बोर्ड, चित्तमूर्ति नगर डाक, तुम्मलमेट, तमिलनाडु-642112

दृ.भा. : 04252 265430, ई-मेल : f-dhali@coconutboard.gov.in

क्रिष्णगढ़: सहायक नियेशक, प्रबोध फार्म, नारियल विकास बोर्ड, हिंद्वाड़ा, सकावानी डाक, जोलाहवारी(मार्ग), सकावान, दिल्ली विष्णु-799141

दृ.भा. : 038 23263059, ई-मेल : f-hinchachara@coconutboard.gov.in



आइए.... केरा सुरक्षा बीमा योजना में शामिल हो जाएं

दि न्यू इंडिया एश्योरन्स कंपनी लिमिटेड
के सहयोग से नारियल विकास बोर्ड की पहल
नारियल ताड़ारोहकों और तुड़ाईकर्ताओं
के लिए लाभप्रद दुर्घटना बीमा योजना

आगे की सोचें...
संरक्षित और सुरक्षित रहे

बीमित राशि 5 लाख रुपए

94 रुपए की नाममात्र
वार्षिक प्रीमियम के लिए

बीमा सुरक्षा

- विकितसा खार्च में राहत
- दुर्घटना के कारण बेरोजगारी
- विवाहांगता
- मृत्यु
के लिए

कौन शामिल हो सकते हैं ?

कोई भी व्यक्ति जो नारियल
ताड़ारोहण / तुड़ाई / नीरा तकनीशियन
के पेशे में लगा हुआ हो

आयु 18-65

आवेदन पत्र के लिए नाविकों
की वेबसाइट

<https://www.coconutboard.gov.in>
देखें/ निकटस्थ कृषि विज्ञान केंद्र
से संपर्क करें

अधिक जानकारी के लिए
कृपया संपर्क करें:

0484 2377266 एक्स्टेंशन: 255
नारियल विकास बोर्ड, केरा भवन,
एसआरवी रोड, कोची-11

नारियल विकास बोर्ड

(कृषि एवं विभाग अन्वयन बंजलप, भारत सरकार)
कोची, केरल, फोन: 0484-2377266, 67



Coconut Development Board

MINISTRY OF AGRICULTURE & FARMERS WELFARE,
GOVERNMENT OF INDIA | KOCHI, KERALA. PH: 0484-2377266, 67